मासिक शिविरा पत्रिका

वर्ष : 63 | अंक :01 | जुलाई,2022 | पृष्ठ : 52 | मूल्य : ₹ 20/-

सत्यमेव जयते

डॉ. बी.डी. कल्ला
मंत्री
शिक्षा (प्राथमिक एवं माध्यमिक शिक्षा),
संस्कृत शिक्षा, प्राथमिक शिक्षा,
(पंचायती राज के अधीनस्थ), कला,
साहित्य, संस्कृति एवं पुरातत्व विभाग
राजस्थान सरकार

" मुझे यह जानकर सुखद अनुभूति हुई कि राजकीय उच्च माध्यमिक विद्यालय गण्डरावा, दौसा के विशेष आवश्यकता वाले (CWSN) होनहार छात्र रवि कुमार मीणा ने कला संकाय में शत प्रतिशत अंक प्राप्त कर कीर्तिमान स्थापित किया है।प्रिय रवि की इस उपलब्धि पर हम सब को गर्व है।`` "

अपनों से अपनी बात

जिंदगी में आगे बढ़ने के लिए उतार चढ़ाव आवश्यक है

हम शैक्षिक सत्र 2022–23 में प्रवेश करने जा रहे हैं। समस्त शिक्षा विभाग परिवार को बहुत बहुत शुभकामनाएं।

शिक्षकवृंद से मेरा आग्रह है कि सत्र आरम्भ से ही विद्यार्थियों के लिए ऐसी योजना बनाकर क्रियान्वयन करें जो विद्यार्थी को ज्ञान के प्रति उचित समझ बनाने एवं सीखने में मदद कर सके। अपने विद्यालय एवं कक्षा के प्रत्येक विद्यार्थी को वैसा ही ध्यान, सम्मान एवं प्यार करें, उसके लिए वैसी ही चिंता करें जैसा आप अपने परिवार में बच्चों के लिए करते हैं, यदि आप ऐसा कर पाते हैं तो फिर कुछ भी कहना एवं करना शेष नहीं रहेगा।

माध्यमिक शिक्षा बोर्ड राजस्थान, अजमेर की परीक्षा 2022 के परिणाम जारी हो गए हैं। मुझे यह जानकर सुखद अनुभूति हुई कि राजकीय उच्च माध्यमिक विद्यालय गण्डरावा, दौसा के विशेष आवश्यकता वाले (CWSN) होनहार छात्र रवि कुमार मीणा ने कला संकाय में शत प्रतिशत अंक प्राप्त कर कीर्तिमान स्थापित किया है। प्रिय रवि की इस उपलब्धि पर हम सब को गर्व है। इसी प्रकार और भी बहुत से विद्यार्थियों ने बोर्ड परीक्षा में श्रेष्ठता प्रदर्शित करते हुए अपनी विशेष पहचान कायम की है। विद्यालय के संस्थाप्रधान, शिक्षकों एवं रवि के अभिभावकों को प्रतिनंदन। कुछ ऐसे भी विद्यार्थी होंगे जो किसी कारणवश परीक्षा परीणाम में पीछे रह गए, मैं उनसे यही कहूँगा कि "उत्तिष्ठ जागृत प्राप्य वरान्निबोधत" अर्थात् उठो, जागो और ध्येय की प्राप्ति तक रुको मत। यह मानिए कि जिंदगी में आगे बढ़ने के लिए उतार चढ़ाव आवश्यक है। मजबूत संकल्प के साथ, इस कमी से ही प्रेरित होकर आप आगे बढ़ें। शालाएं प्रारम्भ होने के साथ ही 'गुरु पूर्णिमा' पर्व आएगा, हमारी संस्कृति मातृ देवो भवः, पितृ देवो भवः, आचार्य देवो भवः की रही है। यह संस्कृति बच्चों की आयु, बुद्धि, यश एवं बल में वृद्धि करने वाली है। बड़ों का सम्मान करने से इन चारों की वृद्धि अवश्य होती है। वर्षा ऋतु भी निकट है, अतएव सभी शालाओं में पेड़ लगाने का कार्यक्रम रखना चाहिए। वृक्षों से ऑक्सीजन मिलती है तथा कार्बन–डाइ–ऑक्साइड जो हम छोड़ते हैं, उसे वे ग्रहण करते हैं।

व्यक्ति जितना अध्ययन एवं लिखने का कार्य करेगा उसकी जानकारी उतनी ही अधिक समृद्ध एवं नवीन होगी। जो पढ़ता एवं लिखता है, वह अथाह जानकारी अपने भीतर आत्मसात् करता है। समय आने पर वह इन जानकारियों का उपयोग करता है। इससे व्यक्ति का आत्मविश्वास बढ़ता है।

शिक्षा मंत्रालय भारत सरकार, नई दिल्ली द्वारा जारी नेशनल अचीवमेंट सर्वे (NAS) 2021 की लर्निंग लेवल रिपोर्ट में प्रदेश के विद्यार्थियों ने राष्ट्रीय औसत से बेहतर प्रदर्शन किया है। कोविड महामारी के दौरान विद्यालयों में नियमित अध्ययन बाधित रहा था। इस दौरान समय संघर्षमय था, समस्याएं भी बहुत आई लेकिन हालात इतने मायूस नहीं थे। विभाग ने अपने प्रयास जारी रखे। ऑनलाइन लर्निंग द्वारा शिक्षण अधिगम प्रक्रियाओं को सतत् रखकर हमने सार्थक प्रयास किए। जिससे हमारे बच्चों के लर्निंग लेवल में सुधार हुआ है। यह राज्य सरकार द्वारा शिक्षा की बेहतरी के लिए किए गए प्रयासों का सुखद परिणाम है। इस उपलब्धि में हमारे विद्यार्थियों के साथ साथ शिक्षक, अभिभावकगण एवं शिक्षा विभाग ने भी महत्त्वपूर्ण भूमिका निभाई है। इसके लिए आप सभी को साधुवाद।

आओ नए सत्र में लक्ष्य निर्धारित कर उन्हें साकार करने की दिशा में कदम बढ़ाएँ। स्वस्ति।

(डॉ. बुलाकी दास कल्ला)

मेरा संदेश...

सत्यमेव जयते

जाहिदा खान
राज्यमंत्री, राजस्थान सरकार
शिक्षा (प्राथमिक और माध्यमिक),
विज्ञान एवं प्रौद्योगिकी (स्वतंत्र प्रभार)
मुद्रण एवं लेखन सामग्री (स्वतंत्र प्रभार)
कला, साहित्य, संस्कृति एवं पुरातत्व विभाग

विद्यार्थियों को प्राकृतिक वातावरण से जोड़े

अकसर यह देखा गया है कि अवकाश के समय अधिकांश बच्चे अपना समय टेलीविज़न, मोबाईल एवं कम्प्यूटर आदि इलेक्ट्रॉनिक गैजेट्स में व्यतीत करते हैं। इस कारण वे अपने परिवार एवं मित्रों से मेल–मिलाप, हंसना–बोलना पसंद नहीं करते। ऐसे में बच्चों को एकाकीपन पंसद आता है और वे जिद्दी होते जा रहे हैं। उनमें सोचने, सीखने और जानने की लगन भी कम हो रही है। इससे उनका मानसिक एवं शारीरिक स्वास्थ्य प्रभावित होता है और उनकी सृजनात्मक प्रवृत्तियाँ दब जाती है।

सम्भवतः इन्हीं वजहों से बच्चे प्रकृति से दूर हो रहे हैं। यहाँ शिक्षक एवं अभिभावकों का दायित्व है कि वे बच्चों को प्रकृति से प्रेम करना सिखाएं। जो बच्चे खेत–खलिहान, पेड़–पौधे, पशु–पक्षियों के बीच प्राकृतिक वातावरण में पलते बढ़ते हैं वे अधिक व्यवहारिक एवं संवेदनशील होते हैं। उनमें पर्यावरण सरंक्षण की भावना भी मजबूत होती है। बच्चों को जीव–जंतुओं की आवश्यकताओं की जानकारी होती है। बच्चों को प्रकृति एवं जीव–जंतुओं के बारे में बताएं। विद्यालय पुस्तकालय में जीव–जंतुओं से संबधित एवं अन्य उपयोगी पुस्तकें, पत्रिकाएं बच्चों को पढ़ने के लिए उपलब्ध करवाएं। उनसे प्रकृति के बारे में सवाल पूछें और उनकी उत्सुकताओं को भी शांत करें। इससे हमारे बच्चे प्रसन्न, स्वस्थ रहेंगे और वे प्रकृति के नजदीक जाएंगे।

बच्चों को कोई भी सीख बातों से नहीं बल्कि अपने व्यवहार एवं आचरण से देनी होगी । अकसर विद्यालयों एवं अन्य सार्वजनिक स्थानों पर आवश्यकता न होने पर भी लाईट जलती रहती है एवं नल चलते रहते हैं जिस पर किसी का ध्यान नहीं जाता या फिर हम ध्यान देना नहीं चाहते । इस पर गौर करना जरूरी है जिससे विद्युत ऊर्जा एवं जल के अपव्यय को रोका जा सकता है। जरूरी है कि संस्थाप्रधान एवं शिक्षक जब अपना कक्ष या स्टाफ रूम छोड़े तो वै उससे पहले वहाँ की लाईट बंद करें। निःसन्देह स्टाफ के सदस्यों एवं विद्यार्थियों में भी एक संदेश जाएगा कि जब कक्षा–कक्ष खाली हो तो विद्युत उपकरण भी बंद रखने हैं।

बहुधा अनुपयोगी कागज, पॉलिथीन, पेंसिल छीलने के बाद छीलन आदि कक्षा–कक्षों एवं बरामदे में पड़े हुए होते हैं। मैनें बहुत से विद्यालयों में यह भी देखा है कि मिड–डे–मील अथवा लंच लेने के बाद बचा हुआ भोजन विद्यालय में इधर–उधर डाल देते हैं। कक्षा–कक्षों, बरामदों एवं खेल मैदान में बिखरा हुआ भोजन पैरों में आता है। इस जूठन पर चिंटियां, चूहे आने से विद्यालय की साफ–सफाई भी प्रभावित होती है। यह मंजर देखने में भी बुरा लगता है। इन बातों के प्रति हम सब अपने घर में बहुत सचेत रहते हैं। बच्चों को यह भी सिखाना जरूरी है कि अनुपयोगी कागज, पॉलिथीन आदि सामग्री निर्धारित स्थान पर रखे हुए कचरा पात्र में ही डालें। चाहे वे घर से खाना लाएं या विद्यालय से मिड–डे–मील हो, उतना ही लेवें जितना उनको खाना है। खाना खाते समय आस–पास जो भी जूठन बिखरती है उसे भी उठाकर यथा स्थान पर डाले। यदि इन छोटी–छोटी बातों को हम सब अपने व्यवहार में लाते हैं तो निश्चय ही जहाँ विद्यालय अनुशासित होगा और वहीं वातावरण भी निर्मल–स्वच्छ होगा। पाठ्यक्रम संबंधी जानकारियों के साथ–साथ अपने बच्चों को सदाचार की सीख उनकी जीवन शैली में आत्मसात् करवाने की जरूरत है। यहाँ पर अभिभावकों की भूमिका भी महत्त्वपूर्ण है क्योंकि परिवार पहली पाठशाला है। इसमें माता–पिता एवं परिवार के अन्य बुजुर्ग सदस्य गुरु तुल्य है। विद्यालय एवं परिवार से सीखे गए जीवन मूल्य एवं संस्कार बच्चे के जीवन को संवारते हैं।

शुभ कामनाओं सहित...।

Zahida

(जाहिदा खान)

"विद्यालय पुस्तकालय में जीव-जंतुओं से संबधित एवं अन्य उपयोगी पुस्तकें, पत्रिकाएं बच्चों को पढ़ने के लिए उपलब्ध करवाएं। उनसे प्रकृति के बारे में सवाल पूछें और उनकी उत्सुकताओं को भी शांत करें। इससे हमारे बच्चे प्रसन्न, स्वस्थ रहेंगे और वे प्रकृति के नजदीक जाएंगे।"

सत्यमेव जयते

गौरव अग्रवाल
आई.ए.एस.
निदेशक, माध्यमिक शिक्षा

दिशा कल्प : मेरा पृष्ठ

राजस्थान के शिक्षा में बढ़ते कदम....

नवीन सत्र 2022–23 के शुभारंभ पर सभी विद्यार्थियों, अध्यापकों एवं शिक्षा परिवार के समस्त सदस्यों को बहुत–बहुत शुभकामनाएं। नया सत्र नई उम्मीदें लेकर आया है। समस्त संस्थाप्रधान, अध्यापक एवं विद्यार्थी सत्र के प्रथम दिवस से ही सम्पूर्ण सत्र का लक्ष्य निर्धारित कर कार्य योजना का निर्माण करते हुए उसे हासिल करने के लिए पूरे मनोयोग से जुट जाएँ। अध्यापकों से मेरा आग्रह रहेगा कि सबसे पहले यह सुनिश्चित करें कि उसके कार्य क्षेत्र में कोई भी बालक–बालिका शिक्षा से वंचित नहीं रहे, अनामांकित एवं ड्रॉप आउट की पहचान कर इसे शिक्षा की मुख्य धारा से जोड़ें। इस सत्र में राज्य सरकार विद्यार्थी हितार्थ दो नवीन योजनाएँ–'**विद्यार्थियों को यूनिफॉर्म उपलब्ध करवाना**' एवं '**मुख्यमंत्री बाल गोपाल योजना**' के तहत सप्ताह में दो दिन दूध उपलब्ध करवाने जा रही है। इन योजनाओं से निःसन्देह विद्यार्थी लाभान्वित होंगे।

मई–जून में विभिन्न कक्षाओं के परीक्षा परिणाम घोषित हुए हैं। शानदार परीक्षा परिणाम के लिए विद्यार्थियों, अभिभावकों एवं अध्यापकों को बहुत–बहुत मुबारकबाद! विद्यार्थियों से मेरा आग्रह रहेगा कि वे अपने अभिभावकों एवं गुरुजनों के सान्निध्य में अपनी गत सत्र की कमजोरियों को पहचान कर, दूर करने का प्रयास करें तथा नवीन शैक्षिक लक्ष्य निर्धारित करें। विभाग ने गत सत्र की कमियों को दूर करने एवं ज्ञान में वृद्धि हेतु '**राजस्थान के शिक्षा में बढ़ते कदम** (**SMBK**)' कार्यक्रम की शुरूआत की है। इस कार्यक्रम में सरल एवं आनंदपूर्ण शिक्षण विधि से अध्ययन को बेहतर बनाते हुए कोविड काल के दौरान विद्यार्थियों के हुए लर्निंग लॉस को दक्षता आधारित शिक्षण से दूर करना है।

जुलाई–अगस्त वर्षा का मौसम है। हमें इस मौसम में अपने स्वास्थ्य के साथ–साथ आस–पास के परिवेश का भी ध्यान रखना है।

शिक्षा परिवार के हर सदस्य से मेरा आह्वान रहेगा कि वह कम से कम दो पौधे लगाते हुए स्थायी रूप से उनकी देखभाल की जिम्मेदारी लेवें। विद्यार्थियों का समग्र विकास हो, यही हमारा मुख्य ध्येय होना चाहिए। इसी विश्वास एवं मंगलकामनाओं के साथ.......

आपका अपना

(गौरव अग्रवाल)

“ अध्यापकों से मेरा आग्रह रहेगा कि सबसे पहले यह सुनिश्चित करें कि उसके कार्य क्षेत्र में कोई भी बालक–बालिका शिक्षा से वंचित नहीं रहे, अनामांकित एवं ड्रॉप आउट की पहचान कर इसे शिक्षा की मुख्य धारा से जोड़ें। इस सत्र में राज्य सरकार विद्यार्थी हितार्थ दो नवीन योजनाएँ–'**विद्यार्थियों को यूनिफॉर्म उपलब्ध करवाना**' एवं '**मुख्यमंत्री बाल गोपाल योजना**' के तहत सप्ताह में दो दिन दूध उपलब्ध करवाने जा रही है। ”

मासिक
शिविरा पत्रिका

न हि ज्ञानेन सदृशं पवित्रमिह विद्यते–श्रीमद्भगवद्गीता ४/३८

इस संसार में ज्ञान के समान पवित्र करने वाला नि:संदेह कुछ भी नहीं है।

In this world there is no purifier as great as knowledge

वर्ष : 63 । अंक :01 । वैशाख–श्रावण २०७९ । जुलाई–2022

प्रधान सम्पादक
गौरव अग्रवाल
✻
वरिष्ठ सम्पादक
सुनीता चावला
✻
सम्पादक
राकेश व्यास
✻
सह सम्पादक
सीताराम गोदारा
✻
प्रकाशन सहायक
नारायण दास जीनगर
रमेश व्यास

मूल्य : रु. 20

वार्षिक सदस्यता राशि व शर्तें

✻ शिक्षकों /लिपिकों के लिए रु.100
✻ राजकीय संस्थाओं/कार्यालयों/विद्यालयों के लिए रु.200
✻ गैर राजकीय संस्थाओं के लिए रु. 300
✻ मनीऑर्डर/बैंक ड्रॉफ्ट/पोस्टल ऑर्डर **निदेशक माध्यमिक शिक्षा राजस्थान, बीकानेर** के नाम से दय है।
✻ चेक स्वीकार्य नहीं है।
✻ कृपया पूर्ण पता मय पिन कोड लिखें।
✻ नवीनीकरण हेतु राशि कृपया दो माह

पत्र व्यवहार हेतु पता
वरिष्ठ सम्पादक, शिविरा पत्रिका
माध्यमिक शिक्षा राजस्थान
बीकानेर–334011
दूरभाष : 0151–2528875
Email : shivira.dse@rajasthan.gov.in

शिविरा पत्रिका में व्यक्त विचार लेखकों के अपने विचार होते हैं। अभिव्यक्त विचारों से शिक्षा विभाग राजस्थान का सहमत होना आवश्यक नहीं है।

–वरिष्ठ संपादक

इस अंक में

मेरा संदेश
• विद्यार्थियों को प्राकृतिक वातावरण से जोड़े 3

दिशाकल्प : मेरा पृष्ठ
• राजस्थान के शिक्षा में बढ़ते कदम 4

आलेख
• असेसमेंट सेल: समग्र मूल्यांकन की दिशा में एक अभिनव पहल
प्रियंका जोधावत

• कुछ लिख के सो, कुछ पढ़ के सो 9
ओम प्रकाश सारस्वत

• नन्हें कदम, पर सधे कदम 11
डॉ. मूलचन्द बोहरा

• शिक्षण में कहानी की सार्थकता 14
डॉ. दिनेश कुमार गुप्ता

• सुखद अनुभूति के पद.. माननीय शिक्षामंत्री जी के संग 17
प्रकाश गुंजन

• युवाओं के पथ–प्रदर्शक डॉ. एपीजे अब्दुल कलाम 18
देवेन्द्रराज सुथार

• साइबर सुरक्षा जागरूकता के उद्देश्य में शिक्षकों की महती भूमिका 30
डॉ. सुनीता चौधरी

• बाल मनोविज्ञान और शिक्षक 32
हंसराज गुर्जर

• पर्यावरण संरक्षण का आधार : धर्म एवं संस्कृति 33
डॉ. गौरीशंकर प्रजापत

• गुरू पूर्णिमा 38
गोविन्द नारायण शर्मा

• English for communicaton in the classroom 40
Beginning a Lasson
Dr. Ram Gopal Sharma

• मेरी आवाज ही पहचान है, गर याद रहे 42
कमल कुमार जांगिड

मैं भी हूँ शिविरा रिपोर्टर ...
राजकीय उच्च माध्यमिक विद्यालय, दूनी, तहसील–देवली जिला–टोंक(राज.) 27

स्तम्भ-
✻ पाठकों की बात 6
✻ ओदश परिपत्र : जुलाई, 2022 19–26
✻ बाल शिविरा 46
✻ शाला प्रांगण से 47
✻ भामाशाहों ने बदली विद्यालय की तस्वीर
दीपक भारद्वाज 48–50

पुस्तक समीक्षा 45
✻ ज्ञान सतसई
✻ कवि– **ज्ञानेश कुमार मिश्र**
✻ समीक्षक– **राजरानी अरोड़ा**

मुख्य आवरण :
नारायण दास जीनगर, बीकानेर

विभागीय वेबसाइट : www.education.rajasthan.gov.in@seconday

पाठकों की बात-जुलाई 2022

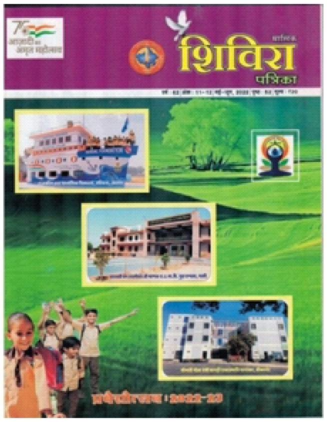

चिन्तन-

वृथा दृष्टिः समुद्रेषु,
वृथा तृप्तेषु भोजनम् ।
वृथा दानं धनाढयेषु ,
वृथा दीपो दिवाअपि च ।।

अर्थात्-

समुद्र में हुई वर्षा का कोई मतलब नहीं होता, भरपेट खाकर तृप्त हुए व्यक्ति को भोजन कराने का कोई मतलब नहीं होता, धनवान व्यक्ति को दान देने का कोई मतलब नहीं होता और सूर्य के प्रकाश में दिया जलाने का कोई मतलब नहीं होता।

-अज्ञात

माह मई-जून,2022 का अंक प्रवेशोत्सव 2022-23 अंकित आकर्षक मुखपृष्ठ के साथ प्राप्त हुआ। प्रदेश की शिक्षा व्यवस्था को एक नई दिशा देने वाले बहुमुखी व्यक्तित्व के धनी श्री गौरव अग्रवाल का शिक्षा निदेशक पद पर पदस्थापन के सुअवसर पर सभी शिक्षक बन्धुओं की ओर से अभिनन्दन। 'लर्निंग लॉस : एक चुनौती' लेख में कोविड-19 से शिक्षा व्यवस्था पर पड़े कुप्रभाव और क्षतिपूर्ति हेतु महत्त्वपूर्ण सुझाव दिए हैं। व्यवस्था को पुनः पटरी पर लाने के लिए शिक्षक, विद्यार्थी, अभिभावक, जन समुदाय और प्रशासन को मिलकर एक मिशन मोड पर कार्य करना होगा। 'सिद्धार्थ से सिद्धि तक' अनुपम यात्रा लेख महात्मा बुद्ध के जीवन के प्रसंग प्रेरणादायक और प्रासंगिक हैं। महादेवी के मूक साथियों के रेखाचित्र निश्चित ही मनुष्य के लिए शिक्षाप्रद हैं और जो पर्यावरण संतुलन के लिए आवश्यक है। 'आओ पुनः सजाएं बचपन में छुट्टियों के रंग' लेख बचपन की ओर लौटा देता है। अन्य लेख भी पठनीय है, इसके लिए सम्पादक मण्डल साधुवाद का पात्र हैं। मई-जून से सम्बन्धित सभी महापुरुषों की जयंतियों पर उन्हें सादर नमन !

– महेन्द्र कुमार शर्मा, नसीराबाद अजमेर।

किसी भी पत्रिका के सुधि पाठक उसकी गरिमा के महत्त्व को दर्शाते हैं। ऐसे ही जागृत एवं चिन्तक पाठक 'शिविरा' की भी अमूल्य धरोहर है, जो पत्रिका के कलेवर को समय के साथ-साथ परिष्कृत करने का काम करते हैं। माननीय शिक्षा मंत्री महोदय ने अपनों से अपनी बात में कोविड काल में जो शिक्षा का क्षय हुआ है उसकी क्षतिपूर्ति करने के कुछ बिन्दुओं पर प्रकाश डाला है। यह वास्तव में प्रशंसनीय है। डॉ. प्रमोद जी ने भी 'लर्निंग लॉस' पर विस्तृत रूप से टिप्पणी की है। माननीय शिक्षा निदेशक महोदय श्री गौरव अग्रवाल का शैक्षिक एवं सेवाकालीन परिचय पढ़ने को मिला। निःसंदेह अल्प समय में ही इतनी उपलब्धियों को पा लेना कोई आसान काम नहीं है। आपका परिचय ऊर्जा प्रदान करने वाला है। शिविरा के प्रत्येक नवीन अंक में कुछ विशिष्टता रहती है। 'महादेवी के मूक साथी' लेख में साहित्यकारों का निरीह प्राणियों के प्रति मानवीय व्यवहार मेरे मन को छू गया। इसी क्रम में 'वेस्ट टू बेस्टः स्वस्थ एवं स्वच्छ आदत का विकास' का कार्यक्रम छात्रों के लिए बहुपयोगी लेख है। पुस्तक समीक्षा, शाला प्रांगण, हमारे देश की महान विभूतियां जैसे-गुरुदेव रविन्द्रनाथ टैगोर, महात्मा गाँधी, महाराणा प्रताप, महात्मा बुद्ध या फिर विभागीय आदेश परिपत्र आदि शिविरा के सभी स्थाई स्तम्भ बौद्धिक एवं सृजन सम्पदा का भंडार है। पत्रिका के इस आकर्षक अंक को पाठकों तक पहुँचाने के लिए समस्त सम्पादन मण्डल को पुनः साधुवाद ।

-पवन कुमार स्वामी

(अध्यापक) पिलानी, झुंझन

शिविरा पत्रिका का मई-जून 2022 का संयुक्तांक प्राप्त हुआ। सरकारी विद्यालयों की बदलती तस्वीरों से सुसज्जित मुखावरण शिक्षा विभागीय प्रयासों की सार्थकता सिद्ध करता है। शिक्षा मंत्री जी की अपनों से अपनी बात, राज्य शिक्षा मंत्री जी का मेरा संदेश एवं निदेशक महादेय का परिचय के साथ दिशाकल्प : मेरा पृष्ठ इनके माध्यम से सम्पूर्ण शिक्षा विभाग को मार्गदर्शन मिलता हैं । इसके लिए शिविरा एक सशक्त माध्यम है।

शिविरा में संकलित आलेखों में अतिरिक्त जिला शिक्षा अधिकारी द्वारा 'स्वस्थ एवं स्वच्छ आदतों के विकास का कार्यक्रम-वेस्ट टू बेस्ट' आलेख बहुपयोगी है। इसी प्रकार महादेवी के मूक साथी, लर्निंग लॉस, आओ पुनः सजाएं-बचपन में छुट्टियों के रंग, खिलौना आधारित शिक्षक एवं खिलौना क्षेत्र पठनीय सामग्री है। ग्रीष्मावकाश के लिए मनोज कुमार जांगिड़ का 'आनन्ददायी और ज्ञानवर्धक ग्रीष्मावकाश' समसामयिक आलेख है।

सम्पादक मण्डल को शिविरा में स्थाई स्तम्भों को और अधिक महत्त्व देते हुए इसे प्रभावी बनाने की आवश्यकता है। राजस्थान की बहुत सी शालाएं अब अपना स्वरूप बदल चुकी है इनमें नवाचार एवं गतिविधियों के अलावा भामाशाहों का योगदान उपलब्धिपूर्ण होता है। बाल शिविरा में बालकों को अपनी प्रकाशित रचनाएं एवं चित्र देख/पढ़ कर मन प्रफुल्लित होता है और सभी को प्रेरणा देता है। संकलित चयन सामग्री एवं बेहतरीन सम्पादन के लिए शिविरा के सम्पूर्ण सम्पादक मण्डल को ढेर से बधाइयां ।

राजश्री भाटी, अध्यापिका, बीकानेर

असेसमेंट सेलः समग्र मूल्यांकन की दिशा में एक अभिनव पहल

प्रियंका जोधावत

शिक्षा एक सतत् एवं परिवर्तनशील प्रक्रिया है। यही कारण है कि शैक्षिक मुद्दों पर प्रारम्भ से ही निरंतर चिंतन किया जाता रहा है। वैश्विक प्रतिस्पर्धा के इस युग में विद्यार्थियों को अपेक्षाकृत अधिक प्रासंगिक ज्ञान, कौशल और मूल्यों से युक्त करने की आवश्यकता है । इनमें से कुछ आवश्यकताएँ प्रमुख रूप से पाठ्यचर्या के ढांचे एवं सामाजिक/व्यावसायिक आवश्यकताओं के मध्य अंतर के कारण उभरी हैं। अधिगम एवं पाठ्यचर्या में विद्यमान इन अंतरालों को वैज्ञानिक रूप से विकसित स्वतंत्र आकलन के माध्यम से ही पहचाना जा सकता है। आकलन वह प्रक्रिया है जिसके माध्यम से यह समझा जा सकता है कि शिक्षा में क्या महत्त्वपूर्ण है । आकलन के माध्यम से शिक्षा क्षेत्र को बेहतर ढंग से समझ कर उसके अनुसार उसमें बदलाव किया जा सकता है।

राष्ट्रीय शिक्षा नीति, 2020 एवं आकलन- आकलन की वर्तमान प्रणाली में परिवर्तन की आवश्यकता को नई राष्ट्रीय शिक्षा नीति में स्पष्ट रूप से रेखांकित करते हुए उल्लेखित किया गया है कि "हमारी स्कूली शिक्षा प्रणाली की संस्कृति में आकलन के उद्देश्य को योगात्मक आकलन जिसमें मुख्य रूप से रटकर याद करने के कौशल की ही जाँच की जाती है, के स्थान पर नियमित रचनात्मक आकलन की ओर ले जाना होगा। यह अधिक दक्षता आधारित है। यह हमारे विद्यार्थियों में सीखने और उनके विकास को बढ़ावा देता है साथ ही उनके उच्च कोटि चिंतन कौशलों जैसे विश्लेषण, तार्किक चिंतन एवं अवधारणात्मक स्पष्टता को जाँचता है। आकलन का प्राथमिक उद्देश्य वस्तुतः सीखने के लिए होगा। यह शिक्षक, विद्यार्थी और सम्पूर्ण स्कूली शिक्षा प्रणाली में मदद करेगा, सभी विद्यार्थियों के लिए सीखने और विकास का अनुकूलन करने के लिए शिक्षण–अधिगम प्रक्रियाओं को निरंतर संशोधित करने में सहायता करेगा। यह शिक्षा के सभी स्तरों पर आकलन के लिए अंतर्निहित सिद्धांत होगा।" (NEP Para4.34) स्पष्ट है कि राष्ट्रीय शिक्षा नीति] 2020 में आकलन की सम्पूर्ण परिकल्पना बच्चों के अधिगम स्तर का अनुमान लगाने वाली प्रक्रिया के स्थान पर सीखने में मदद करने वाली प्रक्रिया के रूप में निरुपित की गई है।

स्टार्स प्रोजेक्ट एवं आकलन - उल्लेखनीय है कि आकलन की वर्तमान प्रणाली में परिवर्तन की आवश्यकता को शिक्षा मंत्रालय, भारत सरकार के 'स्टार्स' प्रोजेक्ट के अंतर्गत भी रेखांकित किया है। इस प्रोजेक्ट का घटक–2 पूर्ण रूप से आकलन की प्रक्रियाओं में प्रणालीगत सुधार पर अवलंबित है जिसमें इसके लिए एक राज्य स्तरीय असेसमेंट सेल की स्थापना को अपरिहार्य बताया गया है। यह प्रोजेक्ट भारत के उन छः राज्यों को दिया गया है जिन्होंने 2017 में हुए नेशनल अचीवमेंट सर्वे में शीर्ष वरीयता प्राप्त की थी। विश्व बैंक द्वारा अनुदानित इस प्रोजेक्ट में राजस्थान के अलावा केरल, महाराष्ट्र, हिमाचल प्रदेश, मध्यप्रदेश और ओडिशा राज्य भी सम्मिलित हैं।

असेसमेंट सेल की स्थापना-आकलन की वर्तमान प्रक्रियाओं में व्यापक बदलाव की आवश्यकता को पूरा करने के लिए शिक्षा विभाग,राजस्थान द्वारा राष्ट्रीय शिक्षा नीति, 2020 एवं स्टार्स प्रोजेक्ट के आलोक में एक राज्य स्तरीय असेसमेंट सेल की स्थापना की गई है जिसकी नोडल एजेंसी राजस्थान राज्य शैक्षिक अनुसंधान एवं प्रशिक्षण परिषद् उदयपुर को बनाया गया है। इसी क्रम में 23 नवम्बर, 2021 को माननीय शिक्षा मंत्री महोदय द्वारा स्थानीय परिषद् में नवगठित असेसमेंट सेल का उद्घाटन किया गया।

असेसमेंट सेल के उद्देश्य-राजस्थान में राज्य स्तरीय असेसमेंट सेल की स्थापना निम्नलिखित उद्देश्यों की पूर्ति हेतु की गई है–

नियमित आधार पर विद्यार्थियों के प्रदर्शन का आकलन एवं विश्लेषण कर सीखने के प्रतिफलों में सुधार हेतु आगे की योजनाओं का निर्माण करना।

उच्च गुणवत्ता वाले प्रश्न ए प्रश्न–पत्र निर्माण हेतु जिला स्तर पर डाईट एवं उससे संबंधित विभिन्न हितधारकों का क्षमता संवर्धन करना। इससे बच्चों के सीखने में आए अंतर को आसानी से पहचाना जा सकेगा।

निदानात्मक आकलन के आधार पर शिक्षक–प्रशिक्षण को गुणवत्तापूर्ण बनाने के साथ ही पाठ्यचर्या एवं नीतिगत बदलाव हेतु विभिन्न योजनाओं का निर्माण व क्रियान्वयन करना।

आकलन की कार्यप्रणाली में अधिक से अधिक तकनीकी का उपयोग करना ताकि आकलन से प्राप्त हुए आंकड़ों का बेहतर उपयोग किया जा सके।

असेसमेंट सेल की संरचना-

असेसमेंट सेल की योजना प्रबंधन इकाई में स्कूल शिक्षा परिषद् के राज्य परियोजना अधिकारी को अध्यक्ष एवं सदस्य के तौर पर निदेशक, माध्यमिक शिक्षा विभाग तथा निदेशक, RSCERT आदि को सम्मिलित किया गया है। वहीं परिषद् की कोर टीम,15 विषय विशेषज्ञों एवं 15 तकनीकी विशेषज्ञों के माध्यम से राज्य भर में सेल के विभिन्न अन्तःक्षेपों का संचालन एवं प्रबोधन किया जाएगा। सेल के प्रभावी क्रियान्वयन हेतु जिला स्तर पर दो एवं ब्लॉक स्तर पर चार संदर्भ व्यक्ति नियुक्त किए हैं। इसके अलावा नॉलेज पार्टनर के रूप में पिरामिल फाउंडेशन, तकनीकी पार्टनर के रूप में कोन्विजीनियस एवं अन्य सहयोगी संस्थाओं–क्षमतालय, यूनिसेफ, अजीम प्रेमजी फाउंडेशन तथा रूम टू रीड इत्यादि का भी सहयोग लिया जा रहा है।

असेसमेंट पोर्टल-

असेसमेंट सेल के पास स्वयं का एक निगरानी एवं मूल्यांकन तंत्र होगा जिसके माध्यम से राज्य,जिला और ब्लॉक स्तर पर होने वाले कार्य की हर चार महीने में समीक्षा

की जाएगी। इसी क्रम में तकनीक आधारित निगरानी और मूल्यांकन प्रणाली विकसित करने हेतु एक 'असेसमेंट पोर्टल' का निर्माण प्रक्रियाधीन है। प्रस्तावित पोर्टल द्वारा न केवल कक्षा–कक्ष शिक्षण वरन शिक्षक–शिक्षा के समस्त हितधारकों जैसे DIET's, IASE इत्यादि का भी आकलन किया जाएगा।

उक्त असेसमेंट पोर्टल एकदम यूजर फ्रेंडली होगा जिससे शिक्षक न केवल प्रश्न–पत्र डाऊनलोड कर सकेंगे बल्कि अपने स्वनिर्मित प्रश्न–पत्र पोर्टल पर अपलोड भी कर सकेंगे।

असेसमेंट सेल की मूल्यांकन प्रणाली- असेसमेंट सेल द्वारा विद्यार्थियों का हर क्षेत्र में मूल्यांकन किया जाएगा। विद्यार्थी जिस क्षेत्र में रुचि रखता है, उसे उसी में आगे बढ़ाया जाएगा। इसके लिए विद्यार्थियों का हॉलिस्टिक रिपोर्ट कार्ड बनाया जाएगा जिसमें पुस्तकीय ज्ञान के अलावा विद्यार्थियों का हेल्थ, इमोशनल, फिजिकल और सोशल असेसमेंट भी किया जाएगा।

यह रिपोर्ट कार्ड राष्ट्रीय शिक्षा नीति, 2020 में उल्लेखित 'हॉलिस्टिक रिपोर्ट कार्ड (HPC)' के अनुरूप ही निर्मित किया जाएगा। यह एक 360 डिग्री वाला, बहु–आयामी कार्ड होगा जिसमें प्रत्येक विद्यार्थी के संज्ञानात्मक, भावात्मक, साइकोमोटर डोमेन में विकास का बारीकी से किए गए विश्लेषण का विस्तृत विवरण,विद्यार्थियों की विशिष्टताओं समेत दिया जाएगा। इसमें स्व–मूल्यांकन, सहपाठी मूल्यांकन, प्रोजेक्ट कार्य और खोज–आधारित अध्ययन में प्रदर्शन, क्विज, रोल प्ले, समूह कार्य, पोर्टफोलियो आदि शिक्षक मूल्यांकन सहित सम्मिलित होगा (NEP Para4-35)।

उक्त मूल्यांकन प्रणाली से विद्यार्थियों में कौशलों का विकास होगा जिससे वे हुनर के आधार पर आगे बढ़कर उसमें अपना कॅरियर बना सकेंगे। इसके लिए सीखने के प्रतिफलों को ध्यान में रखते हुए उपकरण निर्मित किए जा रहे हैं। साथ ही क्षमता संवर्धन हेतु विद्यालय आधारित असेसमेंट भी किए जाएंगे। जिला स्तर से विद्यालय स्तर तक इसमें कार्य किया जाएगा। शिक्षक तय करेंगे कि कक्षाओं में विद्यार्थियों को कैसे तैयार किया जाए।

वर्ष 2022-23 हेतु असेसमेंट गतिविधियाँ-असेसमेंट के व्यापक महत्त्व एवं असेसमेंट सेल के उद्देश्यों को दृष्टिगत रखते हुए वर्ष 2022–23 की वार्षिक कार्ययोजना में कई असेसमेंट गतिविधियों यथा– परीक्षण पदों का निर्माण, बुनियादी साक्षरता एवं संख्या ज्ञान (FLN) हेतु उपकरण निर्माण तथा शिक्षक आवश्यकता आधारित आकलन (TNA) प्रशिक्षण इत्यादि को स्थान दिया गया है।

इसके अलावा स्टार्स प्रोजेक्ट हेतु वर्ष 2022–23 के प्रस्ताव में भी कई असेसमेंट गतिविधियों यथा–असेसमेंट पोर्टल का विकास, असेसमेंट कैडर के क्षमतावर्धन हेतु विशेषज्ञ एजेंसी का चयन, परीक्षण पदों के निर्माण कार्यशालाओं का आयोजन एवं विद्यालय आधारित असेसमेंट मॉड्यूल्स पर शिक्षकों का जिला स्तरीय आमुखीकरण इत्यादि को सम्मिलित किया गया है।

समाहार–निष्कर्षतः असेसमेंट सेल को, राज्य में विद्यार्थी आकलन की परम्परागत प्रणाली में आमूलचूल परिवर्तन किए जाने की दिशा में एक महत्त्वपूर्ण पहल माना जा सकता है, जिसकी आवश्यकता का रेखांकन राष्ट्रीय शिक्षा नीति, 2020 एवं केंद्र प्रवर्तित स्टार्स प्रोजेक्ट में स्पष्ट रूप से किया गया है। उक्त दोनों दस्तावेजों पर स्पष्ट रूप से एक राष्ट्रीय आकलन केंद्र की स्थापना कर विद्यार्थियों के स्कूल आधारित आकलन के आधार पर तैयार होने वाले साथ ही अभिभावक को दिए जाने वाले प्रगति कार्ड को पूरी तरह से नया स्वरूप दिए जाने का उल्लेख मिलता है। इस प्रकार राजस्थान में स्थापित असेसमेंट सेल की न केवल स्थापना वरन इसकी प्रस्तावित मूल्यांकन प्रणाली भी राष्ट्रीय विमर्श से व्युत्पन्न राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 एवं स्टार्स प्रोजेक्ट की अपेक्षाओं के अनुरूप विकसित की गई है।

निदेशक
आर.एस.सी.ई.आर.टी, उदयपुर
सहेली मार्ग,
उदयपुर-313001
मो.नं.-9680511111

-: रचना आमंत्रण :-

'शिक्षक दिवस' के उपलक्ष्य पर प्रकाशित शिविरा पत्रिका के 'शिक्षक दिवस विषेशांक' में प्रकाशनार्थ शिक्षकवृंद व सुधी पाठकों से विविध विषयों एवं विधाएं जो कि विद्यालय व विद्यार्थी हित में हो यथा-शैक्षिक चिंतन-अनुभव, कहानी, संस्मरण, एकांकी, बाल साहित्य, कविता एवं राजस्थानी साहित्य (गद्य-पद्य) आदि मौलिक कम्प्यूटराईज्ड अथवा स्पष्ट हस्तलिखित रचनाएं दिनांक 20 जुलाई 2022 तक आमंत्रित की जाती है।

अतः सुधी जन अपनी मौलिक व स्वरचित रचना के अंत में मौलिकता तथा अप्रकाशित होने की स्व घोषणा प्रमाण पत्र मय हस्ताक्षर संलग्न कर निर्धारित तिथि तक प्रेषित करें। साथ ही संलग्न स्व घोषणा प्रमाण पत्र पर 'शिक्षक दिवस विषेशांक' हेतु लिखें एवं प्रमाण पत्र के साथ अपनी बैंक डायरी के प्रथम पृष्ठ की सुपाठ्य प्रति प्रत्येक रचना के साथ (एकाधिक रचना प्रेषित करने की स्थिति में) अलग-अलग संलग्न करें। निर्धारित तिथि पश्चात् प्राप्त रचनाओं पर विचार नहीं किया जा सकेगा।

बाल मन को रचनात्मक कार्यों के लिए प्रेरित करने, उनमें सृजन के संस्कार देने हेतु विद्यार्थियों को विद्यालय स्तर से कविता कहानी लिखने के लिए उचित वातावरण उपलब्ध करवाना चाहिए। संस्थाप्रधान विद्यालयों में अध्ययनरत विद्यार्थियों द्वारा सृजित एवं स्वरचित कविता, कहानी, गीत, बोधकथा एवं चित्र एवं पेंटिंग्स बाल-शिविरा में प्रकाशन हेतु प्रेषित करें। हमें विद्यालयों के छोटे-छोटे बाल रचनाकारों की रचनाओं का बेसब्री से इंतजार रहता है।

शाला परिसर में आयोजित समस्त प्रकार की बालोपयोगी एवं शैक्षिक गतिविधियों को 'शाला प्रांगण से' स्तंभ के माध्यम से पाठकों तक पहुंचाने का प्रयास किया जाता है। अतः संस्थाप्रधान आयोजित कार्यक्रम का संक्षिप्त नोट बनाकर प्रेषित करें।

उक्त रचनाएं 'वरिष्ठ सम्पादक' शिविरा प्रकाशन, माध्यमिक शिक्षा, राजस्थान, बीकानेर-334011 के पते अथवा E-mail: shivira.dse@rajasthan.gov.in पर प्रेषित की जाए। बाल शिविरा/शाला प्रांगण से स्तंभ के तहत प्रेषित की जाने वाली रचना/नोट संस्थाप्रधान स्वयं प्रमाणीकृत करते हुए विद्यालय के अधिकृत E-mail अथवा डाक द्वारा प्रेषित करें।

वरिष्ठ सम्पादक

कुछ लिख के सो , कुछ पढ़ के सो

● ओमप्रकाश सारस्वत

पढ़ना और लिखना जैसे सहोदर भ्राता है। सहोदर ही नहीं बल्कि कहना चाहिए कि इन दोनों में जुड़वा भाईयों सरीखा सम्बंध होता है। यह इस बात से पुष्ट हो जाता है कि पढ़ना और लिखना न कह कर आमतौर पर पढ़ना – लिखना ही बोलते है यानि बीच में और शब्द लगाने की भी आवश्यकता नहीं रहती । पढ़ना–लिखना दो पृथक मगर परस्परावलम्बी क्रियाएं है । ये दोनों क्रिया साथ–साथ चलती है । पढ़े बगैर लिखना नामुमकिन प्रायः है और पढ़ लिया तो समझो यह लिखे हुए के रूप में सामने आएगा ही।

हरि अनन्त हरि कथा अनन्ता

एक छोटा बच्चा जब स्लेट पर कोई अंक–आखर या अपनी मर्जी से कोई भी आकृति बनाता है तो उसके द्वारा वह 'लिखना' है और लिखे हुए बोलकर सुनना 'पढ़ना' है। यह अंक–आखर–आकृति मांडने (लिखना) से किसी अंक–आखर–आकृति को देखकर बोलने (पढ़ना) से हुए को श्रीगणेश की यात्रा रेडियो, टेलीविजन, सभा –सेमिनारों, विधायी संस्थाओं (संसद, विधान सभा, विधान परिषद् आदि) में बोलने–दहाड़ने तथा नोबल पुरस्कार प्राप्त साहित्य लिखने तक सतत चलती रहती है । हरि अनन्त–हरि कथा अनन्ता की तरह पढ़ने–लिखने का कोई छोर नहीं है। पढ़ते जाओ, सुनते जाओ, पढ़ते–सुनते गुनते जाओ, गुनते–गुनते लिखते जाओ ज्यों–ज्यों पढ़ोगे, त्यों–त्यों गहरे अर्थ मिलते जाएंगे और लगेगा कि हमने अभी तो कुछ नहीं जाना । 'जिन खोजा तिन पाइया – गहरे पानी पेठ' के मानिन्द और उतना ही बढ़िया लेखन आप कर पाएंगे।

उज्ज्वल परम्परा उपनिषद् की पुराने समय में उपनिषद् की उज्ज्वल परम्परा हमारे यहाँ थी। जिज्ञासुजन ज्ञानवान लोगों के श्रीचरणों में बैठकर सीखते थे। यह गुरु शिष्य परम्परा बड़ी अद्भुत थी । गुरु के मुंह से निकले शब्दों पर शिष्य गहन चिन्तन करते थे। विभिन्न ग्रंथों का अध्ययन करते और बड़ी तैयारी कर इदगुरु के साथ उपनिषद् करते। वे अपनी शंकाएं एवं समस्याएं उनके समक्ष रखकर उनका समाधान करवाते। यह दही को बिलोने 'दधि बिलोवन' जैसी क्रिया होती थी जिसमें मंथन जैसे दही मथना के कारण प्राप्त नतीजा नवनीत के समान मिठास लिए एवं उपयोगी होता था।

लिखने की चाह , राह इधर से है-

निरन्तर पढ़ने और चिन्तन मनन करने से लिखने और सभा समूह के मध्य बोल सकने की योग्यता अर्जित होती है। यह आत्म विश्वास की कसौटी है । अगर किसी ने बहुत अच्छा लिखा अथवा बहुत जानदार बोला है तो यह मानकर चलिए कि उसने पहले बहुत अच्छा पढ़ा है, चिन्तन–मनन किया है । लिखने का रास्ता पढ़ने में से होकर गुजरता है। शरतचन्द्र ने शरतपत्रावली में लिखा है, ''मैं प्रतिदिन दो घण्टे से अधिक कभी नहीं लिखता जबकि 10–12 घण्टे पढ़ता हूँ ।'' साहित्य में लेखनी को तलवार से अधिक शक्तिशाली कहा जाता है। इसका आशय यही है कि सांगोपांग चिन्तन–मनन के उपरान्त लिखी गई अथवा कही गई बात युक्तियुक्त होने के कारण उसके आगे रूकना और कहीं–कहीं समझो झुकना ही पड़ता है। तर्क एवं विश्लेषण शक्ति भुजबल से अधिक कारगर होती है जिसके आगे जिद्द को छोड़कर शेष सभी ताकतें नतमस्तक रहती हैं । जिद्द तो जिद्द होती है उसमें तर्क न होकर कुतर्क हावी रहता है । साहित्य इसका हामी नहीं हो सकता।

आलोचक बनिए – आलोचना सहिए–

परिष्कार का सर्वमान्य सिद्धान्त यह है कि कार्यों की सतत समीक्षा एवं आलोचना की जाती रहे । यह बात व्यक्ति के कार्य एवं व्यवहार पर भी लागू होती है । यदि किसी कार्य अथवा व्यक्ति की किसी प्रकार की आलोचना– प्रत्यालोचना नहीं हो और इसके स्थान पर केवल प्रशंसा हो तो उसका विकास रूक जाता है । इतना ही नहीं, उसके नकारात्मक प्रवाह की संभावना भी बढ़ जाती है। अतः लेखक को चाहिए कि वह न केवल अन्यों का ही अपितु स्वयं का भी आलोचक बने। दूसरों के द्वारा की जाने वाली आलोचना को सहन कर आलोचना के बिन्दुओं की मीमांषा करते हुए तद्नुसार सुधार करने का साहस उसके भीतर होना चाहिए। शरतचन्द कहते हैं, "मनुष्य में केवल लेखक ही नहीं रहता बल्कि एक आलोचक भी रहता है । उम्र के साथ वह आलोचक बढ़ता जाता है। इसलिए अधिक उम्र में जब लेखक लिखने बैठता है, तब उसके भीतर आलोचक पग – पग पर उसका हाथ पकड़ लेता है ।'' इससे उसके लेखन में निश्चय ही सुधार आता है । महात्मा बुद्ध के 'आत्म दीपो भवः' सिद्धान्त का भी यही आशय है कि व्यक्ति का मूल्यांकन उसके स्वयं के द्वारा श्रेयस्कर किया जा सकता है । अतः लिखने और बोलने के समान्तर भीतर में एक निर्भीक आलोचक सदैव जिन्दा रहना चाहिए । आप अपना मूल्यांकन करना सीखिए ।

अनुभूतिवान होना परमावश्यक– संवेदनशीलता के धरातल पर ही समुचित लेखन संभव होता है । अतः एक कुशल लेखक संवेदनशील अवश्य होता है । स्वयं को भिन्न – भिन्न परिस्थितियों में रखकर किसी निष्कर्ष पर पहुँचने वाले लेखक निराले होते हैं। पद्य लेखक यानी कवियों, गीतकारों के मामले में तो यह विशेषता और भी तीव्र होती है । ऐसे में एक लेखक के लिए अनुभूतिवान होना भी परमावश्यक हैं । इस बात को प्रगतिशील लेखक संघ के लखनऊ अधिवेशन (1936) की अध्यक्षता करते हुए मुंशी प्रेमचन्द्र ने इस प्रकार निरूपित किया था, "कवि या साहित्यकार में अनुभूति की जितनी तीव्रता होती है, उसकी रचना उतनी ही आकर्षक और ऊँचे दरजे की होती है ।'' उपन्यास सम्राट ने अपना उद्‌बोधन उर्दू में दिया था जिसका बाद में हिन्दी अनुवाद किया गया और जिसे सर्वकालीन लेखकों एवं साहित्यकारों के लिए ताबीज की तरह माना

जाता है । प्रेमचंद जी के इस ताबीज को हमें अवश्य गले लगाना चाहिए ।

छपना ही अभीष्ट नहीं है- पढ़ना 'स्वान्तः सुखाय' होता है यानी पढ़ने से केवल स्वयं को सुख मिलता है जबकि लिखना स्वान्त सुखाय के साथ 'पर सुखाय' भी होता है। इसका आशय यह है कि लिखने से स्वयं को तो प्रसन्नता होती ही है मगर उस लिखे हुए को पढ़कर अन्य लोग भी लाभ उठाते हैं । पुस्तकों की प्रस्तावना में लेखक यह उल्लेख करते हैं कि यदि इस लेखन से पाठकों को लाभ हुआ तो वे स्वयं को धन्य समझेंगे। अतः स्पष्ट है कि लिखने में लोक हित की भावना लेखक के भीतर रहती है। अतः यह पर हिताय भी होता है। हम जो पढ़ते और पढ़कर प्रसन्नता के साथ लाभ ग्रहण करते हैं, वह एक तरह से हम पर शब्द ऋण हो जाता है ।

लिखना एक तरह से उस ऋण से मुक्त होना है । जब हम कुछ लिखकर जगत के हाथों में सौंप देते हैं तो यह ऋण की अदायगी की दिशा में एक कदम होता है । इस प्रकार हमनें जो पढ़ा है वह लिखने वालों का हम पर ऋण है । ऋण की अदायगी के लिए जैसे ईएमआई अदा करना हम याद रखते हैं, वैसे ही पढ़े हुए शब्द – ऋण की अदाएगी के लिए सृजन की ईएमआई तय की जानी चाहिए । मस्तिष्क पटल पर आने वाले विचारों को अवश्य लिखना चाहिए। यह अच्छी बात है कि हमारा लिखा हुआ पत्र – पत्रिकाओं में छपे भी, लेकिन लिखने का मतलब यह नहीं होना चाहिए कि जो लिखा है, वह अवश्यमेव छपे ही। ज्ञान भी छिपा हुआ अथवा ढका हुआ नहीं रह सकता। साहित्य के इतिहास को यदि टटोलते हैं तो ऐसे अनेक लेखक ध्यान में आते हैं जिन्होंने जिन्दगी भर लिखा । लिख – लिखकर बक्से भर दिए मगर छपा नहीं। सृजन की फितरत ही कुछ ऐसी होती है । अतः शब्द साधना करते हुए निर्लिप्त भाव से निरन्तर लिखते रहना चाहिए ।

स्वान्तः सुखाय हो लेखन-पठन-

पढ़ना–लिखना साधना का काम है। यह मुश्किल नहीं तो एकदम सरल काम भी नहीं है। दरअसल यह व्यक्ति की रुचि एवं शौक का काम है। यह रुचि जब नशे जैसी स्थिति में बदल जाती है, तब पढ़ना लिखना नियमित रूप से संभव हो सकता है। ऐसे लोग आपको जरूर मिले होंगें जो ये कहते हैं कि हमें पुस्तक पढ़े बिना नींद नहीं आती। ऐसे पढ़ाकू इंसानों के शयन कक्ष में पुस्तकें शोभायमान रहती है। पुस्तक पढ़ते–पढ़ते नींद की आगोश में खो जाने वाले अध्ययन प्रेमियों के सिरहाने पुस्तकें मिल जाएगी। इस स्थिति को स्वान्तः सुखाय की स्थिति कहा जा सकता है। स्वान्तः सुखाय का आशय है स्वयं के सुख के लिए । गोस्वामी तुलसीदास जी जब श्रीरामचरितमानस पर काम कर रहे थे, तब किसी ने उनसे पूछा कि आप यह सब किस हेतु से कर रहे है तो गोस्वामी जी ने बड़ी सरलता से कहा कि यह सब वे अपने स्वयं के सुख के लिए कर रहे हैं । यह टिप्पणी रचनाकार की उस रचना के लिए है जिसे करोड़ों लोग आज भी पढ़ते है और लाभ उठाते है। इस प्रकार निर्विकार एवं बिना कोई स्वहित भाव रखे लिखने वाले अध्येताओं व लेखकों ने दुनिया को कल्याणकारी ग्रंथ प्रदान किए है जिनमें श्रीरामचरितमानस का स्थान निसंदेह अग्रणीय है। दिन भर का लेखा–जोखा संग्रहित करने के लिए डायरी एक सशक्त विधा है। बहुत से लोग नियमित रूप से डायरी संधारित करते हैं । डायरी लिखना एक बहुत अच्छी आदत है। हमें डायरी के निमित्त प्रतिदिन कुछ न कुछ लिखने का सौभाग्य मिल जाता है। इतना ही नहीं बल्कि जीवन का एक लिखित दस्तावेज भी डायरी के रूप में तैयार हो जाता है। इन कार्यों में धैर्य के साथ निरन्तरता बहुत जरूरी है।

चलते रहो निरन्तर-

पढ़ने लिखने में निरन्तरता आवश्यक हैं। इसमें किसी भी प्रकार के ब्रेक का प्रावधान नहीं है । यह एक ऐसी दवा है जिसे निर्धारित समय पर लेना ही होता है । जो लोग ज्यादा से ज्यादा पढ़ते, सुनते और गुनगुनाते हैं, वे उतना ही उम्दा और प्रभावी लिख सकते हैं, बोल सकते हैं पढ़ना जैसे बैंक खाते में रूपये जमा करवाना है । हमने खाते में पहले रुपये जमा करवाए है तब ही तो हम उन्हें निकाल पाएंगें । इसी प्रकार पहले हमने पढ़ – पढ़कर भीतर में ज्ञान संचय किया है, तब ही तो उस संचित ज्ञान पर अपने विचारों की चासनी चढ़ाकर हम नवसृजन कर पाएंगें। इसलिए जरूरी है कि हम निरन्तर यथोचित पढ़ते लिखते रहे। प्रसिद्ध गांधीवादी विचारक व कवि भवानीप्रसाद मिश्र ने शब्द साधकों के लिए बहुत सार्थक कहा है–

कुछ लिख के सो ,
कुछ पढ़ के सो,
तू जिस जगह जागा सवेरे,
उससे आगे बढ़ के सो,

निष्कर्ष रूप में कहा जा सकता है कि लिखना – पढ़ना मनुष्य में देव प्रदत्त योग्यता बीज रूप में होती है । विद्यालय, समाज एवं परिवेश उसमें जैसे खाद – पानी देकर और निखार ला देते हैं । इस हेतु हर सम्भव मंच से हर समय सार्थक प्रयास किए जाने चाहिए । हरावल भूमिका तो शिक्षक को ही निभानी है क्योंकि नवसृजन का बीज उसी में छिपा है । **कलममेव जयते!** विख्यात सेनापति नेपोलियन बोनापार्ट के अनुसार विश्व में दो ही शक्तियाँ हैं– तलवार और कलम । तलवार का धनी नेपोलियन आगे कहता है कि अन्ततः तलवार कलम से पराजित होती है । यहां तलवार युद्ध अशान्ति की प्रतीक है जबकि कलम शान्ति और सौहार्द्र की । कलम पढ़ने लिखने वालों की प्रतीक है । इतिहास में विख्यात सेनापति रहे नेपोलियन का यह कथन पढ़ने – लिखने की महिमा उजागर करता हैं । उत्तम लेखक अपने पाठक का हितेषी होता हैं। वह पाठक की मनः स्थिति में स्वयं को रखकर तत्आशय का लेखन करता है । लिखने का आदर्श स्वयं को सबमें बांट देना होना चाहिए । इसके लिए लेखक को धैर्यवान होना आवश्यक है । लेखन में हड़बड़ाहट नहीं होनी चाहिए । शरतचन्द्र चटर्जी ने कहा है, ''लिखने में शीघ्रता (उतावलापन) मुंशी की योग्यता है, लेखक की नहीं ।''

संयुक्त शिक्षा निदेशक
(से.नि.) ए– विनायक लोक , बाबा
रामदेवजी रोड गंगाशहर –334401
(बीकानेर) मोः 9414060038

नन्हे कदम,पर सधे कदम

डॉ. मूलचन्द बोहरा

जुलाई का महीना, उल्लास का, उमंग का, बरसात का, ताजगी का और पढ़ाई लिखाई का । यह एक शुरूआती दौर है जिसमें हम नई कक्षा, नए साथी, नए बच्चे व सब कुछ नए–नए से, बदले– बदले से वातावरण में शामिल होते हैं। इस दौरान स्कूल में पिछले सालों के किस्से, पास–फेल की बातें, खेलकूद, ट्रॉफी, मौज–मस्ती, घूमने –फिरने के किस्से आदि की बातें होती और इन बातों के बीच हमें कुछ ऐसी बातें करनी है जो साल भर के कोर्स के दौरान पूरी की जानी है। अक्सर बच्चे परीक्षा के भय के साए में पढ़ाई के आनंद को खो देते हैं। वे बोर्ड परीक्षा के नाम पर तरह–तरह के डरावने किस्से गढ़ लेते हैं या वे बड़े बच्चों से उनकी खबर पा लेते हैं । अमूमन यह किस्से यूं गढ़े जाते हैं– परीक्षा में सवाल को बहुत घुमाया–फिराया जाता है। एक ही सवाल में पाँच सवाल होते हैं। परीक्षा कक्ष में सिर को पीछे घुमाने पर भी सजा मिलती है । पुलिस केस भी हो जाता है। फलां छात्र के यह हो गया और फलां के वह हो गया । इसी तरह शिक्षकों के बीच भी परीक्षा परिणाम कम रहने का डर रहता है तो उससे संबंधित बातें होती रहती है। फलां का रिजल्ट कम रहा, इसलिए उसे सी.सी.ए. 17 में ज्ञापन, आरोप–पत्र जारी किए गए।

सबसे पहले हमें स्कूल को आनंद निकेतन बनाना है। उसे परीक्षा का एक मात्र स्थान या विभागीय जाँच का हेतु नहीं बनाना है। ऐसा नहीं है कि बच्चों को परीक्षा की गंभीरता से अवगत नहीं करवाना है । परंतु उन्हें गंभीरता और डर के अंतर को समझाना है। हम अभी से साल भर की पाठ्यचर्या और पाठ्यक्रम की ठीक से तैयारी शुरू कर देवें तो फरवरी मास में किसी प्रकार का परीक्षा संबंधित तनाव नहीं रहेगा । आइए, इसकी शुरूआत करते हैं । पहले तो हम शिक्षकों को पढ़ने पढ़ाने के काम को आनंद का काम मानना होगा। हमें अपने बच्चों के भीतर एक ऐसा भाव जगाना होगा कि इस साल हमें कुछ नया करना है। कुछ अलग करना है। हमें अपने काम को बोझ नहीं मानना है बल्कि उसे एक मौका मानना है जिसे भुनाया जाना है, कुछ अच्छा करके, कुछ उपयोगी करके, कुछ लीक से हटकर करके, जो अन्य के लिए प्रेरणा के तौर पर काम करें । अज्ञेय के शब्दों में –

मेरा कर्म मेरे गले का जुआ नहीं
वह जोती हुई भूमि बन जाए
जिसमें मुझे नया बीज बोना है।

खेत में बीज बोने के आनंद की भांति स्कूल के काम में आनंद लेना है। हमें यह सोचते रहना है कि हम मात्र सरकारी कारिंदे नहीं, जिसे दस से चार की हाजिरी भरनी है। हम अध्यापक हैं और मात्र अध्यापक होना ही अपने आप में बड़ा दायित्व है। अध्यापक होना होता क्या है ? इसे समझना जरूरी है। रूसी चिंतक लियो टॉलस्टॉय के शब्दों में–'अध्यापक का काम एक उद्दात और अभिजात्यपूर्ण काम है । मगर अध्यापक वह नहीं जिसने अध्यापक की शिक्षा पाई है बल्कि वह है जो अपने अंतर्मन में विश्वास करता है कि वह अध्यापक है उसे अध्यापक ही होना चाहिए। इसके अलावा वह कुछ नहीं हो सकता।' (रोमा रोला को लिखे पत्र, 1887 में से उद्धृत)

इधर हमने अध्यापक की शिक्षा पाई है, इसलिए हम स्कूल में हैं परंतु हम सही मायने में अध्यापक तब बनेंगे जब हम मन से इस काम को अपनाएंगे। उसे दुनिया का सबसे बेहतरीन काम मानेंगे, तब सचमुच सही रूप में बच्चों से जुड़ पाएंगे। उनके अंतर्मन को टटोल पाएंगे और **अंतर हाथ सहारि** देने के भाव के साथ उन्हें सीखने– सिखाने के माहौल में ला पाएंगे। हम सभी शिक्षक हैं और कमोबेश अच्छे हैं। बस हमें हनुमान की भांति एक बार जामवंत उद्बोधन की जरूरत है इसलिए संस्था के मुखिया और उसकी टीम को मिलजुलकर काम करना है ।

स्कूल समाजीकरण की शुरूआती संस्था है। यहाँ आपसी मेल–जोल और संवाद से आगे बढ़ा जा सकता है । बच्चे भिन्न–भिन्न माहौल से आते हैं तो उन्हें पहले नेह और लगाव का वातावरण मिलना चाहिए। स्कूल में तिरस्कार और दुत्कार की कोई जगह नहीं होनी चाहिए। वैसे भी अभिभावक अभी इतना शिक्षित नहीं हुए कि वे बच्चों के मनोविज्ञान को ध्यान में रखकर उनके साथ ठीक व्यवहार कर सकें। इसलिए हम शिक्षकों को दोहरी भूमिका निभानी होती हैं। एक शिक्षक की और दूसरी माता–पिता की । इस दिशा में आगे बढ़े उससे पहले एक छोटा सा काम, जो लगता छोटा है परंतु है बड़ा प्रभावी उसे करना होगा। बच्चे को नाम से पुकारना। हमें अगर बच्चों के नाम याद नहीं रहते हैं तो उसका अभ्यास आज से ही करना शुरू कर दें । लगातार अभ्यास करने से हम अधिक से अधिक बच्चों के नाम याद रख पाएंगे। इसे हमें रोजमर्रा के कामकाज का हिस्सा बनाना चाहिए । बच्चे के नाम से पुकारने पर बच्चा अपने वजूद का एहसास करता है । उसे लगता है कि वह इस समाज का महत्त्वपूर्ण घटक है और यह एहसास जन्मने पर आप बच्चे से मनचाहा काम करवा सकते हैं । वह अपनी चार गुना ऊर्जा से उस काम में जुट जाएगा। यह प्रयोग करके देखिए नतीजे इससे भी बेहतर आएंगे। यहाँ यह कहना इसलिए पड़ रहा है कि इस दौर स्कूलों में ऐसा नहीं हो रहा है । राजाराम भादू अपनी पुस्तक स्कूल की संस्कृति में लिखते हैं –'तो हमारे औपचारिक स्कूलों की हालत क्या है, वहाँ शिक्षक बच्चों के नाम तक नहीं जानते। इन स्कूलों के पाठ्यक्रम में जनतांत्रिक प्रणाली का बहुविध परिचय दिया गया है किंतु स्कूल के आंतरिक व्यवहार में विवेकशील मूल्य और दृष्टिकोण शायद ही परिलक्षित होते हैं ।'

अच्छा तो यह है कि ऐसे हालात हमारे स्कूल में न बने और यदि बन रहे हैं तो फिर हमें इस और गौर करना होगा। कम से कम सत्रारंभ से ही प्रयास करना शुरू कर देंगे तो सत्र के अंत तक हम ठीक ढंग से बच्चों को नाम से बुला सकेंगे । इस तरह बच्चों में नई ऊर्जा और उत्साह का संचार कर पाएंगे ।

इसी क्रम में हमें बच्चों को सर्जनात्मक माहौल देना जरूरी है जिससे वे समझते हुए सीखने की ओर बढ़ सके । सभी स्कूलों में कुछ ऐसे बच्चे होते हैं जो लीक से हटकर सोचते हैं । उनकी क्षमता का उपयोग किया जाना जरूरी है। हम ऐसे बच्चों को रुचि के अनुरूप रचनात्मक गतिविधियों में शामिल

कर सकते हैं। भाषा में कविता, कहानी, लेखन, वाचन आदि किया जा सकता है। विज्ञान में नए नए प्रयोग किए जा सकते हैं । समाज विज्ञान में वाद विवाद, प्रश्नोत्तरी, निबंध आदि प्रतियोगिताएं आयोजित करवाई जा सकती है। थोड़ा सा प्रयास करके कला क्षेत्र में संगीत, चित्रकारी, शिल्पकारी आदि रचनात्मक कार्य भी करवाए जा सकते हैं। बच्चे हाथ से काम करने में बहुत खुशी महसूस करते हैं और उससे जल्दी सीखने लगते हैं। राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 तो स्कूल में इस प्रकार के कला कार्यों का व्यवस्थित नियोजन करने की सिफारिश करती है ।

मनोविज्ञान भी यही कहता है कि बच्चा जितना क्रिया करके सीखता है उतना पढ़ सुनकर नहीं। इसलिए बच्चों को क्रियाशील बनाना जरूरी है। उन्हें माहौल दिया जाना जरूरी है । सबसे पहले तो उन्हें सोचने, चिंतन करने या कुछ नया करने की आजादी मिलनी चाहिए। बिना मुक्त सोच के कुछ भी नया कर पाना संभव नहीं है। फिर उन्हें गलती करने पर संबल या सलाह देनी चाहिए ना कि दुत्कार। कुछ अच्छा करने पर प्रोत्साहन भी मिलना चाहिए। इससे बच्चे नैसर्गिक रूप से सीखने की ओर बढ़ सकेंगे। अध्यापक इस आलेख और कम से कम इस रचनात्मकता के मुद्दे पर असहमति जता सकते हैं, उनका तर्क हो सकता है कि बच्चे अपने असामान्य विचारों से कक्षा में बाधा डाल सकते हैं। यदि बच्चों को अन्य दिशाओं में सोचने के लिए प्रेरित किया गया तो शिक्षण और अधिक चुनौतीपूर्ण हो जाएगा।

दरअसल ये बातें एकांगी है और ये बातें वही लोग बोलेंगे जो पूरी तैयारी से शिक्षण में नहीं जुड़ते। इस संबंध में एनसीईआरटी की पुस्तक **'सृजनात्मकता के लिए शिक्षा'** का कहना है –इस पर आश्चर्य नहीं होना चाहिए कि जिस शिक्षक ने पर्याप्त तैयारी नहीं की है, वह कभी–कभी उचित कर्म और सुनियोजित निर्देशन के बहाने रचनात्मकता को हतोत्साहित करता है। अध्यापक को इस बात से अवगत कराने की जरूरत है कि बच्चों को सोचने और अपने तरीके से कार्य करने की अनुमति देने में उनका स्वस्थ विकास निहित है। यह धुंए को बाहर फेंकने वाली एक चिमनी और बंद भाप को निकलने के लिए एक वाल्व हो सकती है।

सर्जनात्मक माहौल बनाने में पुस्तकालय की अहम भूमिका है। हम अक्सर यह देखते हैं इसका महत्त्व जितना सिद्धांततः बताया या समझाया जाता है व्यवहार में उतना नहीं माना जाता है। स्कूल का पुस्तकालय या तो बंद ही रहता है व उसके प्रभारी को भी कक्षा शिक्षण में लगा दिया जाता है और खुलता है तो मात्र निःशुल्क पाठ्य पुस्तकों के वितरण हेतु। बरसों प्रयास के बाद भी हमारी स्कूलों में इसकी दशा जस की तस है । इसके पीछे वजह कुछ पूर्वाग्रहों से जुड़ी हैं और कुछ अज्ञानता से । हम यहाँ संक्षेप में इनका जिक्र करना चाहेंगे–

1. एक तो आम जवाब, किताबें फट जाती है, खो जाती हैं । बच्चे लापरवाह हैं। कीमती किताबें हैं, पैसे कौन भरेगा? आदि आदि। इस संबंध में हमारा कहना है कि किताबों का फटना, खोना,इधर–उधर होना सामान्य प्रक्रिया है। एक तय संख्या की किताबें कम हो सकती है। यह नियम सम्मत भी है। इस बात से डरना ठीक नहीं है। जरूरी है किताबों का बच्चों के हाथों में पहुँचना । **भारत में पुस्तकालय के जन्मदाता एस आर रंगनाथन** का कहना था कि सर्वश्रेष्ठ पुस्तकालय वह होता है जिसमें पाठकों के हाथों में किताबें हो ना कि अलमारी में बंद।

2. यह वजह शिक्षकों एवं बच्चों की रुचि से जुड़ी है। इसमें प्रबंधन का यह जुमला होता है कि आज के बच्चे कंप्यूटर और मोबाइल में उलझे रहते हैं उन्हें किताब पढ़ने की फुर्सत नही होती। अलबत्ता वे पुस्तकालय में आते नहीं हैं, आते हैं तो किताबें पढ़ने के लिए नहीं मांगते। इसमें दो बातें हैं । **पहली वजह**, विद्यार्थी जीवन शोध आधारित नहीं होना। किताब का अपना महत्त्व है और बाकी तकनीकी साधनों का अपना। किताबें आज भी पढ़ी जा रही है तथा लिखी जा रही है ।

किताबें ज्ञान का सबसे विश्वसनीय स्रोत है। पाठक अपनी स्मृति के आधार पर खुद तय कर सकते हैं कि उन्हें वर्षों पहले पढ़ी हुई किताब की सामग्री याद है या कल परसों मोबाइल से सुनी देखी कोई कथा बहस याद है । कह सकते हैं कि हमने पहले पढ़ी कहानी–कविता याद है। यकीनन उनका उत्तर पहला ही होगा। किताबें हमारे चित्त का संस्कार करती है। उसमें एक नई ताजगी व ऊर्जा भरती है। किताब पढ़ने के दौरान व पश्चात पाठक नई दुनिया की सैर करता है। उस सैर में वह सवाल–जवाब करता है, चिंतन करता है और अपनी ओर से विमर्श के कई आयाम देखता है । यह सब बिना पुस्तक क्या संभव है? अगर हम जाने–अनजाने बच्चों को इस लाभ से वंचित कर रहे हैं तो ठीक नहीं कर रहे हैं। इसे तत्काल सुधारा जाना चाहिए । बच्चों में किताबों के प्रति रुचि जगाना शिक्षकों का काम है।

अगर बच्चे रुचि नहीं ले रहे हैं तो उसमें दोष शिक्षकों का है ना कि बच्चों का । उन्हें ही इसे दुरुस्त करना है। बच्चों को किताबों का चस्का लगाना है। इस काम के लिए पहल शिक्षकों को करनी होगी। उन्हें स्वयं को पढ़ने की आदत डालनी होगी और वे चाहे कुछ भी मनचाहा विषय चुन सकते हैं लेकिन महीने में कम से कम एक किताब जरूर पढ़नी होगी । किताब को पढ़कर उस पर मनन चिंतन करें साथियों से उस पर विचार विमर्श करें साथ ही कक्षा में, प्रार्थना सभा में, सांस्कृतिक सभा में उस पुस्तक की विशेषताओं पर बात करें। ऐसा करने पर बच्चे खुद संबंधित किताब को पढ़ने के लिए आतुर होंगे और धीरे–धीरे उनमें पढ़ने की आदत विकसित होने लगेगी। यह आदत हमारी शिक्षा की पूर्णता के लिए जरूरी है।

3. यह वजह परीक्षा से जुड़ी है। कहा जाता है कि बच्चे साल भर में कोर्स की पुस्तकें पूरी तरह नहीं पढ़ पाते । फिर इतर पुस्तकें कब पढ़ेंगे और कैसे पढ़ेंगे । इससे उनका परीक्षा परिणाम भी प्रभावित होगा। यह बहाना है पुस्तकालय को बंद रखने का क्योंकि जब बच्चे कोई किताब मन से पढ़ते हैं तो उससे कुछ ना कुछ जरूर सीखते हैं। इससे उनकी पठन क्षमता बढ़ती है। पठन अभ्यास से वे कोर्स की पुस्तकें भी गति के साथ पढ़ सकेंगे और परीक्षा के डर से मुक्त रहकर परीक्षा की तैयारी कर सकेंगे।

4.यह वजह बहुत हल्की है। इसमें कहा जाता है कि जब बच्चे के स्वाध्याय की क्षमता का अलग से आकलन ही नहीं किया जाता तो फिर नियमित रूप से उन पर इतर किताबें पढ़ने का बोझ क्यों डाला जाए । हालांकि एक नीतिगत प्रश्न है कि इसे मूल्यांकन प्रक्रिया में शामिल करना है या नहीं करना और अगर करना है तो

कैसे करना है परंतु इससे फर्क क्या पड़ता है इसे शामिल करें या ना करें। पुस्तक पठन का पुस्तक अपना महत्त्व है। इसलिए स्कूल है तो पुस्तकें तो होगी ही होगी और पुस्तकें होगी तो पठन–पाठन भी होगा नहीं तो स्कूल का होना ही बेमानी है ।

5. यह वजह व्यवहारिक और वाजिब है, कारण बच्चे तय नहीं कर पाते कि कौन सी किताबें पढ़ें और कौन सी ना पढ़े। शिक्षक को बच्चों की थोड़ी मदद करनी है यह तय करने में । उसे पहले खुद पढ़ना होगा । वह स्कूल से सीधा जुड़ा व्यक्ति है इसलिए उसे कुछ शिक्षाशास्त्र की रचनाएं पढ़नी जरूरी है अन्य पुस्तकों के साथ–साथ। कुछ– एक पुस्तकों की सूची इस प्रकार बनाई जा सकती है। तैत्तिरीय उपनिषद की शिक्षावल्ली, गाँधीजी की बुनियादी शिक्षा, गिजुभाई की कहानी कला– बाल मनोविज्ञान, नील की समर हिल, विवेकानंद का शैक्षिक दर्शन, जापानी आत्मकथा तोतो चान आदि। तोतो चान तो बच्चों और बड़े दोनों के लिए उपयोगी किताब है। इससे बच्चे सहज ही सवाल जवाब करने और स्वयं सीखने की ओर बढ़ सकेंगे। शिक्षक इसके द्वारा अपने अनुभवों को दुरुस्त कर सकते हैं। इसका हिंदी अनुवाद उपलब्ध है जो बहुत सरल और सहज भाषा में लिखा गया है। एक एक करके शिक्षक इनको पढ़ेंगे तो स्वयं अपने भीतर एक क्षमता का अनुभव करेंगे। बच्चों की दुनिया की खुरदरी जमीन से जुड़ेंगे अपनी कल्पना शक्ति से शिक्षा में नवाचार करने को प्रेरित होंगे और अपनी शैक्षिक तकनीक को समय के अनुरूप धार दे सकेंगे। उन्हें यह एहसास होगा कि बच्चों का किताब से जुड़ना कितना जरूरी है। अब उन्हें इससे कैसे जोड़ना है इसकी तलाश वे खुद कर लेंगे क्योंकि शिक्षाशास्त्र उन्हें इस तरह की ओर बढ़ने में सदैव मददगार बनता है।

इसकी शुरुआत कुछ यूं की जा सकती है। चंपक, बाल भास्कर, बालहंस, नंदन, चकमक आदि के पुराने अंक उपलब्ध हो सकते हैं इनकी कीमत मामूली होती है । इन्हें खरीद कर बच्चों को निःशुल्क बाँटकर पुस्तकालय को जीवंत किया जा सकता है। ऊपर कुछ व्यावहारिक सुझावों का जिक्र किया है बातें और भी बहुत हो सकती है, तरीके भी बहुत हो सकते हैं । इन सब के बावजूद इसे क्रियाशील बनाना थोड़ा मुश्किल है, मुश्किल से भी ज्यादा आलस्य और प्रमाद जन्य है। अब इस साल इस काम को शुरू करना है। शुभस्य शीघ्रम।

इसी क्रम में महात्मा गाँधी को याद करना जरूरी जान पड़ता है । गाँधी जी ने शिक्षा को 3R तथा 3H की संज्ञा दी थी । 3R से उनका आशय पढ़ना, लिखना और अंक ज्ञान था तथा 3H से उनका आशय हाथ, दिमाग और दिल से था । गाँधीजी के अनुसार शिक्षा का अर्थ बालक के शरीर, मन और आत्मा का सर्वांगीण एवं सर्वोत्कृष्ट विकास करने से है। राष्ट्रीय शिक्षा नीति, 2020 इसी संदर्भ में जीवन कौशल, साक्षरता ज्ञान और नैतिक शिक्षा को स्कूली स्तर पर लागू करने का सुझाव देती है।

हमें स्कूल में पढ़ाई के साथ खेल और पर्यावरण की शिक्षा पर भी ध्यान देना होगा। इस समय खेती और घर के कामकाज में मशीनों ने प्रवेश कर लिया है तो हाथ से काम न तो गाँव में रहा और ना ही शहर में । इसलिए बच्चों को किसी एक खेल में दक्ष करना जरूरी है।

स्कूल में कम से कम एक घंटा खेल के लिए दिया जाना जरूरी है। यह जरूरी नहीं है कि सभी बच्चे किसी टूर्नामेंट में भाग लेवें परंतु सामूहिक खेल, परंपरागत खेल विशेषकर रूमाल झपट्टा,खो–खो, कित–कित घोड़ा जमाल, चिड़िया उड़ आदि खेल खेले जा सकते हैं। इन खेलों के लिए कोई खेल प्रशिक्षक की जरूरत भी नहीं है। सामान्य शिक्षक भी बच्चों को ये खेल खेला सकता है। अगर स्कूल में खेल प्रशिक्षक है तो फिर स्कूल समय से पहले या बाद में कई तरह के खेल खेलाए जा सकते हैं। अब वो जमाना नहीं रहा जब कहते थे–पढ़ोगे लिखोगे तो बनोगे नवाब,खेलोगे कूदोगे तो होगें खराब । खेल गतिविधियों के निरंतर क्रियाशील होने पर बच्चों में अनुशासन का भाव पनपेगा। जो पढ़ाई की बेहतरी के लिए जरूरी है।

बच्चों को खेल के साथ–साथ पेड़ पौधों की सुरक्षा का जिम्मा भी दिया जाना चाहिए साथ ही पेड़ लगाना क्यों जरूरी है इस पर उनसे बात की जानी चाहिए । हमारी कोशिश होनी चाहिए कि बच्चे व शिक्षकों को साल में एक पौधा लगाने का संकल्प लेना ही लेना चाहिए क्योंकि विश्व स्तरीय मूल्य है जो हमारे जीवन को बचाने के लिए बहुत जरूरी है । अगर ऐसा नहीं करेंगे तो आने वाली पीढ़ी शायद खुली हवा में सांस नही ले सकेगी । हमें इस विरासत को, खुद को और भविष्य तीनों को बचाना है तो कम से कम साल में एक पौधा लगाना होगा।

आखिर में हमें यह मानना होगा कि प्रत्येक बच्चा अपनी गति के अनुसार सीखता है। सबकी रुचि, स्वभाव व प्रवृत्ति भिन्न–भिन्न होती है इसलिए कक्षा में शिक्षण के दौरान आपस में तुलना भी ठीक नहीं है। तुलना, प्रतिस्पर्धा, प्रतियोगिता का परिणाम अंततः खराब ही होता है कारण पहला जिसे अच्छा बताया जाता है वह घमंडी हो जाता है और इस चक्कर में वह पढ़ना लिखना छोड़ देता है। हकीकत यह होती है कि उसकी श्रेष्ठता किसी एक –दो क्षेत्रों में है,सब क्षेत्रों में नहीं। फलतः वह अन्य क्षेत्रों में पिछड़ जाता है। दूसरा कमतर आंके जाने वाले बच्चे हीन भावना से ग्रसित हो जाते हैं । इसके चलते उस में नकारात्क भाव जन्म लेने लगता है। राजाराम भादू अपनी पुस्तक 'स्कूल की संस्कृति' में लिखते हैं–

सीखने के दौरान सीखने के आनंद का गायब होना शुरू हो जाता है और ईर्ष्या की भावना में उत्तरोत्तर वृद्धि होती रहती है क्योंकि एक को ही श्रेष्ठ घोषित किया जा सकता है। सर्वश्रेष्ठ होना ही एकमात्र उद्देश्य रह जाता है जो कई बार हिंसात्मक रूप भी ले लेता है। इसी तरह की प्रतिस्पर्धा का माहौल में सहभागिता की संभावना बहुत कम रह जाती है।

हमें सीखने के मामले में न तो होड़ की जरूरत है न तोड़ की और न कर लो दुनिया मुठ्ठी की जल्दबाजी दिखानी है। पढ़ना एक आनंद का भाव है । धीरज का भाव है। इसलिए ट्रिक या उतावल से बचते हुए हमें सदैव बढ़ते रहना है –

शैने: पन्था: शैने: कंथा:
शैने: पर्वत रोहणम
शैने: विद्यारू शैने: वित्तं
पंचैतानि शैने: शैने:

एसोसिएट प्रोफेसर
राजकीय उच्च अध्ययन
शिक्षा संस्थान, बीकानेर
मोबाईल नः 9414031502

शिक्षण में कहानी की सार्थकता

डॉ. दिनेश कुमार गुप्ता

कथा, किस्सा, कहानी, गल्प, आख्यान, उपाख्यान, वृत्त, इति वृत्त, गाथा, वार्ता आदि नामों से हम साहित्य की जिस विधा की ओर संकेत करते हैं वह साहित्य की सभी विधाओं में किसी न किसी रूप में मौजूद रहती है। इसे जीवन की एक घटना या संदर्भ के रूप में भी देखा जा सकता है। कहानी में सामान्यतः छोटे परिदृश्य को व्यक्त किया जाता है । दैनिक जीवन की घटनाओं से सहज जुड़ाव और अन्य विधाओं की तुलना में सरल संरचना कहानी को खास बनाती है । पहले की कहानियों का सीधा संबंध मौखिक भाषा से जुड़ता है, वह कहीं और सुनी जाती थी । इसलिए कहने का अंदाज़ या दास्तान इसे खास बनाती है। कहानी को गल्प (बांग्ला में) या गप्प कहना इस बात को बताता है कि इसका एक ओर बोलने से और दूसरी ओर कल्पना से बहुत गहरा रिश्ता है, परंतु गल्प या कल्पना होते हुए भी उसका पाँव कहीं न कहीं ज़मीन पर रहता है । कहानी किसी घटना का एक तरह का वर्णन है । इसे बयान या इतिहास के रूप में भी देखा जा सकता है । इसी कारण अंग्रेज़ी में इसे 'नरेटिव' कहा जाता है, यानी जो कुछ जीवन में घटा उसे सरल ढंग से कह देना सबसे ज्यादा कहानी के करीब होता है ।

कहानी एक तरह की यात्रा है, ठीक वैसे ही जैसे हमारा जीवन एक यात्रा है । जिस प्रकार सरल से सरल जीवन भी विभिन्न घटनाओं से भरा होता है, उसी प्रकार कहानी की यह यात्रा भी सपाट, शांत या बाधा हीन यात्रा नहीं, बल्कि हलचल और संघर्षों से भरी यात्रा है । यह संघर्ष या द्वंद कहानी को महत्त्वपूर्ण बनाता है । इसे और अच्छे से समझने के लिए हम प्रेमचंद की प्रसिद्ध कहानी 'दो बैलों की कथा' का उदाहरण लेते हैं कल्पना करें कि झूरी के दोनों बैल हीरा और मोती हमेशा झूरी के ही घर पर रहते, अच्छा खाते, सबका स्नेह पाते और खूब मेहनत से खेतों में काम करते और कहानी उनके बूढ़े होने के साथ ख़त्म हो जाती । न तो बैलों को भूखा रहना पड़ता, न सांड से उनकी मुठभेड़ होती और न ही उन्हें कांजी हाउस में बंद होना पड़ता। क्या तब भी हमें यह कहानी अच्छी लगती । असल में कहानी में हम अपने संघर्षों और सपनों को खोजते हैं और कहानी के नायक की विजय में अपनी विजय देखते हैं । हममें से प्रत्येक की जिंदगी एक शानदार कहानी है । जीवन में वे सारे तत्व होते हैं, जिन्हें हम कहानी के तत्वों के रूप में रेखांकित करते हैं । पात्र, कथोपकथन, संवाद, नाटकीयता, चरम उत्कर्ष आदि । कहानी चकित करती है । आगे क्या होगा, पात्र इस परिस्थिति से कैसे निपटेगा ।

यह कुतूहल भाव, यह रोमांच पाठक या श्रोता को कहानी से जोड़ता है । छोटे आकार के कारण कहानी की गति तेज़ होती है । इसमें किसी एक पात्र पर ही फ़ोकस होता है, अन्य पात्र बस उस मुख्य पात्र को सहारा देने के लिए आते हैं । जैसे उपर्युक्त कहानी बैलों की कथा को लेकर आगे बढ़ती है । जब वे गया के घर से भागे थे तो वहाँ क्या हुआ या सांड को उन्होंने सींग मारा था उसका क्या हुआ, कांजी हाउस से जिन जानवरों को आज़ाद किया था उनका क्या हुआ आदि इन प्रश्नों का ज़िक्र कहानी में नहीं है । कहानी किसी घटना की प्रक्रिया की जटिलता और उसके उपाख्यानों और उपकथा वस्तुओं के विवरण की बजाय किसी घटना या अनभुव विशेष पर केंद्रित होती है । अगर संपूर्ण परिस्थितियों का लेखक वर्णन करने लगे तो फिर वह उपन्यास हो जाएगा । कोई भी अनगढ़ ढंग से यह कह सकता है कि उपन्यास का रूप आकार से तय होता है जबकि कहानी का आकार उसके रूप से तय होता है ।

कहानी करती क्या है ?

सवाल यह है कि कहानी की दुनिया के शिक्षण शास्त्र की दुनिया से क्या रिश्ते हैं । दरअसल कथा–यात्रा अनेक अध्ययन संदर्भों को संभव करती है । मनुष्य के बचपन से कहानी का सीधा रिश्ता जुड़ता है । कहानियाँ प्रथम शिक्षक की भूमिका निभाती हैं। ये हमें अनुमान लगाने हेतु प्रोत्साहित करती हैं । अनुमान लगाने की यह योग्यता धीरे–धीरे अन्य विषयों (गणित–विज्ञान आदि) में मदद करने से लेकर निजी जीवन में समस्याओं के हल ढूँढ़ने तक से जुड़ती है । कहानी भाषा निर्माण में सबसे ज्यादा मदद करती है, क्योंकि कहानी अपने संदर्भों के कारण अर्थ का अनुमान लगाने की सुविधा देती है ।

भाषा की क्षमता प्राप्त कर लेने के बाद आगे का बहुत सारा काम आसान हो जाता है । शायद यह भी कहा जा सकता है कि भाषा भी एक तरह की कविता और कहानी है । भाषा भी अपने मन की कहने की कुलबुलाहट, अपने अनुभवों को दूसरों तक अधिक से अधिक पहुँचा पाने की बेचैनी से पैदा हुई होगी। लगभग यही बात कहानी करती है । कहानी में अतीत और भविष्य, कल्पना और यथार्थ, स्मृति और विचार, सच और झूठ आदि इस तरह से घुले–मिले होते हैं कि इनके बीच कोई विभाजन रेखा नहीं खींची जा सकती और अगर खींच दी जाए तो एक अच्छी कहानी बनेगी, इसकी भी गारंटी नहीं ली जा सकती । शायद इसी कारण से कहानी को साहित्य का सबसे स्वाभाविक और अत्यधिक स्वच्छन्द रूप माना जाता है । इसमें दृष्टान्त, चुटकुले, मज़ाक से लेकर जीवन के गंभीरतम पक्ष तक घुले–मिले होते हैं ।

दरअसल हममें से प्रत्येक व्यक्ति रोज़ अनेक कहानियों के बीच से गुज़रता है । इन्हीं घटनाओं, सूचनाओं और दृश्यों को अपने अनभुवों, कल्पनाओं और स्मृतियों से जोड़कर वह एक ऐसा रूप दे देता है जो परिचित होते हुए भी कुछ अनजाना सा, अपना–सा लगने लगता है और हम कहते हैं कि ये तो बड़ी अच्छी कहानी है । कहानी हमारे भीतर निहित विस्मय और कुतूहल के भाव का उपयोग करती है, जिसके कारण विद्यार्थियों की कल्पना शक्ति तेज़ होती है । साथ ही कहानी सहज रूप से हमें ज्ञान से जोड़ती है। घटनाओं के घात–प्रतिघात से पाठकों की

संवेदना और अनुभूति निखरती है, इस प्रकार कहानियाँ हमारी समझ का विकास करती है । इसका एक दूसरा पक्ष यह है कि कहानियाँ रूढ़ मान्यताओं, पक्षपातों, पुराने मूल्यों और पूर्वाग्रहों का भी पोषण करती है । अक्सर राजकुमारी अपनी मुक्ति के लिए किसी राजकुमार का इंतज़ार करती मिलती है। पुरुष बहादुर, मज़बूत और उदात्त गुणों से संपन्न होता है। कुछ जातियों, यहाँ तक कि जानवरों की भी रूढ़ छवि का पुरानी कहानियों में प्रयोग हुआ है । कहानी के इस सीमित परिदृश्य को खासतौर से बाल कहानियों के संदर्भ में बदलना ज़रूरी है । निश्चित रूप से समय के साथ कहानी के रूप में भी बड़ा बदलाव आया है ।

पुरानी कहानी बनाम नयी कहानी

पहले कहानी सुनने–सुनाने की चीज़ होती थी, बाद में वह पढ़ने–पढ़ाने की चीज हो गई, आज के समय की कहानी अनभुव की जटिलताओं को उद्‌घाटित करती है। दरअसल थोड़ा आगे बढ़कर बात करें तो हमारे जीवन में दो चीज़ें बहुत महत्त्व रखती है । एक तो स्मृति और दूसरी भाषा । मनुष्य इसीलिए मनुष्य है, क्योंकि उसके पास मनन करने और याद रखने की क्षमता है । दूसरी ओर वह व्यक्ति कहलाता है, क्योंकि वह स्वयं को, अपने विचारों को अभिव्यक्त करना चाहता है । खुद को प्रकट करने की अद्‌भुत क्षमता रखता है और यह क्षमता उसे भाषा और स्मृति देती है ।

कहानी क्यों ?

दरअसल कहानी क्यों है का जवाब यह हो सकता है कि हम हैं इसलिए कहानी है । हमारे मिथक, हमारी स्मृति, हमारे ज्ञान व्यापार, वर्तमान घटनाओं पर हमारी प्रतिक्रियाएँ ये सब एक विशाल कहानी के अंश हैं, इन्हीं अर्थों में शेक्सपियर इस दुनिया को रंगमंच कहते हैं । हज़ारों सालों से इस रंगमंच की अनंत पटकथाएँ लिखी जा रही हैं, हम सब उस पटकथा में लगातार कुछ जोड़ते–घटाते रहते हैं । 'कमलेश्वर जी' का यह कहना कि "विश्व की समस्त अर्वाचीन, लुप्त–विलुप्त और प्राचीनतम सभ्यताओं के नीचे से यदि कहानियों के आधार स्तम्भ हटा दिए जाएँ तो सारी सभ्यताएं भरभराकर कच्ची मिट्टी की तरह गिर पड़ेंगी । (कमलेश्वर, कथा संस्कृति पृष्ठ संख्या–4)

इस बात की ओर संकेत कर रहा है कि हमारा वजूद इन्हीं कहानियों पर है । हम कहानी में हैं और कहानी हममें है, इसीलिए जब शास्त्र विकसित नहीं हुए थे तब भी कहानी थी। शायद ही कोई ऐसा देश होगा, जहाँ कथा साहित्य न हो और जहाँ स्वाभाविक आनंद पाने के लिए कहानियाँ न कही जाती हो, या फिर न पढ़ी जाती हो । मानवीय सभ्यता से जुड़ा एक वह भी समय था जब हर संध्या भोजन आदि से निवृत्त होकर बच्चों के झुण्ड कहानी किस्सागोई के लिए घर के बड़े–बूढ़ों को घेर लेते थे । देश परदेश में घूमने वाले मुसाफ़िर रात को जब किसी जगह पर रुकते तो एक–दूसरे के साथ बैठकर नयी–नयी कहानियाँ कहते और सुनते थे।

एक समय ऐसा था कि साँझ का झुटपुटा दूर हुआ नहीं कि ढिबरी की मद्धिम तो कभी तेज़ पड़ती लौ के बीच आवाज़ आती– "एक बार की बात है———" इस आवाज़ के साथ ही इर्द–गिर्द बैठे बच्चे, जवान या बूढ़े, सभी के नेत्र विस्फारित से होने लगते, कभी सिकुड़ते तो कभी मिचमिचाते। आँखों के साथ–साथ होठों का खुला रह जाना या फिर गुस्से और क्षोभ से भिंच जाना यह सब भी साथ–साथ चलता । विस्मय, विमुग्धता की यह भावना तब तक चलती रहती जब तक कि आवाज़ न आ जाती कि "लो अब ख़त्म हुई कहानी ।''

आज हम कहानी को गद्य साहित्य की महत्त्वपूर्ण विधा के रूप में पहचानते हैं, पर सच मानें तो लोक जीवन का अभिन्न अंग है कहानी, जिसका जन्म किसी–न–किसी गल्प, देखी–सुनी घटनाओं और कहीं–न–कहीं मन में गहरे पैठी आकांक्षाओं से होता है । हमारी सामाजिक–सांस्कृतिक घटनाएँ, जीवन में हो रही उथल–पुथल, घर–परिवार व कुटुंब की व्यवस्थाएं सभी कहानियों को जन्म देते हैं ।

सच पूछिए तो कहानी मानव जीवन की वृहत्तर सृजनशीलता का अटूट हिस्सा है । उसकी स्वभावगत अकुलाहटों और अपनी अनुभूतियों को अभिव्यक्त करने की स्वभावसिद्ध छटपटाहटों के मूल में ही कहीं न कहीं कहानी छिपी होती है । पर इस बात से कहीं यह आशय न लिया जाए कि कहानी जीवन से दूर हटकर कल्पनाओं के सुन्दर लोक में भ्रमण करती है । कहानी का जीवन के साथ गहरा संबंध है। जैसा कि गिजुभाई बधेका ने कहा है साहित्य , संगीत व कला आदि में आत्मा का प्रतिबिंब है । कहानी लोक जीवन का, लोकात्मा का प्रतिबिंब है । इसका उद्देश्य मानवीय आत्मा की साहित्य – विषयक कला को व्यक्त करना है । संगीत ध्वनि प्रधान कला है; चित्र रूप प्रधान कला है; साहित्य काव्य प्रधान कला है; कहानियाँ जीवन के अनेक रसों का भंडार हैं । विविध रसों के भोक्ता इन रसों का पान करके आनंद व तृप्ति प्राप्त कर सकते हैं । साहित्य का यह रस व भाग कहानी में जितने अधिक परिमाण में प्रकट होता है, उतने ही परिमाण में कहानी कहने का उद्देश्य आनंद प्रदान करना है।''

शिक्षण शास्त्रीय दृष्टि से विचार करके देखें तो कथा–कहानियाँ बच्चों की उदात्त भावनाओं और आकांक्षाओं का जीवनदायी स्रोत हैं। कथा–कहानियों के बिंबों के प्रभाव में बच्चों में उत्पन्न होने वाली सौंदर्य अनुभूतियाँ विचारों के प्रवाह को सक्रिय बनाती हैं, जो मस्तिष्क को सक्रिय कार्य की प्रेरणा देती है । कहानियों के बिंबों के ज़रिए शब्द अपनी सूक्ष्मतम छटाओं के साथ बच्चों के मन में प्रवेश करते हैं और उनके विचारों–भावनाओं की अभिव्यक्ति का सजीव यथार्थ बन जाते हैं । कहानियों के बिंबों से विद्यार्थी सोचना, तर्क करना एवं अमूर्त चिंतन करना सीखते हैं । अच्छाई और बुराई के प्रति अपनी निजी राय बना पाते हैं। कहानियों के संग जीते–चलते वे मस्तिष्क से ही नहीं, बल्कि हृदय से भी संसार को समझने–जानने की कोशिशें करते हैं और अपनी प्रतिक्रिया भी व्यक्त करना सीखते हैं। सदियों से लोग जो कथा–कहानियाँ बनाते आए हैं, उनके बिंब विद्यार्थियों में हर समाज के लोगों की सृजन भावना का, उनकी आकांक्षाओं और आदर्शों का आभास दिलाते हैं।

आप किसी उत्सव में सम्मिलित हुए ?

उत्सव देर रात तक चला । वापसी के लिए जिस वाहन की सुविधा मिली उसकी दशा–दिशा कुछ ऐसी थी कि आपको कई तरह की असुविधाएँ हुई । एक तो रात ऊपर

से घना कोहरा, आपका वाहन खराब हो जाता है । वाहन इस स्थिति में नहीं है कि अब वह आगे बढ़े। आप पैदल चलने की ठान लेते हैं। घर तक पहुँचते–पहुँचते और भी कुछ घटता है। अगले दिन आप अपने मित्रों को आपबीती सुना रहे हैं। क्या आपको अपनी इस आपबीती में किसी कहानी के बनने की संभावनाएँ नज़र आती हैं। हमारे इर्द–गिर्द और खुद हमारे साथ बहुत कुछ घटता रहता है । क्या इस प्रकार की घटना कहानी बन सकती है । सत्य तो यही है कि कहानी के मूल में कोई–न–कोई घटना अवश्य छिपी होती है । दरअसल उस घटना के साथ मानवीय संवेदनाओं अनुभवों के और कितने आयाम किस तरह से आ जुड़ते हैं, कहानी के बनने में यह कहीं अधिक महत्त्वपूर्ण हैं । घटना के वातावरण का सजीव स्पंदन, साथियों का जीवंत संवेदन, उत्सुकता बनाए रखने वाले परस्पर संबंध सूत्र संकेत, समय, आगे–पीछे के अनुभव और स्मृतियाँ ये सभी सर्जना के ताने–बाने घटना को कहानी का आकार देने लगते हैं । हो सकता है कहानी बनते– बनते मूल घटना के मूल तत्व कहीं परोक्ष में चले जाएँ और जीवन के प्रति हमारी सोच, हमारा दर्शन, हमारी निजी विशेषताएँ कहीं अधिक मुखरित हो उठे । कहानी के लिए घटना की दृश्यमानता में हम अपनी कल्पना शामिल करते हैं । कभी–कभी यह भी होता है कि अपने संग घटी घटना के साथ–साथ दूसरों की घटनाएँ भी जुड़ने लगती हैं और इस तरह से अंतहीन कहानियों का सिलसिला चल पड़ता है । कहने के मायने तो यही हुए कि कहानी वह होती है जो कभी ख़त्म नहीं होती । हम उसे अपने तरीके से मोड़ सकते हैं, उसमें नए–नए पात्र जोड़कर एक नयी कहानी रच सकते हैं । विक्रम वैताल और पंचतंत्र की कहानियाँ ऐसी ही हैं । इस दुनिया में बहुत–सी कहानियाँ हैं जितने लोग उतनी कहानियाँ । हर व्यक्ति की अपनी एक कहानी है और उसमें भी हर दिन कुछ–न–कुछ जुड़ता चला जाता है। कई बार घटना या पात्र की अपेक्षा अंचल या क्षेत्र विशेष की भंगिमाएँ ज्यादा मुखर हो जाती हैं । आख्यान या कहानी के इस रूप को आँचलिक कहानी' की संज्ञा दी गई । फणीश्वरनाथ रेणु की अनेक रचनाएँ हमें इस दुनिया से सुन्दर तरीके से रूबरू कराती हैं । क्या हम कहानी पढ़ाते समय बच्चों के मन में उठने वाले उपर्युक्त सूत्रों को पकड़ने की कोशिश करते हैं ।

चलिए चंद्रधर शर्मा गुलेरी कृत एक बहुचर्चित कहानी को पढ़ते हुए देखें ''उसने कहा था'' यह कहानी हमारे सामने एक विस्तृत फलक उपस्थित करती है, जिसमें पात्र, स्थितियाँ और घटनाएँ कहीं से भी कल्पना में गढ़े गए नहीं लगते हैं । इस कहानी में वातावरण बहुत ही महत्त्वपूर्ण है । लेखक ने कहानी की पृष्ठभूमि में वातावरण को बड़े ही सजीव ढंग से तथा उसकी संपूर्णता में उभारा है। समूची कहानी वातावरण के साथ अपने सारे रंगों–रूपों में जीवंत हो उठी है । कहानी का वातावरण चाहे अमृतसर के बंबू कार्ट वालों का घना और अतिव्यस्त मोहल्ला हो, चाहे सर्दी से ठिठुरती–काँपती जर्मनी की युद्धभूमि हो, समूचा वातावरण जीता–जागता हमारे सामने उपस्थित हो उठता है। वार्तालाप और घटनाओं के माध्यम से एक–एक करके कई दृश्य आँखों के सामने से गुजरते चलते हैं। कभी–कभी तो लगने लगता है कि यह प्रेम के उत्कर्षों की कथा है तो कभी लगता है कि जीवन के उच्च आदर्शों से गुंथी कथा है और कभी लगता है कि कहानी इन दोनों में से कुछ भी नहीं, बल्कि आम जीवन की एक सहज–सी घटना का चित्र–भर है जो पाठकों के हृदय पर अमिट प्रभाव छोड़ता है। कहानी का आरंभ बहुत ही आकर्षक है । लेखक किसी भी तरह के तामझाम का सहारा लिए बिना पाठकों को अमृतसर के बंबू कार्ट वालों के भीड़ भरे व्यस्त मोहल्ले में ले जाकर खड़ा कर देता है । 'बड़े–बड़े शहरों के इक्के–गाड़ी वालों की ज़बान के कोड़ों से जिन की पीठ छिल गई है और कान पक गए हैं, उनसे हमारी प्रार्थना है कि अमृतसर के बंबू कार्ट वालों की बोली का मरहम लगावें ।

इस व्यस्त बाज़ार की एक दुकान पर दो बाल पात्र बहुत ही सहज भाव से पाठकों के सामने उभरते हैं । अब इसके बाद की कहानी इन दोनों के वार्तालाप के माध्यम से आगे बढ़ती है। "तेरी कुड़माई हो गई क्या लड़की से पूछना और "धत्" कहकर लड़की का दौड़ जाना कभी तो गुड़िया–गुड्डे के खेल–सा लगता है, कभी निश्छल प्रेम की अनुभूति से मन को सराबोर कर देता है । लड़के को इस धत् की उम्मीद हर बार ही रहती है, पर एक दिन लड़की का अलग से जवाब देना एक अलग तरह का ही मजा पैदा करता है। ''हाँ, हो गई, कल । देखते नहीं यह रेशम से कढ़ा हुआ शालू ।'' लड़की यह कहकर भाग जाती है । लड़की पहले भी भागती थी 'धत्' कहकर और अब भी चली गई है, पर अब जो लड़के पर प्रतिक्रिया होती है वह महसूस करने की बात है । लेखक ने लड़के के हृदय पर पहुँचे आघात और मानसिक स्थिति का चित्रण–देखिए किस खूबसूरती के साथ किया है । 'लड़के ने घर की राह ली । रास्ते में एक लड़के को मोरी में ढकेल दिया, एक छाबड़ी वाले की दिन –भर की कमाई खोई, एक कुत्ते पर पत्थर मारा, सामने नहाकर आती हुई किसी वैष्णवी से टकराकर अंधे की उपाधि पाई । तब कहीं घर पहुँचा ।'

मन की बेचैनी और छटपटाहट का इससे सुन्दर चित्रण और भला कहाँ मिल सकता है, देखिए, पात्र ने कुछ भी नहीं कहा पर उसकी मनःस्थिति उसकी बाह्य शारीरिक क्रियाओं के ज़रिये स्वतः ही उभरकर सामने आ रही है। लड़की की कुड़माई की बात सुनकर लड़के के मन पर पहुँची चोट, लड़की के प्रति उसके मन में उपजे निश्छल प्रेम की बानगी बिना किसी संवाद के ही उद्भूत हो रही है।

मन को पुलकित कर देने वाली तो कभी छटपटाहट से भरी अमृतसर की हर घटना के बाद के समय का संकेत सीधे युद्ध भूमि में जाकर मिलता है । तेरी कुड़माई हो गई क्या' जैसे कोमल संवाद की जगह ले ली अब सैनिकों के वार्तालाप ने । उसी के माध्यम से लेखक ने एक नए बिलकुल विपरीत भाव वाले वातावरण की सर्जना की है । यहाँ भी वातावरण की सृष्टि / रचना वर्णनात्मक शैली में न होकर संकेतात्मक शैली में हुई है । आँखों के सामने बिंब कुछ इस तरह से उभर रहे हैं कि मानो लेखनी नहीं कैमरे से सृजित किया चलचित्र सामने चल रहा है । "राम–राम, यह भी कोई लड़ाई है । दिन –रात खंदकों में बैठे हड्डियाँ अकड़ गई हैं । लुधियाने से दस गुना

जाड़ा और मेह और बर्फ़ ऊपर से । पिंडलियों तक कीचड़ में धँसे हुए हैं ''सूबेदार जी, सच है,'' लहना सिंह बोला– पर करें क्या ,हड्डियों में जाड़ा जो धँस गया है ।"

युद्ध स्थल की खाइयों में ले जाकर पटकता नहीं है लेखक, बल्कि वहीं मानवीय मूल्यों का सूत्र पकड़ा देता है पाठकों के हाथ में, 'सिख तंबाकू नहीं पीते । ''अब कहानी में नाटकीय घटनाओं की शुरुआत होती है पर वह भी बड़ी सहजता के साथ। लपटन साहब के रूप में अफ़सर का प्रवेश, सूबेदार हजारा सिंह का अधिकांश सैनिकों को लेकर खाई से बाहर चले जाना । लपटन साहब द्वारा लहना सिंह को सिगरेट देना और लहना सिंह को सबकुछ समझने में तनिक भी देरी न करना । पाठकों का कौतूहल बढ़ता जा रहा है साँस भी थम–सी रही है । आक्रमण की घटना के बाद तूफ़ान जैसे थम–सा गया है। 'लड़ाई के समय चाँद निकल आया था। ऐसा चाँद जिसके प्रकाश से संस्कृत कवियों का दिया हुआ क्षयी नाम सार्थक होता है और हवा ऐसी चल रही थी जैसे कि कहानी कहने की तकनीक का उत्कर्ष हमें कहानी के अंतिम भाग में दिखाई देता है । लगता है कथा के कुछ सूत्र छूटे हुए हैं और नायक की मनःस्थिति के चित्रण से लेखक इन सूत्रों को जोड़ना चाह रहा है । अब फिर से भूत और वर्तमान दो तरह के बिंब उभरते हैं । " वजीरा सिंह, पानी पिला दे '' लगता है लहना एक साथ दो स्थितियों में जी रहा है । अचेतन मन के माध्यम से चेतन जगत के सभी सूत्र जोड़ दिए हैं लेखक ने । लहना पंजाब के गाँव में आम के पेड़ के नीचे है । उसकी चेतना के गहन तार उसकी अपनी भूमि से जुड़े हैं । कहानी का शिल्प इतनी कसावट के साथ उभारा गया है कि घटनाएँ कहीं भी तितर–बितर नहीं होती और उनकी नाटकीयता में भी किसी तरह का अविश्वास पैदा नहीं करती ।

–प्रवक्ता अग्रवाल महिला शिक्षक प्रशिक्षण महाविद्यालय,गंगापुर सिटी,
सवाई माधोपुर (राज़) 322201
दूरभाष न: 9462607259

सुखद अनुभूति के पल...माननीय शिक्षामंत्री जी के संग

▪ प्रकाश गुंजन

वह शनिवार, 28 मई, 2022 की मधुर स्मृतियां मेरे शिक्षकीय जीवन को सुखद अनुभूति के पल तो दे ही गई, साथ ही साथ एक नई दिशा, नव प्रेरणा, और वत्सल भाव भरे शिक्षाविद्, अर्थशास्त्री, विचारक माननीय शिक्षा मंत्री डॉ. बुलाकी दास जी कल्ला के विशाल, सरल, स्नेही स्वभाव की मधुर स्मृतियां मेरे मन मस्तिष्क पर स्थाई रूप से अंकित कर गई, पल बहुत ही कम थे मगर बहुत ही आकर्षण शक्ति से भरे लहलहाते बाग बगीचे की तरह मधुरता लिए थे। आपने बहुत ही रोचक जीवनोपयोगी सहृदयता करुणामय हृदय से उन पलों में संवाद करते हुए सभी को आराम से, बिना किसी तनाव से अपनी बात को रखने का पूरा अवसर प्रदान किया, माननीय उदयपुर, डूंगरपुर जिले के सभी अधिकारियों के साथ नजदीक बैठकर न केवल बातों को गौर से सुना बल्कि तत्काल ही समाधान भी कर दिया। महात्मा गाँधी राजकीय अंग्रेजी माध्यम विद्यालयों की स्थापना, विज़न, गरीब से गरीब बालकों, हर गाँव ढाणी तक आत्म विश्वास से भरे शिक्षा के वातावण की पहुँच तय करने में मील के पत्थर रूपी प्रयासों की शृंखला में हमारे राजस्थान के यशस्वी मुख्यमंत्री जी की दूरगामी सोच और गरीब आमदनी वाले अभिभावकों के बालक बालिकाओं के लिए श्रेष्ठ आयाम युक्त शिक्षा व्यवस्था अपने –अपने घर आंगन में अंग्रेजी माध्यम के साथ–साथ हिंदी एवं संस्कृत भाषा की सांस्कृतिक प्रवीणता के शानदार प्रयासों को बलवती बनाने में अपनी भूमिका निभाने, सभी को बड़े ही प्यार से समझाते हुए कहा कि आप और हम सभी को मिलकर विवेक से हिंदी के साथ साथ अंग्रेजी माध्यम के रथ रूपी प्रयासों को बलवती बनाना होगा ताकि हमारे प्रदेश के बालक बालिकाओं को भी हर तरफ से आगे बढ़ने के सुखद अवसर मिल सकें। सब पढ़ेंगे सब सीखेंगे हिंदी के साथ यदि अंग्रेजी भाषा तो निश्चित तौर पर भाषा की प्रवीणता प्रवाह एवं आत्मविश्वास बढ़ेगा तो निश्चित ही है कि वे बालक बालिका राष्ट्रीय अंतरराष्ट्रीय स्तर पर राजस्थान ही नहीं बल्कि सम्पूर्ण भारत का मान बढ़ा सकेंगे। जब शिक्षामंत्री जी के स्वागत अभिनन्दन हेतु विभाग के अधिकारी आगे बढ़े तो दृश्य में मानो स्नेह मिलन के मधुर पल सहज महसूस हो गए । उनके वो आत्मीयता से भरे कानों में मीठा मीठा रस घोलते शब्द अभी भी हृदय पटल पर गुंजायमान हो रहे हैं , "चलो मैने आप का बहुमान स्वीकार कर लिया अब आप भी मेरा स्नेह स्वीकार करो। यह स्मृति चित्र संयुक्त निदेशक कार्यालय पर सजाना है, यह सुन्दर साफा आप के लिए ए. डी. ई . ओ. साहब और यह शाल में आपको ही ओढ़ा दूं... डी.ई.ओ. साहब कोई औपचारिकता नहीं, सब कुछ मुस्कुराहट के साथ । ''बच्चों को मीठा खिलाना चाहते हो तो खिलाओ महीने में एक बार क्यों, कई बार। चावल आपके पास, शक्कर आपके पास ओर अब तो माननीय मुख्यमंत्री जी ने सप्ताह में दो बार दूध की व्यवस्था भी कर दी है। बस अच्छा खिलाओ... पूरा खिलाओ... मीठा खिलाओ महान गुणवान, देशभक्त व ज्ञानवान इंसान बनाओ यही तो शिक्षा का प्रसाद है।" लगभग 45 मिनिट का वो मधुर सत्र मीलों लम्बी मधुर यादें और विद्यालयों में अपने शिक्षकों, कार्मिकों, विद्यार्थियों, एस. डी.एम.सी. सदस्यों के साथ तारतम्य स्थापित करने की नई दिशा, तकनीक और वो दूरगामी सोच दे गया। अभिनन्दन एवं आभार ..।. परम स्नेही, सरल स्वभाव के धनी, शिक्षा के मनीषी राजस्थान के मृदु वाणी युक्त महान व्यक्तित्व के मान्यवर शिक्षामंत्री महोदय श्री का।

अतिरिक्त जिला शिक्षा
अधिकारी (माध्यमिक) मुख्यालय डूंगरपुर
मो.नं.94142307347

युवाओं के पथ-प्रदर्शक डॉ.एपीजे अब्दुल कलाम

❖ देवेन्द्रराज सुथार

देश के महान वैज्ञानिक, अभियंता, शिक्षक और भारतीय गणतंत्र के ग्यारहवें राष्ट्रपति मरहूम अवुल पाकीर जैनुआब्दीन अब्दुल कलाम मसऊदी अपनी विद्वता, वैज्ञानिक दृष्टि, दूरदर्शिता, लेखकीय क्षमता और मृदु स्वभाव के कारण देश के सबसे लोकप्रिय राष्ट्रपतियों में से एक थे। तमिलनाडु के एक मछुआरे परिवार से देश के राष्ट्रपति की कुर्सी तक पहुँचने वाले डॉ. कलाम का जीवन परिकथाओं -सा रोमांचक है।वे एक अच्छे संगीतज्ञ और कवि भी थे यह बात कम लोगों को पता है।'अग्नि की उड़ान' उनके द्वारा लिखी गई पुस्तक से ज्ञात होता है कि किस कदर एक मछुआरे का बेटा ट्रेन से फेंके गए अखबारों के बंडल को सही करके वितरण करने के बाद स्कूल जाया करता था। बाल्यकाल में अखबार बांटने वाला वह बच्चा अपने जीवन में ऐसी ऊंचाई छू लेता है कि वो एक दिन दुनिया के समस्त अखबारों की सुर्खियां बटोरता नजर आता है।

डॉ. कलाम का जीवन समाज के अंतिम व्यक्ति के राष्ट्र का प्रथम नागरिक बनने की कहानी है। वे 15 अक्टूबर,1931 को पवित्र रामेश्वरम धाम की माटी में जन्मे, पले, बढ़े और समुद्र-सा विशाल और अगाध व्यक्तित्त्व ग्रहण करते गए। न अभाव उनकी रुकावट बने, न गरीबी उनकी बेड़ियां। बचपन में उनकी नन्हीं तेजस्वी आँखों ने जो स्वप्न देखा, वह निरंतर बड़े से और बड़ा होते हुए इतना बड़ा हो गया कि सारा भारत विकसित राष्ट्रों की प्रथम पंक्ति में अपने दम पर स्वयं को खड़ा देखने लगा और वे उसे साकार करने में न केवल स्वयं जुटे, बल्कि उन्होंने बच्चों और युवा होते तरुणों की करोड़ों आँखों में वह स्वप्न बांट दिया।तेजस्वी मन और 'अग्नि की उड़ान' केवल उनकी किताबों के नाम नहीं हैं, बल्कि यह तो डॉ. कलाम के ही दूसरे नाम हैं, क्योंकि वे केवल लेखक ही नहीं, सर्जक भी थे। रक्षा वैज्ञानिक के रूप में रक्षक भी थे और शिक्षा मनीषी के रूप में शिक्षक भी।

उनके अंदर एक महामानव बसता था।वे गीता को पढ़ते ही नहीं, जीते भी थे। उनके मस्तिष्क में विज्ञान था तो हृदय में कला, उनमें सदैव एक सच्चे मानव को गढ़ते रहती थी। राष्ट्रभक्ति उनकी रगों में रक्त बनकर बसी थी। अपने चिंतन से वे भावी पीढ़ी को स्वप्न दे गए तो वर्तमान पीढ़ी को अभय।वे कहते थे, ''सपने वे नहीं होते जो आप सोने के बाद देखते हैं, सपने वे होते हैं जो आपको सोने नहीं देते।'' इस 'मिसाइल मैन' को भारत सरकार ने 'पद्म भूषण', 'पद्म विभूषण' और 'भारत रत्न' देकर इन सम्मानों की गरिमा ही बढ़ाई। वे कहते थे -' 'मैं शिक्षक हूँ और इसी रूप में पहचाना जाना चाहता हूँ।'' और सचमुच अपनी अंतिम श्वास लेते समय वे विद्यार्थियों के बीच ही तो थे एक शिक्षक के रूप में।वे हमारी आँखों में आंसू नहीं, स्वप्न देखना चाहते थे। सचमुच डॉ. एपीजे अब्दुल कलाम जैसा व्यक्तित्व का इस धरती पर जन्म लेना भारत के लिए गौरव की बात है। एक बार डॉ. कलाम जब स्कूल के बच्चों को लेक्चर दे रहे थे तभी बिजली में कुछ गड़बड़ी हो गयी। डॉ. कलाम उठे और सीधा बच्चों के बीच चले गए और उन्हें घेर कर खड़े हो जाने के लिए कहा। इस तरह से उन्होंने लगभग चार सौ बच्चों के साथ बिना माइक के संवाद किया। राष्ट्रपति बनने के कुछ दिन बाद वो किसी इवेंट में शरीक होने केरल राजभवन त्रिवेंद्रम गए। उनके पास अपनी तरफ से किन्हीं दो लोगों को बुलाने का अधिकार था और आप जानकर हैरान होंगे कि उन्होंने किसे बुलाया - एक मोची और एक छोटे से होटल के मालिक को।दरअसल, डॉ. कलाम बतौर वैज्ञानिक काफी समय त्रिवेंद्रम में रहे थे, और तभी से वे इन लोगों को जानते थे और किसी नेता या सेलेब्रिटी को बुलाने की बजाय उन्होंने आम लोगों को महत्व दिया।

जब कोई राष्ट्रपति बन जाता है तो सरकार उसकी सारी जरूरतों का ध्यान रखती है, पद से हटने के बाद भी।इसलिए डॉ. कलाम ने अपनी सारी सेविंग्स 'प्रोवाइडिंग अर्बन एमिनिटीज इन रूरल एरियाज' के लिए दान कर दी। जब डॉ. कलाम डी.आर.डी.ओ. में थे तब उन्हें एक कॉलेज इवेंट के लिए बतौर मुख्य अतिथि के रूप में आमंत्रित किया गया था। लेकिन डॉ. कलाम रात में ही आयोजन स्थल का चक्कर लगाने पहुँच गए, वहाँ जाकर उन्होंने कहा कि वो उन लोगों से मिलना चाहते हैं जो पर्दे के पीछे रहकर इस आयोजन को सफल बनाने में लगे हैं। 27 जुलाई, 2015 की शाम को भारत माता का यह महान सपूत उसकी गोद में सदा के लिए सो जाने के लिए हमसे विदा ले गया।विश्व ने एक महान वैज्ञानिक को खोया।देश ने अपने पूर्व राष्ट्रपति को तो खोया ही, पर साथ ही करोड़ों बच्चों का भी उनके प्यारे 'काका कलाम' से बिछोह था यह।

कलाम का मानना था कि युवा पीढ़ी ही देश की असली पूंजी है।अत: वे युवाओं के बूते देश को विकसित बनाने के प्रति संकल्पित थे। उन्होंने देश को विकसित बनाने के सपने को साकार करने के लिए कई जरूरी चीजों के बारे में 'इंडिया विज़न 2020' के नाम से डॉक्यूमेंट में जानकारी दी थी। बाद में उन्होंने 'इंडिया 2020, विजन फॉर द न्यू मिलेनियम' नाम से इस पर किताब भी लिखी।कलाम साहब ने 2020 तक भारत को विकसित बनाने के लिए जिन पाँच अहम बातों पर जोर दिया था उनमें कृषि एवं फूड प्रोसेसिंग, इंफ्रास्ट्रक्चर, शिक्षा और स्वास्थ्य, इंफॉर्मेशन एंड कम्युनिकेशन टेक्नोलॉजी और शिक्षा के क्षेत्र में ई-गवर्नेंस को बढ़ावा देने के साथ ही न्यूक्लियर टेक्नोलॉजी का विकास शामिल था।वे देश में खेती और फूड प्रोसेसिंग का उत्पादन दोगुना करने, विद्युतीकरण को गांवों तक ले जाने और सोलर पावर को बढ़ाने, अशिक्षा को खत्म करने, सामाजिक सुरक्षा और लोगों को स्वास्थ्य संबंधी सुविधा, आसानी से उपलब्ध कराने, टेलीकम्युनिकेशन और टेलीमेडिसिन जैसी टेक्नॉलोजीज को बढ़ावा देने को भारत के विकसित बनने के लिए अनिवार्य मानते थे।

आज सरकार को इन पांचों बातों पर काम करने की जरूरत है।यह न केवल कलाम साहब के स्वप्न को साकार करने के लिए जरूरी है, बल्कि देश के नागरिकों को एक समृद्ध एवं खुशहाल जीवन उपलब्ध कराने के लिए भी आवश्यक है। यह बेहद चिंताजनक है कि कलाम साहब के भरोसे वाली युवा पीढ़ी देश के विकास में अपना योगदान देने के बजाय भटकाव की ओर अग्रसर हो रही है।

इसलिए युवा ऊर्जा के संतुलित उपयोग का विषय सरकार की चिंताओं में अग्रणी होना चाहिए। यदि हम समय रहते युवा शक्ति का सार्थक उपयोग विज्ञान, अनुसंधान और तकनीक के क्षेत्र में करने में सफल हो जाते है तो भारत को विकसित होने से कोई रोक नहीं सकता।

-गाँधी चौक, आतमणावास,
बागरा, जिला-जालोर,
राजस्थान।343025
मो.- 8107177196

आदेश परिपत्र-जुलाई 2022

1. आय-व्ययक अनुमान वर्ष 2022-23 में किए गए योजनावार प्रावधानों के प्रभावी क्रियान्वयन हेतु दिशा निर्देश ।
2. विद्यालयों में विद्यार्थियों को वाहनों द्वारा लाने-ले जाने के संबंध में
3. महिला गरिमा हेल्पलाईन नम्बर 1090 का प्रचार-प्रसार करने बाबत्
4. नामांकन वृद्धि, अनामांकित एवं ड्रॉप आउट बच्चों एवं प्रवासी श्रमिकों के बच्चों को विद्यालय से जोड़ने के साथ-साथ बेटी बचाओ बेटी पढ़ाओ की थीम को ध्यान में रखते हुये आयोजित किये जाने वाले प्रवेशोत्सव अभियानके विस्तृत दिशा-निर्देश।

1 आय-व्ययक अनुमान वर्ष 2022-23 में किए गए योजनावार प्रावधानों के प्रभावी क्रियान्वयन हेतु दिशा निर्देश।

- कार्यालय निदेशक, माध्यमिक शिक्षा राजस्थान, बीकानेर
- क्रमांक:शिविरा-माध्य/योजना-4/23806/2022-23 दिनांक-09.05.2022
- परिपत्र -विषय-आय व्ययक अनुमान वर्ष 2022-23 में किए गए योजनावार प्रावधानों के प्रभावी क्रियान्वयन हेतु दिशा निर्देश।

प्रत्येक वर्ष की भांति वार्षिक योजना 2022-23 से सम्बन्धित राज्य निधि तथा केन्द्रीय सहायता योजना के वित्तीय एवं भौतिक लक्ष्यों की शत-प्रतिशत उपलब्धियां अर्जित करने हेतु योजनागत आवंटन की प्रगति का नियमित एवं प्रभावी पर्यवेक्षण आवश्यक है। इस संबंध में निम्नांकित दिशा-निर्देश की पालना आवश्यक रूप से सुनिश्चित की जावे-

1. अपने क्षेत्राधीन कार्यालयों/विद्यालयों के आप नियंत्रक होने के कारण सामान्य वित्तीय एवं लेखा नियमों के अन्तर्गत आपका यह दायित्व है कि आवंटित बजट के विरूद्ध वित्तीय एवं भौतिक लक्ष्यों की शत-प्रतिशत उपलब्धि अर्जित हो।
2. मासिक/त्रैमासिक व्यय विवरण निर्धारित प्रपत्रों में सम्बन्धित माह की 02 तारीख तक जिला कार्यालयों से अनिवार्य रूप से प्राप्त कर संकलित सूचना 04 तारीख तक अधोहस्ताक्षरकर्ता को भिजवाएंगे।
3. यदि स्वीकृत/आवंटित राशि के विरूद्ध व्यय में कमी अथवा आधिक्य हो तो तत्काल उचित कार्यवाही करावें तथा वित्तीय एवं भौतिक लक्ष्यों की समीक्षा समय-समय पर आप स्वयं व्यक्तिगत ध्यान देकर करावें।
4. वर्ष 2022-23 के लिए राज्य निधि तथा केन्द्रीय सहायता योजनान्तर्गत स्वीकृत प्रावधान के शत-प्रतिशत उपयोग को सुनिश्चित करने हेतु अभी से आवश्यक कार्य योजना बनाकर कार्यवाही की जानी है। अतः इसे आप गम्भीरता से लेते हुए तत्काल आवश्यक कार्यवाही सम्पादित करें।
5. मण्डल अधिकारी स्वयं राज्य निधि तथा केन्द्रिय सहायता योजना व्यय की समीक्षा में लेखा कार्मिक को शामिल करते हुए अधीनस्थ कार्यालयों से व्यय की समीक्षा करने के पश्चात निदेशालय में समीक्षा करवाएंगे।
6. यह सुनिश्चित करें कि समीक्षा बैठक में व्यय संबंधी संकलित सूचनाएं पूर्ण एवं IFMS से मिलान शुदा प्रस्तुत की जावे। समीक्षा में संयुक्त निदेशक कार्यालय के प्रभारी अधिकारी एवं सम्बन्धित कर्मचारी स्वयं उपस्थित होंगे।
7. मुख्य जिला शिक्षा अधिकारी का यह दायित्व रहेगा कि अपने अधीन जिला शिक्षा अधिकारी (माध्यमिक) मुख्यालय से मासिक/त्रैमासिक व्यय की सूचना संकलित कर संयुक्त निदेशक स्कूल शिक्षा को प्रत्येक माह की 02 तारीख तक आवश्यक रूप से प्रस्तुत करेंगे। संयुक्त निदेशक/जिला शिक्षा अधिकारी (माध्यमिक) मुख्यालय कार्यालयों में पृथक से आयोजना की मोनिटरिंग हेतु गठित प्रकोष्ठ के प्रबोधन का दायित्व सहायक निदेशक/अतिरिक्त जिला शिक्षा अधिकारी द्वारा किया जावेगा। उन्हें राज्य निधि तथा केन्द्रीय सहायता योजनाओं की प्रगति की सूचना (भौतिक एवं वित्तीय) भिजवाने हेतु अधिकृत पालना से अवगत करावें, साथ ही प्रकोष्ठ में कार्यरत अधिकारियों एवं कर्मचारियों के मोबाइल नम्बर की सूचना भी इस कार्यालय को अवगत करायेंगे।

यहाँ यह भी उल्लेखनीय है कि राज्य निधि तथा केन्द्रीय सहायता योजना मद के व्यय की समीक्षा प्रत्येक माह अतिरिक्त मुख्य सचिव, स्कूल शिक्षा स्तर पर की जाती है। अतः निर्देशित किया जाता है परिपत्र के बिन्दू संख्या-6 व 7 की पालना कड़ाई से की जावे एवं अपने स्तर पर भी प्रभावी प्रबोधन करें।

उक्त निर्देशों की पालना सुनिश्चित करें ताकि वार्षिक योजना 2022-23 का क्रियान्वयन सुचारू रूप से हो सके तथा योजना में वर्णित सम्पूर्ण उद्देश्य एवं लक्ष्य समय पर प्राप्त किए जा सके।

(गौरव अग्रवाल) आई.ए.एस. निदेशक माध्यमिक शिक्षा राजस्थान, बीकानेर।

2. विद्यालयों में विद्यार्थियों को वाहनों द्वारा लाने-ले जाने के संबंध में

- कार्यालय - निदेशक माध्यमिक शिक्षा राजस्थान, बीकानेर।
- क्रमांक-शिविरा/माध्य/मा-स/बालवाहिनीयोजना (16)/22478/2007-17/151दिनांक:09.05.2022

  समस्त मुख्य जिला शिक्षा अधिकारी एवं पदेन जिला परियोजना समन्वयक समग्र शिक्षा।

विषय- विद्यालयों में विद्यार्थियों को वाहनों द्वारा लाने-ले जाने के संबंध में दिशानिर्देशों की पालना करवाने बाबत

प्रसंग-परिवहन व सुरक्षा विभाग का पत्रांक : प22 (108) परि/प्रवर्तन/स.जा.अ./2020/3736 दिनांक-25.02.2022

संदर्भ- कार्यालय द्वारा जारी दिशा-निर्देश क्रमांकः शिविरा /माध्य /पीएसपी/बालवाहिनी/निर्देश/2019-20 दिनांक-06.03.2019 एवं समसंख्यक परिपत्र क्रमांकः शिविरा-माध्य/मा-स/ सड़क सुरक्षा/ 22418/2015-19/273 दिनांक : 30.04.2019

शैक्षणिक संस्थाओं के विद्यार्थियों को सुरक्षित व सुविधाजनक रूप से लाने-ले जाने के संबंध में परिवहन व

सुरक्षा विभाग जयपुर के कार्यालय आदेश क्रमांक 23/2017 दिनांक 29.06.2017 के क्रम में उक्त विभाग के पत्रांक : प-22 (108) परि / प्रवर्तन/ स.जा.अ./ 2020/ 3736 दिनांक - 25.02.2022 के नवीन निर्देशानुसार पूर्व में जारी दिशा-निर्देश क्रमांक : शिविरा / माध्य / पीएसपी / बालवाहिनी / निर्देश / 2019-20 दिनांक: 06.03.2019 एवं परिपत्र क्रमांक : शिविरा-माध्य/मा-स/ सड़क सुरक्षा/22418/2015-19/273 दिनांक : 30.04.2019 की ओर ध्यान आकृष्ट करते हुए पुनः निम्नानुसार निर्देश जारी किए जाते हैं :-

1. जिला कलक्टर की अध्यक्षता में गठित कमेटी द्वारा बाल वाहिनी के संबंध में नियमित मॉनिटरिंग की जावे।
2. बाल वाहिनियों के सभी वाहन चालकों का पुलिस वेरिफिकेशन करवाया जावे एवं क्षमता से अधिक बच्चों को नहीं बैठाया जावे। संस्था द्वारा चालक का परिचय-पत्र भी जारी किया जाए जिसे चालक द्वारा ड्यूटी के समय अनिवार्यतः लगाया जावें।
3. प्रत्येक बाल वाहिनी के बाहर की ओर दोनों तरफ विद्यालय का नाम, बस चालक का नाम, केयर टेकर का नाम एवं मोबाइल नम्बर एवं चाइल्ड हैल्प नंबर 1098 बस के अंदर अनिवार्यतः अंकित किया जाए।
4. विद्यालय क्षेत्र के थाना अधिकारी एवं बीट कॉंस्टेबल के नाम व मोबाइल नंबर की जानकारी प्रत्येक विद्यालय द्वारा नोटिस बोर्ड पर प्रदर्शित करें।
5. विद्यालय परिसर के भीतर वाहनों का पार्किंग स्थल सुनिश्चित करें।
6. बाल वाहिनी के वाहन चालक/कंडक्टर के पास ड्राईविंग लाईसेंस आवश्यक रूप से हो।
7. बाल वाहिनी में चालक के साथ एक केयर टेकर की व्यवस्था करावें जो बच्चों को बाल वाहिनी में चढ़ाने, उतारने, सड़क पार करवाने आदि का कार्य करे।
8. बाल वाहिनी की खिड़कियों के दोनों तरफ कांच के साथ -साथ ग्रिल अनिवार्यतः लगी हो।
9. बाल वाहिनी में प्राथमिक उपचार पेटी एवं अग्निशमन यंत्र की उपलब्धता सुनिश्चित करें।
10. प्रत्येक बाल वाहिनी में जीपीएस अनिवार्यतः लगाया जावे।
11. प्रत्येक बाल वाहिनी में स्पीड गवर्नर अनिवार्यतः लगाया जावे।
12. बाल वाहिनी के अलावा अन्य किसी निजी वाहन द्वारा बालकों को सामुहिक रूप से परिवहन के लिए अधिकृत नहीं किया जाए। ऐसा पाए जाने पर समस्त जिम्मेदारी संबंधित विद्यालय की होगी।
13. यातायात पुलिस को विद्यालय के खुलने एवं छुट्टी होने के समय यातायात नियंत्रण हेतु उपस्थित रहने के निर्देश प्रदान करें।
14. प्रत्येक विद्यालय का प्रबंधन बाल वाहिनियों के फिटनेस सर्टिफिकेट को अद्यतन करावे एवं वाहन चालक को निर्देशित करें कि वाहन की नियमित जाँच उपरान्त ही बच्चों को वाहन में बैठाएं।
15. समय-समय पर बच्चों की सुरक्षा की दृष्टि से यातायात नियमों से संबंधित कार्यशाला का आयोजन किया जाए व जागरूकता अभियान चलाया जाए।
16. विद्यालय स्तरीय प्रबंधन समिति एवं 05 (पांच) अभिभावकों को शामिल करते हुए विद्यालय स्तरीय यातायात समिति का गठन किया जावे जो वाहन चालकों के प्रमाण पत्रों (बीमा, प्रदूषण जाँच आदि) एवं बाल वाहिनी की सुरक्षा निर्देशों की पालना का नियमित निरीक्षण करें।
17. उक्त दस्तावेजों की जाँच प्रतिवर्ष अनिवार्यतः करवाई जाए एवं यदि वाहन अनुबंधित करना हो तो उक्त शर्तों को पूर्ण करने वाले वाहन ही अनुबंधित किए जावें।

इस संबंध में आपको निर्देशित किया जाता है कि आप अपने अधीनस्थ संचालित समस्त विद्यालयों से इस आशय का प्रमाण-पत्र लेवें कि विद्यालय द्वारा इस पत्र में वर्णित बिन्दु संख्या 01 से 17 तक के समस्त दिशा निर्देशों की पालना की जा रही है। विद्यालयों से प्राप्त प्रमाण-पत्रों के आधार पर आप 15 दिवस में यह प्रमाण-पत्र इस कार्यालय को प्रस्तुत करेंगे कि उनके जिले में संचालित समस्त विद्यालयों द्वारा उक्त बिन्दुओं की पालना कर ली गई है।

(गौरव अग्रवाल) आई.ए.एस. निदेशक माध्यमिक शिक्षा राजस्थान, बीकानेर।

---

3. महिला गरिमा हेल्पलाईन नम्बर 1090 का प्रचार-प्रसार करने बाबत्

- कार्यालय निदेशक, माध्यमिक शिक्षा राजस्थान, बीकानेर।
- क्रमांक : शिविरा / माध्य / मा.स / बाल संरक्षण / (18)/ 2016 / 434 /दिनांक : 20.06.2022
- समस्त मुख्य जिला शिक्षा अधिकारी एवं पदेन जिला परियोजना समन्वयक समग्र शिक्षा।
- विषय- महिला गरिमा हेल्पलाइन नम्बर 1090 का प्रचार-प्रसार करने बाबत् ।
- प्रसंग- अतिरिक्त महानिदेशक पुलिस राजस्थान, जयपुर का पत्रांक : व-15( )महिला शक्ति/ कम्यु.पु. /2019/1241 दिनांक : 03.06.2022

उपर्युक्त विषयान्तर्गत एवं प्रसंगानुसार पत्र के क्रम में लेख है कि महिला गरिमा हेल्पलाइन 1090 पर महिला अत्याचार की सूचनाओं के अतिरिक्त महिला आत्मरक्षा प्रशिक्षण योजनान्तर्गत आत्मरक्षा प्रशिक्षण प्राप्त करने के लिए पंजीकरण भी कराया जा सकता है।

अतः महिला आत्मरक्षा प्रशिक्षण योजनान्तर्गत क्षेत्राधिकार के विद्यालय में अधिक से अधिक स्कूली छात्राओं को आत्मरक्षा पंजीकरण हेतु एवं महिला गरिमा हेल्पलाइन नम्बर 1090 की सुविधा के बारे में अधिकाधिक स्कूली बालिकाओं/महिलाओं को जागरूक करने हेतु प्रार्थना-सभा व अन्य माध्यमों से प्रचार-प्रसार किया जाना सुनिश्चित करें।

(रमेश कुमार हर्ष),
उपनिदेशक (माध्यमिक), माध्यमिक शिक्षा राजस्थान, बीकानेर।

4. नामांकन वृद्धि, अनामांकित एवं ड्रॉप आउट बच्चों एवं प्रवासी श्रमिकों के बच्चों को विद्यालय से जोड़ने के साथ-साथ बेटी बचाओ बेटी पढ़ाओ की थीम को ध्यान में रखते हुये आयोजित किये जाने वाले प्रवेशोत्सव अभियानके विस्तृत दिशा-निर्देश।

- राजस्थान स्कूल शिक्षा परिषद चतुर्थ तल, ब्लॉक 5, डॉ. एस. राधाकृष्णन् शिक्षा संकुल परिसर, जवाहर नेहरु मार्ग, जयपुर-302017
- क्रमांक-रास्कूशिप/जय/वैशि/प्रवेशो./पीडीटी-।।।/2022-23/2392
  दिनांक : 23.06.2022

विषयः- नामांकन वृद्धि, अनामांकित एवं ड्रॉप आउट बच्चों एवं प्रवासी श्रमिकों के बच्चों को विद्यालय से जोड़ने के साथ-साथ बेटी बचाओ बेटी पढ़ाओ की थीम को ध्यान में रखते हुये आयोजित किये जाने वाले प्रवेशोत्सव अभियान के विस्तृत दिशा-निर्देश।

उपर्युक्त विषयान्र्तगत लेख है कि राज्य में 3 वर्ष से 18 वर्ष तक के समस्त बालक-बालिकाओं को चिन्हित कर उनकी आयु अनुरूप कक्षा में प्रवेशित कर उन्हें आंगनबाड़ी एवं विद्यालयों से जोड़ा जाना है। इसके लिये

1. निदेशक, माध्यमिक/ प्रारम्भिक शिक्षा, राजस्थान, बीकानेर।
2. निदेशक, महिला एवं बाल विकास विभाग, जयपुर।
3. जिला कलेक्टर, समस्त जिले।
4. समस्त मुख्य कार्यकारी अधिकारी, जिला परिषद्।
5. संयुक्त निदेशक, समस्त संभाग।
6. मुख्य जिला शिक्षा अधिकारी, समस्त जिले।
7. जिला शिक्षा अधिकारी, माध्यमिक/प्रारम्भिक शिक्षा, समस्त जिले।
8. अति0 जिला परियोजना समन्वयक समस्त जिले।

विस्तृत दिशा-निर्देश जारी करते हुये निर्देशित किया जाता है कि संलग्न दिशा-निर्देशों के अनुरूप अपने अधीनस्थ समस्त अधिकारियों को निर्देशित करें कि वे नामांकन वृद्धि, अनामांकित एवं ड्रॉप आउट बच्चों एवं प्रवासी श्रमिकों के बच्चों को विद्यालय से जोड़ने के साथ-साथ कन्या शिक्षा को बढ़ावा देने हेतु''बेटी बचाओ बेटी पढ़ाओ'' की विस्तृत कार्ययोजना बनाकर प्रवेशोत्सव कार्यक्रम के दौरान हाउस होल्ड सर्वे कर शिक्षा से वंचित बच्चों को चिन्हित कर विद्यालय से जोड़कर शाला दर्पण के CRC मॉड्यूल पर प्रविष्टि करवायी जानी सुनिश्चित करायें।

शिक्षा विभाग द्वारा जारी किये गये आदेशानुसार जून माह में विद्यालय खुलने के प्रथम दिवस से प्रवेशोत्सव कार्यक्रम का संचालन किया जाना है। इसके अन्तर्गत प्रथम दिवस से शिक्षकों के माध्यम से विद्यालय परिक्षेत्र में घर-घर जाकर (हाऊस होल्ड सर्वे) किया जाना है। हाऊस होल्ड सर्वे उपरान्त चिन्हित बच्चों एवं विद्यालय में पूर्व से नामांकित विद्यार्थियों का ठहराव सुनिश्चित करने हेतु प्रवेशोत्सव अभियान चलाते हुये शिक्षा विभाग की विभिन्न लाभकारी योजनाओं/गतिविधियों/कार्यक्रमों से अभिभावकों / आमजन को अवगत कराते हुये अधिकाधिक प्रचार-प्रसार करते हुये नामांकन करवाना सुनिश्चित करें।

प्रवेशोत्सव अभियान के दौरान विद्यालय परिक्षेत्र के ऐसे बच्चे जो विद्यालय से जुड़ने से वंचित रह गये हैं, के लिये पुनः कार्ययोजना तैयार कर माह अगस्त तक पुनः सर्वे कर शत-प्रतिशत लक्ष्य प्राप्त किया जाये ताकि अधिकाधिक पंचायतों को उजियारी पंचायत घोषित किया जा सके। प्रवेशोत्सव अभियान का तिथिवार विवरण निम्नानुसार है -

प्रवेशोत्सव का प्रथम चरण			
क्र0स0	कार्य प्रक्रिया		दिनांक
1	हाऊस होल्ड सर्वे / बच्चों का चिन्हीकरण	-	24 जून से 30 जून, 2022
2	नामांकन अभियान (CRC मॉड्यूल में प्रविष्टि)	-	01 जुलाई से 16 जुलाई, 2022

प्रवेशोत्सव का द्वितीय चरण			
3	शेष रहे बच्चों के चिह्नीकरण हेतु पुनः हाऊस होल्ड सर्वे	-	24 जुलाई से 31 जुलाई, 2022
4	नामांकन अभियान (CRC मॉड्यूल में प्रविष्टि)	-	01अगस्त से 16अगस्त, 2022

संलग्न दिशा-निर्देश अनुरूप कार्ययोजना बनाकर यह सुनिश्चित किया जावे कि आंगनबाड़ी एवं विद्यालय जाने योग्य आयु का कोई भी बालक-बालिका अनामांकित न रहे। साथ ही विद्यालय स्तर पर 3 वर्ष से 18 वर्ष तक के सभी बालक-बालिकाओं का रिकॉर्ड संधारित किया जाये।

संलग्नः- उपरोक्तानुसार

(पवन कुमार गोयल)
अतिरिक्त मुख्य सचिव,स्कूल शिक्षा

प्रवेशोत्सव अभियान के सम्बन्ध में विस्तृत दिशा–निर्देश सत्र

निःशुल्क एवं अनिवार्य बाल शिक्षा का अधिकार अधिनियम 2009 के प्रावधानों को ध्यान में रखते हुए शिक्षा से जुड़ी प्राथमिक आवश्यकताओं यथा विद्यालय की पहुंच तथा नामांकन के लक्ष्यों को काफी हद तक राज्य सरकार एवं भारत सरकार के मार्गदर्शन में शिक्षा विभाग द्वारा प्राप्त कर लिया गया है, लेकिन अभी भी बहुत से बच्चे ऐसे हैं, जो विभिन्न कारणों से विद्यालय से नहीं जुड़ पाते हैं अथवा कतिपय कारणों से विद्यालयों में उनका ठहराव नियमित नहीं हो पाता है। ऐसे सभी बच्चों को विद्यालयों से जोड़ने एवं पूर्व प्राथमिक से उच्च माध्यमिक स्तर की अनिवार्य शिक्षा उपलब्ध करवाने हेतु शिक्षा विभाग प्रतिबद्ध है।

3 वर्ष से 18 वर्ष के समस्त बालक-बालिकाओं को नामांकित करने के साथ ही उनका विद्यालय में ठहराव सुनिश्चित किया जाना भी महत्त्वपूर्ण है। इस उद्देश्य की प्राप्ति के लिए शिक्षा विभाग के साथ-साथ ग्रामीण विकास एवं पंचायती राज विभाग, महिला एवं बाल विकास विभाग तथा अन्य सम्बन्धित विभागों का योगदान भी महत्त्वपूर्ण रहा है।

शत-प्रतिशत नामांकन, ठहराव एवं शून्य ड्रॉप आउट वाली ग्राम पंचायतों को ''उजियारी पंचायत'' के रूप में चिन्हित किया जायेगा।

सत्र 2022-23 में प्रवेशोत्सव अभियान अन्तर्गत हाउस होल्ड सर्वे के दौरान गत सत्र में संधारित रिकॉर्ड का अपडेशन किया जाकर इस वर्ष 3 वर्ष की आयु प्राप्त समस्त बच्चों को आंगनबाड़ियों में नामांकित किया जाना है। 3 वर्ष से 18 वर्ष के समस्त बच्चों को चिन्हित किया जाकर 3 से 5 वर्ष आयुवर्ग के बच्चों को आंगनबाड़ियों एवं 5 से 18 वर्ष आयुवर्ग के बच्चों को विद्यालयों में नामांकित किये जाने हेतु समस्त कार्यालयों एवं विद्यालयों द्वारा निम्नलिखित महत्वपूर्ण कार्य किये जाने आवश्यक है-

1. 3 वर्ष से 18वर्ष आयुवर्ग के बालक/बालिकाओं की पहचान की जाकर रिकॉर्ड संधारित किया जाना एवं विगत वर्ष के सर्वे रिकॉर्ड का अपडेशन किया जाना।
2. चिन्हित बालक-बालिकाओं को आयु अनुरूप कक्षाओं में प्रवेशित किया जाकर शालादर्पण के सीआरसी मॉड्यूल पर प्रविष्टि करना।
3. 3 वर्ष से 18 वर्ष के बालक-बालिकाओं को विद्यालयों से जोड़ने के लिये ग्रामीण क्षेत्र में पीईईओ (सीआरसी) स्तर पर एवं शहरी क्षेत्र मेंयूसीईईओ स्तर पर कार्ययोजना बनाकर हाउस होल्ड सर्वे के लिये निर्धारित परिशिष्ट-1 प्रपत्रानुसार चिन्हित करना एवं चिन्हित समस्त बच्चों के विद्यालयों से नहीं जुड़ पाने अथवा ड्रॉप आउट होने के कारणों का पता लगाकर उसी अनुसार कार्ययोजना बनाकर ऐसे बालक-बालिकाओं को विद्यालय से जोड़ा जाना।
4. समस्त अभिभावकों/ग्रामवासियों/स्थानीय निवासियों को बालक-बालिकाओं हेतु शिक्षण एवं प्रोत्साहन से सम्बन्धित विभिन्न विभागीय योजनाओं की जानकारी उपलब्ध कराना।
5. ग्रामीण विकास एवं पंचायतीराज विभाग द्वारा ग्राम सभा में प्रवेशोत्सव अभियान का आयोजन कर बेटी बचाओ बेटी पढ़ाओ को अनिवार्य एजेण्डे के रूप में शामिल करें। साथ ही बालिका शिक्षा को बढ़ावा देने हेतु बालिकाओं को शिक्षा से जोड़ने एवं उनका ठहराव सुनिश्चित करने हेतु ग्रामवासियों को प्रोत्साहित किया जाये।

प्रवेशोत्सव के दौरान विभिन्न स्तरों पर अपेक्षित कार्यों का विवरण

1. **विद्यालय स्तर पर किये जाने वाले कार्यः**

1.1 **अनामांकित/ड्रॉप आउट बालक-बालिकाओं हेतु :**

i. आउट ऑफ स्कूल बच्चों के चिन्हीकरण हेतु सीआरसी द्वारा अपने अधीनस्थ विद्यालयों को शामिल करते हुये वार्डवार अध्यापकों की नियुक्ति कर हाऊस होल्ड सर्वे किया जाना है।

ii. वार्डवार नियुक्त अध्यापकों द्वारा निर्वाचक नामावली एवं हाउस होल्ड के आधार पर सर्वे किया जाकर 3 वर्ष से 18 वर्ष के चिन्हित अनामांकित बालक-बालिकाओं की सूची तैयार की जायेगी।

iii. उपरोक्त के अतिरिक्त सर्वे के दौरान बस स्टैण्ड, निर्माणाधीन भवन, गाँव के बाहर कोई छोटी बस्ती, ढाणी, मजरा, पुरबा, खेत पर रहने वाले परिवार, मौसमी पलायन, कोविड के कारण प्रवासी मजदूरों के परिवार को भी सम्मिलित किया जाकर बालक-बालिकाओं को चिन्हित एवं सूचीबद्ध किया जायेगा।

iv. हाउस होल्ड सर्वे में चिन्हित 3 से 18 वर्ष तक के बालक-बालिकाओं को आंगनबाड़ियों, विद्यालयों, स्टेट ओपन, पत्राचार पाठ्यक्रमों अथवा अन्य शैक्षिक संस्थानों से आयु अनुरूप कक्षाओं में जोड़ा जायेगा। आंगनबाड़ियों एवं राजकीय विद्यालयों में प्रवेश योग्य समस्त बालक-बालिकाओं का विवरण निर्धारित प्रपत्रानुसार शालादर्पण पर CRC मॉड्यूलमें प्रविष्ट किया जायेगा।

v. सर्वे में चिन्हित कक्षा प्रथम में आयु अनुरुप प्रवेश योग्य बच्चों को शिक्षा से वंचित की श्रेणी में ना मानते हुये कक्षा प्रथम में शाला दर्पण के ''नई प्रवेश प्रविष्टि'' मॉड्यूल में सूचना प्रविष्टि की जाये।

vi. सर्वे में चिन्हित शिक्षा से वंचित (OoSC) ऐसे विद्यार्थी जिनकी शैक्षिक दक्षता कक्षा आयु अनुरूप है, उन्हें सीआरसी मॉड्यूल में शिक्षा से वंचित (OoSC) के कारणों को चिन्हित कर समान कक्षा में प्रवेश देवें।

vii. हाउस होल्ड सर्वे में चिन्हित समस्त आउट ऑफ स्कूल बच्चों को शाला दर्पण पोर्टल पर प्रविष्ट किया जाना है। इन बच्चों में से विद्यालयों में नामांकित किये गये बच्चों को शाला दर्पण पोर्टल पर नव प्रवेशित मॉड्यूल में आयु अनुसार प्रवेश से प्रविष्ट किया जाना है। जिन बच्चों को किन्हीं कारणों से विद्यालय में तुरन्त नामांकित नहीं किया जा सका है, ऐसे चिन्हित बच्चों का विवरण CRC मॉड्यूल में प्रविष्ट करना है।

viii. हाउस होल्ड सर्वे का कार्य प्रवेशोत्सव में पूर्ण किया जाकर चिन्हित बालक-बालिकाओं का उनके निवास स्थान के नजदीकी विद्यालयों में नामांकन सुनिश्चित किया जायेगा तथा आवश्यकतानुसार Condensed Course / Bridge Course माध्यम से विशेष शिक्षण कराया जाकर आयु अनुसार प्रवेशित कक्षा के स्तर पर लाया जायेगा।

1.1.1 पूर्व से विद्यालय में अध्ययनरत विद्यार्थियों हेतु

i. विद्यालय में अध्ययनरत छात्र-छात्राओं का अगली कक्षा में नामांकन सुनिश्चित किया जायेगा।

1.1.2 विद्यालय में अध्ययनरत/अनामांकित/ड्रॉप आउट बालक-बालिकाओं के नामांकन हेतु किये जाने वाले अन्य कार्य

i. एसएमसी/एसडीएमसी की बैठकों में सभी सदस्यों एवं अभिभावकों को अपने बच्चों का राजकीय विद्यालयों में नामांकन बनाये रखने एवं अन्य अभिभावकों को नामांकन कराने बाबत प्रेरित किये जाने के संबंध में चर्चा की जाये। कोविड-19 से सुरक्षा के सन्दर्भ में राज्य सरकार से जारी निर्देशों को ध्यान में रखते हुये कार्यवाही की जाये।

ii. विद्यालय में 3 से 18वर्ष आयु के समस्त अनामांकित/ड्रॉप आउट बालक-बालिकाओं से सम्बन्धित सूचनायें निर्धारित प्रपत्र में अद्यतन रखी जायें।

iii. विद्यालय की निकटस्थ आंगनबाड़ी में नामांकित 5 या अधिक वर्ष के बालक-बालिकाओं का विद्यालय में नामांकन सुनिश्चित किया जाये।

iv. आंगनबाड़ी कार्यकर्ता को निर्देशित किया जाये कि वह माताओं को प्रवेशोत्सव कार्यक्रम के दौरान पात्र बालक-बालिकाओं को आंगनबाड़ी एवं विद्यालय में नामांकित करवाने हेतु प्रेरित करें।

v. चिन्हित अनामांकित/ड्रॉप आउट बच्चों को विद्यालयों में नामांकित किये जाने के संबंध में ग्रामवासियों से चर्चा की जाकर प्राप्त फीडबैक अनुसार ग्रामवासियों के सहयोग से समस्त बच्चों को विद्यालयों में नामांकित किये जाने का प्रयास किया जावे। नामांकित बच्चों को विद्यालय आने पर निःशुल्क पाठ्यपुस्तकों का वितरण किया जावे।पंचायत के प्रमुख स्थानों यथा - पंचायत भवन, राजीव गांधी सेवा केन्द्र, कृषि सेवा केन्द्र, धार्मिक स्थल, चौपाल, स्थानीय बस स्टेण्ड आदि पर वार्डवार चिन्हित एवं नामांकित/अनामांकित बच्चों की सूची चस्पा की जाये।

vi. सर्वे के दौरान चिन्हित बालक-बालिकाओं की सूची वार्डवार, ग्रामवार संधारित करना तथा सीआरसीकार्यालय के माध्यम से शाला दर्पण पोर्टल पर अपडेट कराया जाये।

vii. विद्यालय द्वारा गत सत्र के हाउस होल्ड सर्वे की प्रगति की समीक्षा की जाकर अनामांकित/ड्रॉप आउट बच्चों को चिन्हित कर विद्यालय में उनकी आयु अनुरूप कक्षा में नामांकित किया जाये।

2. सर्वेकर्ता शिक्षक के दायित्व

I. हाउस होल्ड सर्वे अन्तर्गत अनामांकित व ड्रॉप आउट बच्चों की सूचना संबंधी प्रपत्र में भरी जाये।

II. प्रपत्र पूर्ण रूप से भरा जाये एवं कोई कॉलम खाली न रहे।

III. आवंटित वार्ड में सुनिश्चित करें कि कोई भी घर, ढाणी, वास (हेबीटेशन), पुरबा या अस्थाई परिवार, कोविड-19 के कारण आये मजदूरों के परिवार सर्वे से वंचित न रहें।

IV. सर्वे कार्य पूरा कर अनामांकित व ड्रॉप आउट बच्चों की सूची 3 से 5 वर्ष एवं 5 से अधिक 18 वर्ष तक के समूह में सम्बन्धित संस्था प्रधान को जमा करायें।

V. चिन्हित बालक-बालिकाओं की सूचना शाला दर्पण पोर्टल पर प्रविष्टि कराने में सीआरसी कार्यालय को सहयोग करें।

4. सीआरसी स्तर पर किये जाने वाले कार्य

I. विद्यालय के अध्यापक, मेन्टर टीचर एवं समस्त अधीनस्थ विद्यालयों के संस्था प्रधान/हैड टीचर के साथ शैक्षणिक वर्ष हेतु तैयारी बैठक की जावे।

II. प्रबुद्ध नागरिकों/सक्रिय ग्रामीणों/विद्यालय के पूर्व छात्र-छात्रा जो सम्मानित पदों पर कार्यरत हैं, के साथ विद्यालय में नामांकन हेतु चर्चा की जाकर सहयोग प्राप्त किया जाये।

III. ग्राम पंचायत के ग्राम विकास अधिकारी/कृषि पर्यवेक्षक/ आंगनबाड़ी कार्यकर्ता/एएनएम/अन्य विभागों के पंचायत स्तरीय कार्मिकों आदि के साथ नामांकन कार्यक्रम को साझा किया जावे एवं हाउस होल्ड सर्वे हेतु पंचायत में वार्डवार नवीनतम निर्वाचक नामावली प्राप्त की जाये।

IV. वार्डवार अध्यापकों को नियुक्त किया जाकर हाउसहोल्ड सर्वे किये जाने के आदेश प्रसारित किये जायें।

V. समस्त संस्था प्रधान/हैड टीचर/टीचर को निर्देशित करें कि सर्वे के दौरान विद्यालय में नामांकन हेतु अभिभावकों को विद्यालय में उपलब्ध

सुविधाओं एवं राज्य सरकार की विभिन्न प्रोत्साहन योजनाओं के संबंध में जानकारी देवे।

VI. वार्डवार नियुक्त अध्यापकों द्वारा निर्वाचक नामावली अनुसार एवं नामावली के अतिरिक्त हाउस होल्ड का सर्वे किया जाकर 3 से 5 वर्ष एवं 5 से अधिक, 18 वर्ष तक की आयु के बालक-बालिकाओं की सूचना पीईईओ/यूसीईईओ (सीआरसी) निर्धारित प्रपत्र में तैयार की जाकर निर्धारित प्रपत्र में संकलित किया जाये।

VII. सर्वे में चिन्हित बालक-बालिकाओं की शाला दर्पण पोर्टल पर सीआरसी मॉड्यूल में तुरंत प्रविष्टि/अपडेशन कराया जाना सुनिश्चित किया जाये।

VIII. हाउसहोल्ड सर्वे का कार्य प्रवेशोत्सव में आवश्यक रूप से पूर्ण कर लिया जावे चिन्हित बालक-बालिकाओं का शत प्रतिशत नामांकन सुनिश्चित किया जाये।

IX. चिन्हित अनामांकित/ड्रॉप आउट बालक-बालिकाओं को आयु अनुरूप कक्षा में प्रवेशित कर तथा आवश्यक होने पर विशेष शिक्षण कराया जाकर आयु अनुसार कक्षा का स्तर प्राप्त किया जाये।

X. अपने एवं अधीनस्थ विद्यालयों की एवं निकटस्थ आंगनबाड़ी केन्द्रों में नामांकित 5 वर्ष से अधिक आयु वाले बालक-बालिकाओं को विद्यालय में नामांकित करवाया जाना सुनिश्चित किया जावे एवं इस बाबत मेन्टर टीचर अपने विद्यालय में निकटस्थ स्थित आंगनबाड़ी कार्यकर्ताओं के साथ कार्यक्रम में सहयोग हेतु चर्चा करे एवं प्रगति की समीक्षा करे।

4.1 प्रवासी परिवार / श्रमिक परिवारों के बच्चों के चिन्हीकरण एवं नामांकन के सम्बन्ध में निदेशालय माध्यमिक शिक्षा बीकानेर के पत्रांक शिविरा/माध्य/मा-द/22492/प्रवेशोत्सव/2019-20/356 दिनांक 10 सितम्बर, 2020 की पालना सुनिश्चित करें।

4.2 विद्यालय में नामांकित करवाये गये शिक्षा से वंचित (अनामांकित/ड्रॉप आउट), प्रवासी/श्रमिक परिवारों के बच्चों की सूचना की प्रविष्टि शाला दर्पण पोर्टल के सीआरसी मॉड्यूल संलग्न परिशिष्ट-3 के अनुसार करना सुनिश्चित करें, जिसकी नियमित मॉनीटरिंग एवं रिपोर्टिंग सम्बन्धित सीबीईओ, एडीपीसी, डीईओ प्रारम्भिक/माध्यमिक (मुख्यालय), सीडीईओ, निदेशालय बीकानेर एवं परिषद कार्यालय द्वारा की जायेगी।

5. ब्लॉक स्तर पर किये जाने वाले कार्य

I. ब्लॉक स्तर पर नामांकन बढ़ोतरी, अनामांकित/ड्रॉप आउट बालक-बालिकाओं के नामांकन एवं ठहराव से सम्बन्धित समस्त गतिविधियों हेतु कार्ययोजना निर्माण एवं पर्यवक्षेण उपखण्ड अधिकारी की अध्यक्षता में गठित ब्लॉक स्तरीय निष्पादन समिति द्वारा किया जायेगा।

II. बैठक में बीडीओ, सीबीईओ, ब्लॉक आरपी, सीडीपीओ (महिला एवं बाल विकास विभाग), समस्त सीआरसी द्वारा नामांकन/प्रवेशोत्सव के संबंध में सहयोग एवं समन्वयन सुनिश्चित किया जायेगा।

III. ब्लॉक विकास अधिकारी द्वारा प्रत्येक ग्राम पंचायत के ग्राम विकास अधिकारी को निर्देशित किया जावे कि समस्त पीईईओ को पंचायत की वार्ड वाइज नवीनतम निर्वाचक नामावली उपलब्ध करवायी जावे।

IV. एसडीएम कार्यालय द्वारा शहरी क्षेत्र के सीआरसी को वार्ड वाइज नवीनतम निर्वाचक नामावली उपलब्ध करवायी जावे।

V. ब्लॉक स्तरीय निष्पादक समिति की बैठकों में उपखण्ड अधिकारी द्वारा नामांकन बढ़ोतरी, अनामांकित/ड्रॉप आउट बालक-बालिकाओं के नामांकन एवं ठहराव में लक्ष्य के विरुद्ध की गई प्रगति की समीक्षा की जायेगी।

VI. नामांकन वृद्धि, अनामांकित/ड्रॉप आउट बालक-बालिकाओं के नामांकन एवं ठहराव हेतु किये जा रहे कार्यो / प्रयासों की समस्त मॉनीटरिंग सीबीईओ कार्यालय द्वारा की जायेगी।

VII. ब्लॉक स्तर पर शहरी क्षेत्रों में निर्वाचक नामावली के साथ-साथ बस स्टैण्ड, रेलवे स्टेशन, प्रमुख धार्मिक स्थलों/चौराहों, निर्माणाधीन भवन, बेघर/घुमन्तु/मौसमी पलायन एवं कच्ची बस्ती के परिवारों का भी सर्वे किया जाकर 3 से 18 वर्ष के बालक-बालिकाओं को चिन्हित एवं सूचीबद्ध किया जाये।

VIII. सीआरसी (शहरी/ग्रामीण) द्वारा वार्डवार एवं क्षेत्रवार चिन्हित बालक-बालिकाओं को शाला दर्पण पोर्टल पर प्रविष्टि कराया जाना सुनिश्चित किया जायेगा।

IX. ब्लॉक स्तरीय समिति द्वारा 2 सदस्यीय टीम गठित कर अपने ब्लॉक के कम से कम 10 प्रतिशत विद्यालयों के सर्वे का रैण्डम वेरिफिकेशन कराया जावे एवं वेरिफिकेशन रिपोर्ट जिले को प्रस्तुत की जाये।

6 जिला स्तर पर किये जाने वाले कार्य

I. नामांकन लक्ष्य गत वर्ष प्रवेश लेने वाले विद्यार्थियों को आधार बनाकर लक्ष्य निर्धारित किया जा सकता है, जो कि जिला शिक्षा अधिकारी द्वारा स्थानीय जनसंख्या व अन्य आधार पर निर्धारित किया जाना चाहिये।

II. जिला स्तर पर नामांकन बढ़ोतरी, अनामांकित/ड्रॉप आउट बालक-बालिकाओं के नामांकन एवं ठहराव से सम्बन्धित समस्त गतिविधियों हेतु कार्ययोजना निर्माण एवं पर्यवेक्षण

मुख्य जिला शिक्षा अधिकारी की अध्यक्षता में गठित जिला स्तरीय समिति द्वारा किया जायेगा।

III. बैठक में मुख्य जिला शिक्षा अधिकारी, उपनिदेशक महिला एवं बाल विकास विभाग, जिला जन संपर्क अधिकारी, जिला शिक्षा अधिकारी (प्रा0/मा0) को आमंत्रित किया जाकर सहयोग एवं समन्वयन सुनिश्चित किया जायेगा।

IV. मुख्य कार्यकारी अधिकारी जिला परिषद् द्वारा समस्त ब्लॉक विकास अधिकारियों के माध्यम से ग्राम पंचायत के ग्राम विकास अधिकारियों को निर्देशित किया जावे कि समस्त सीआरसी को पंचायत की वार्डवार नवीनतम निर्वाचक नामावली उपलब्ध करवायी जाये।

V. जिला कलक्टर कार्यालय द्वारा समस्त ब्लॉक के एसडीएम कार्यालय के माध्यम से शहरी क्षेत्र के सीआरसी को वार्ड वाइज नवीनतम निर्वाचक नामावली उपलब्ध करवायी जावे।

VI. उपनिदेशक महिला एवं बाल विकास विभाग द्वारा समस्त सीडीपीओ के माध्यम से समस्त आंगनबाड़ी पर्यवेक्षकों/कार्यकर्ताओं/सहायिकाओं को कार्यक्रम में आवश्यक सहयोग प्रदान करने हेतु निर्देशित किया जाये।

VII. मुख्य जिला शिक्षा अधिकारी द्वारा विभिन्न जिला स्तरीय अधिकारियों की टीमें बनाकर विद्यालयों में नामांकन बढ़ोतरी, अनामांकित/ड्रॉप आउट बालक-बालिकाओं के नामांकन एवं ठहराव से सम्बन्धित गतिविधियों का सघन पर्यवेक्षण एवं प्रगति की समीक्षा नियमित रूप से करवायी जाये।

VIII. मुख्य जिला शिक्षा अधिकारी द्वारा 2 सदस्यीय टीम गठित कर अपने जिले के समस्त ब्लॉक के कम से कम 5 प्रतिशत विद्यालयों के सर्वे का रैण्डम वेरिफिकेशन कराया जावे।

7. गैर सरकारी संस्थाओं की भूमिका

i. सरकारी विद्यालयों में नामांकन, ड्रॉप आउट/अनामांकित बालक-बालिकाओं को शिक्षा की मुख्य धारा से जोड़ने के लिये जिला, ब्लॉक, पंचायत एवं स्थानीय स्तर पर कार्यरत गैर सरकारी संस्थाओं, स्वैच्छिक संस्थाओं/समूहों का यथासम्भव सहयोग लिया जावे एवं परिषद् कार्यालय द्वारा MOU की गयी NGO उक्त कार्य में विशेष सहयोग प्रदान कर सूचना परिषद कार्यालय को प्रेषित करेंगे।

ii. परिषद कार्यालय से अनुबन्धित स्वयंसेवी संस्थायें प्रवेशोत्सव के अन्तर्गत राजकीय विद्यालयों में अधिकाधिक नामांकन हेतु पूर्ण रूप से सहयोग प्रदान करें।

8. प्रचार-प्रसार

I. नवीन शैक्षणिक वर्ष प्रारम्भ होने से पूर्व विद्यालयों में नामांकन हेतु प्रत्येक स्तर पर व्यापक प्रचार-प्रसार किया जावे।

II. ग्रामीण विकास एवं पंचायती राज विभाग के स्तर से भी शिक्षा के प्रचार-प्रसार हेतु ग्राम सभाओं में वितरण एवं प्रदर्शन हेतु विज्ञापन, पम्पलेटस् इत्यादि का प्रकाशन करवायें।

III. प्रवेशोत्सव के दौरान 15 जुलाई तक प्रत्येक गांव / ढाणी में कम से कम दो बार प्रभात फेरी निकाल कर प्रचार प्रसार किया जाये।

IV. प्रवेशोत्सव में पहली बार प्रवेश लेने वाले विद्यार्थियों का विद्यालय में स्वागत किया जाये।

V. 01 जुलाई को विद्यालय में नवीन प्रवेश लेने वाले विद्यार्थियों के सम्मान में विद्यालय के मुख्य द्वार पर सजावट की जाये।

VI. प्रवेशोत्सव के अनामांकित / ड्रॉप आउट बालिकाओं को विद्यालय में प्रवेश दिलवाने हेतु परिक्षेत्र की महिला कार्यकर्ता, महिला जनप्रतिनिधियों एवं क्षेत्र की समस्त महिलाओं के साथ सम्पर्क एवं समन्वय स्थापित कर ड्रॉप आउट को शून्य तथा शतप्रतिशत नामांकन करने का प्रयास किया जाये।

VII. जिला कलेक्टर एवं मुख्य कार्यकारी अधिकरी जिले में शिक्षा के व्यापक प्रचार-प्रसार करने हेतु प्रिंट मीडिया, इलेक्ट्रोनिक मीडिया आदि का सहयोग प्राप्त करने हेतु आवश्यक निर्देश जारी करें।

VIII. कोविड-19 को ध्यान में रखते हुये प्रचार-प्रसार के लिये मीडिया माध्यमों - प्रिंट मीडिया, इलेक्ट्रोनिक मीडिया आदि का उपयोग किया जाये।

IX. समस्त मुख्य जिला शिक्षा अधिकारी राजकीय विद्यालयों में बालक-बालिकाओं का नामांकन बढ़ाने हेतु सत्र 2021-22 में कक्षा 10 एवं 12 में सर्वोच्च अंक प्राप्त करने वाले विद्यार्थियों की फोटो लगवाये।

X. विद्यालय में अधिकाधिक नामांकन करवाने हेतु प्रवेशोत्सव के दौरान शिक्षा विभागीय योजनाओं / गतिविधियों का प्रचार प्रसार हेतु पेम्पलेटस् वितरण करवायें।

XI. अनामांकित/ड्रॉप आउट बच्चों के विद्यालय में नामांकन हेतु जिला, ब्लॉक व पंचायत के मुख्य स्थानों यथा रेलवे स्टेशन, बस स्टैण्ड, मन्दिर, सामुदायिक केन्द्र आदि पर दीवार लेखन, लाउड स्पीकर, पेम्पलेट वितरण एवं बैनर्स लगाये जायें।

XII. ग्राम/वार्ड विद्यालयों से वंचित हुये बच्चों को पुनः शिक्षण से जोड़ने के लिये अभिभावकों को प्रेरित किया जाये।

9. सराहनीय कार्य करने वाले संस्था प्रधानों/शिक्षकों/अभिभावकों को प्रोत्साहन

I. प्रत्येक विद्यालय/सीआरसी (ग्रामीण/शहरी) स्तर पर नामांकन के लिये उत्कृष्ट कार्य करने वाले शिक्षकों को राष्ट्रीय दिवसों के कार्यक्रम में सम्मानित किया जाये।

II. प्रत्येक पंचायत समिति/नगर पालिका में उत्कृष्ट कार्य करने वाले तीन संस्थाप्रधानों /शिक्षकों को उपखण्ड स्तर पर आयोजित राष्ट्रीय दिवस समारोह में सम्मानित किया जाये।

III. प्रत्येक जिले में श्रेष्ठ कार्य करने वाले पाँच संस्थाप्रधानों/शिक्षकों को जिला स्तर पर आयोजित राष्ट्रीय दिवस समारोह में सम्मानित किया जाये।

IV. राज्य स्तर पर शिक्षा संकुल में आयोजित राष्ट्रीय दिवस समारोह में प्रत्येक जिले से श्रेष्ठ कार्य करने वाले एक संस्था प्रधान को सम्मानित किया जाये।

V. श्रेष्ठ कार्य करने वाले विद्यालय/संस्थाप्रधान/ शिक्षक का चयन राजस्थान स्कूल शिक्षा परिषद् द्वारा बनाये गये मानदण्डों के आधार पर किया जायेगा।

VI. प्रत्येक ब्लॉक के सर्वाधिक नामांकन वाले दो उच्च माध्यमिक विद्यालयों, एक माध्यमिक विद्यालय, एक उच्च प्राथमिक विद्यालय एवं एक प्राथमिक विद्यालय को अतिरिक्त अनुदान प्रदान किया जायेगा।

VII. प्रत्येक ब्लॉक में वर्तमान सत्र में सर्वाधिक नामांकन वृद्धि करने वाले दो उच्च माध्यमिक विद्यालयों, एक माध्यमिक विद्यालय, एक उच्च प्राथमिक विद्यालय एवं एक प्राथमिक विद्यालय को अतिरिक्त अनुदान प्रदान किया जायेगा।

10. शैक्षिक सत्र 2022-23 में किसी भी प्राथमिक विद्यालय, उच्च प्राथमिक विद्यालय, माध्यमिक विद्यालय अथवा उच्च माध्यमिक विद्यालय के नामांकन में अप्रत्याशित कमी आने पर जिम्मेदारी तय की जाकर आवश्यक प्रशासनिक कार्यवाही की जावेगी।

11. कोविड-19 को ध्यान में रखते हुये भारत सरकार, राज्य सरकार एवं स्वास्थ्य विभाग द्वारा जारी दिशा निर्देशों की पालना अक्षरशः की जानी है।

संलग्न - उपरोक्तानुसार।

(डॉ. मोहन लाल यादव)
आयुक्त एवं राज्य परियोजना निदेशक

परिशिष्ट-2

विषय- प्रवासी श्रमिकों के बच्चों अनामांकित व ड्रॉप आउट बच्चों के चिह्निकरण एवं विद्यालय में नामांकन

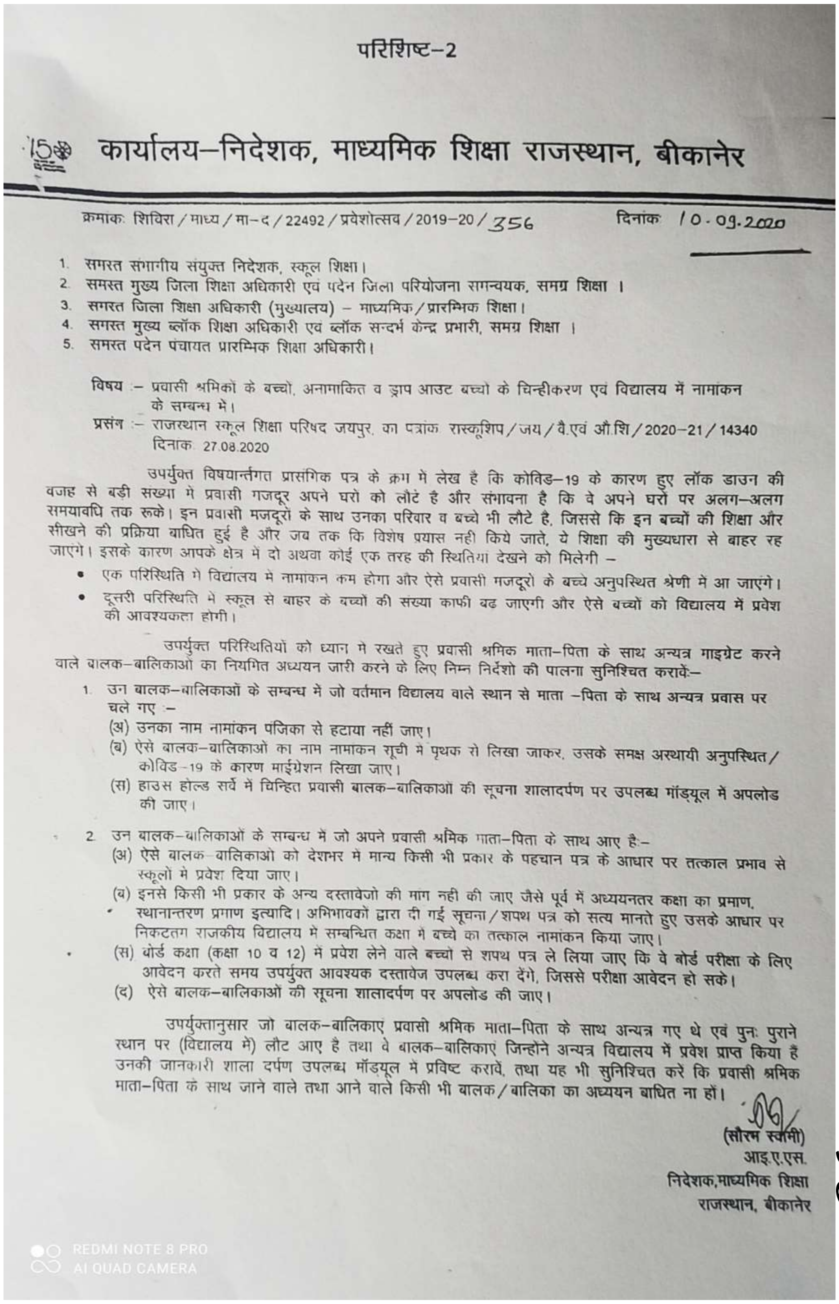

परिशिष्ट-2

कार्यालय-निदेशक, माध्यमिक शिक्षा राजस्थान, बीकानेर

क्रमांक: शिविरा/माध्य/मा-द/22492/प्रवेशोत्सव/2019-20/356 दिनांक 10.09.2020

1. समस्त संभागीय संयुक्त निदेशक, स्कूल शिक्षा।
2. समस्त मुख्य जिला शिक्षा अधिकारी एवं पदेन जिला परियोजना समन्वयक, समग्र शिक्षा ।
3. समस्त जिला शिक्षा अधिकारी (मुख्यालय) – माध्यमिक/प्रारम्भिक शिक्षा।
4. समस्त मुख्य ब्लॉक शिक्षा अधिकारी एवं ब्लॉक सन्दर्भ केन्द्र प्रभारी, समग्र शिक्षा ।
5. समस्त पदेन पंचायत प्रारम्भिक शिक्षा अधिकारी।

विषय :- प्रवासी श्रमिकों के बच्चों, अनामांकित व ड्राप आउट बच्चो के चिन्हीकरण एवं विद्यालय में नामांकन के सम्बन्ध मे।

प्रसंग :- राजस्थान स्कूल शिक्षा परिषद जयपुर, का पत्रांक रास्कूशिप/जय/वै.एवं औ.शि/2020-21/14340 दिनांक 27.08.2020

उपर्युक्त विषयान्तर्गत प्रासंगिक पत्र के क्रम मे लेख है कि कोविड-19 के कारण हुए लॉक डाउन की वजह से बड़ी संख्या मे प्रवासी मजदूर अपने घरो को लौटं है और संभावना है कि वे अपने घरों पर अलग-अलग समयावधि तक रूके। इन प्रवासी मजदूरों के साथ उनका परिवार व बच्चे भी लौटे है, जिससे कि इन बच्चों की शिक्षा और सीखने की प्रक्रिया बाधित हुई है और जब तक कि विशेष प्रयास नही किये जाते, ये शिक्षा की मुख्यधारा से बाहर रह जाएंगे। इसके कारण आपके क्षेत्र में दो अथवा कोई एक तरह की स्थितिया देखने को मिलेगी –

- एक परिस्थिति मे विद्यालय मे नामांकन कम होगा और ऐसे प्रवासी मजदूरो के बच्चे अनुपस्थित श्रेणी मे आ जाएंगे।
- दूसरी परिस्थिति मे स्कूल से बाहर के बच्चों की संख्या काफी बढ जाएगी और ऐसे बच्चों को विद्यालय में प्रवेश की आवश्यकता होगी।

उपर्युक्त परिस्थितियों को ध्यान मे रखते हुए प्रवासी श्रमिक माता-पिता के साथ अन्यत्र माइग्रेट करने वाले बालक-बालिकाओं का नियमित अध्ययन जारी करने के लिए निम्न निर्देशो की पालना सुनिश्चित करावें:-

1. उन बालक-बालिकाओं के सम्बन्ध मे जो वर्तमान विद्यालय वाले स्थान से माता -पिता के साथ अन्यत्र प्रवास पर चले गए :-
   (अ) उनका नाम नामांकन पंजिका से हटाया नहीं जाए।
   (ब) ऐसे बालक-बालिकाओ का नाम नामांकन सूची मे पृथक से लिखा जाकर, उसके समक्ष अस्थायी अनुपस्थित/ कोविड-19 के कारण माईग्रेशन लिखा जाए।
   (स) हाउस होल्ड सर्वे में चिन्हित प्रवासी बालक-बालिकाओं की सूचना शालादर्पण पर उपलब्ध मॉड्यूल मे अपलोड की जाए।

2. उन बालक-बालिकाओं के सम्बन्ध में जो अपने प्रवासी श्रमिक माता-पिता के साथ आए है:-
   (अ) ऐसे बालक-बालिकाओ को देशभर मे मान्य किसी भी प्रकार के पहचान पत्र के आधार पर तत्काल प्रभाव से स्कूलों मे प्रवेश दिया जाए।
   (ब) इनसे किसी भी प्रकार के अन्य दस्तावेजो की मांग नही की जाए जैसे पूर्व में अध्ययनतर कक्षा का प्रमाण, स्थानान्तरण प्रमाण इत्यादि। अभिभावकों द्वारा दी गई सूचना/शपथ पत्र को सत्य मानते हुए उसके आधार पर निकटतम राजकीय विद्यालय मे सम्बन्धित कक्षा मे बच्चे का तत्काल नामांकन किया जाए।
   (स) बोर्ड कक्षा (कक्षा 10 व 12) में प्रवेश लेने वाले बच्चो से शपथ पत्र ले लिया जाए कि वे बोर्ड परीक्षा के लिए आवेदन करते समय उपर्युक्त आवश्यक दस्तावेज उपलब्ध करा देंगे, जिससे परीक्षा आवेदन हो सके।
   (द) ऐसे बालक-बालिकाओं की सूचना शालादर्पण पर अपलोड की जाए।

उपर्युक्तानुसार जो बालक-बालिकाएं प्रवासी श्रमिक माता-पिता के साथ अन्यत्र गए थे एवं पुनः पुराने स्थान पर (विद्यालय में) लौट आए है तथा वे बालक-बालिकाएं जिन्होंने अन्यत्र विद्यालय में प्रवेश प्राप्त किया हैं उनकी जानकारी शाला दर्पण उपलब्ध मॉड्यूल मे प्रविष्ट करावें, तथा यह भी सुनिश्चित करें कि प्रवासी श्रमिक माता-पिता के साथ जाने वाले तथा आने वाले किसी भी बालक/बालिका का अध्ययन बाधित ना हों।

(सौरभ स्वामी)
आइ.ए.एस.
निदेशक,माध्यमिक शिक्षा
राजस्थान, बीकानेर

REDMI NOTE 8 PRO
AI QUAD CAMERA

राजस्थान राज्य शैक्षिक अनुसंधान एवं प्रशिक्षण परिषद, उदयपुर

(शैक्षिक प्रौद्योगिकी प्रभाग–4, राजस्थान अजमेर)

विद्यालय प्रसारण कार्यक्रम (सत्र 2022–23)

आज़ादी का अमृत महोत्सव

प्रसारण समय–दोपहर 12.35 से 12.55 बजे तक माह–जुलाई 2022

दिनांक	वार	आकाशवाणी केन्द्र	कक्षा	विषय	पाठ क्रमांक	पाठ का नाम	आलेखनकर्ता का नाम–श्री / श्रीमती / सुश्री
01.07.22	शुक्रवार	जयपुर	माननीय शिक्षामंत्री जी का संदेश				
02.07.22	शनिवार	जयपुर	NO BAG DAY गैरपाठ्यक्रम				
03.07.22	रविवार	अवकाश					
04.07.22	सोमवार	जयपुर	गैरपाठ्यक्रम				
05.07.22	मंगलवार	जयपुर	गैरपाठ्यक्रम				
06.07.22	बुधवार	जयपुर	गैरपाठ्यक्रम				
07.07.22	गुरूवार	जयपुर	गैरपाठ्यक्रम				
08.07.22	शुक्रवार	जयपुर	गैरपाठ्यक्रम				
09.07.22	शनिवार	जयपुर	NO BAG DAY गैरपाठ्यक्रम				
10.07.22	रविवार	अवकाश					
11.07.22	सोमवार	जयपुर	गैरपाठ्यक्रम				
12.07.22	मंगलवार	जयपुर	गैरपाठ्यक्रम				
13.07.22	बुधवार	जयपुर	गैरपाठ्यक्रम				
14.07.22	गुरूवार	जयपुर	गैरपाठ्यक्रम				
15.07.22	शुक्रवार	जयपुर	गैरपाठ्यक्रम				
16.07.22	शनिवार	जयपुर	NO BAG DAY गैरपाठ्यक्रम				
17.07.22	रविवार	अवकाश					
18.07.22	सोमवार	जयपुर	4	पर्यावरण अध्ययन	6	पेड़ पौधों की देखभाल	डॉ. सुषमा सिंह
19.07.22	मंगलवार	जोधपुर	8	हिन्दी	5	चिड़ियों की अनूठी दूनिया	वीणा कच्छावा
20.07.22	बुधवार	कोटा(जयपुर)	10	अंग्रेजी	9	Madam rides the bus	दीपक वर्मा
21.07.22	गुरूवार	उदयपुर	11	रसायन विज्ञान	2	परमाणु की संरचना	डॉ. भारती शर्मा
22.07.22	शुक्रवार	बीकानेर	12	इतिहास	4	विचारक, विश्वास और इमारतें	भुवनेश्वर सिंह भाटी
23.07.22	शनिवार	जयपुर	NO BAG DAY गैरपाठ्यक्रम				
24.07.22	रविवार	अवकाश					
25.07.22	सोमवार	जयपुर	7	विज्ञान	15	प्रकाश	निधि शुक्ला
26.07.22	मंगलवार	जोधपुर	6	सामाजिक विज्ञान	1	विविधता की समझ	लक्ष्मी कंवर
27.07.22	बुधवार	कोटा(जयपुर)	10	हिन्दी	1	माता का अंचल	जगदीश चंद्र भारती
28.07.22	गुरूवार	उदयपुर	12	हिन्दी (अनिवार्य)	1	हरिवंशराय बच्चन(पद्य)	जगदीश चौबीसा
29.07.22	शुक्रवार	बीकानेर	11	भूगोल	2	पृथ्वी की उत्पत्ति एवं विकास	हंसराज
30.07.22	शनिवार	जयपुर	NO BAG DAY गैरपाठ्यक्रम				
31.07.22	रविवार	अवकाश					

कार्य दिवस- 26, अवकाश-05 कुल प्रसारण दिवस -26

पाठ्यक्रम आधारित -10 गैर पाठयक्रम आधारित-16

(इन्द्रा सोनगरा)
प्रभारी अधिकारी
आईटीसेल, विज्ञान एवं प्रौद्योगिकी विभाग, अजमेर

मैं भी हूँ शिविरा रिपोर्टर...

शैक्षणिक विद्यालय नवाचार

राजकीय उच्च माध्यमिक विद्यालय, दूनी तहसील देवली, जिला-टोंक (राज.)

भँवरलाल कुम्हार

शिक्षा में नवाचारों की महत्त्वपूर्ण भूमिका है। शिक्षा में नवाचारों की सतत आवश्यकता है। सृजनशील शिक्षकों द्वारा विद्यालयों में निरन्तर अनेकानेक नवाचार विद्यार्थियों एवं विद्यालय व्यवस्था में सुधार हेतु प्रतिदिन कि, जाते हैं। नवाचारों को लिपिबद्ध करने की आवश्यकता है। राजकीय उच्च माध्यमिक विद्यालय दूनी में प्रधानाचार्य के निर्देशन में सृजनात्मक, समर्पित, परिश्रमी शिक्षकों द्वारा कुछ किए गए नवाचारों का जो निम्नानुसार है–

1. आज का गुलाब- विद्यालय में विद्यार्थियों के स्वच्छ गणवेश में आने हेतु ''आज का गुलाब'' शुरू किया गया जिसमें प्रार्थना सभा में प्रतिदिन स्वच्छ गणवेश में आने वाले एक विद्यार्थी का चयन कर उसका नाम विद्यालय के श्यामपट्ट पर लिखा जाता है। प्रार्थना सभा में गुलाब का पुष्प उसकी शर्ट पर लगाकर तथा तालियां बजवाकर सम्मानित किया जाता है। इससे विद्यार्थियों में विद्यालय गणवेश में आने एवंस्वच्छ गणवेश में आने की आदत विकसित होती है।

2. आज का दीपक- विद्यालय में विद्यार्थी एवं शिक्षक में आत्मीय सम्बन्ध बनाने हेतु इस नवाचार का महत्त्वपूर्ण स्थान है। विद्यार्थियों की जन्म तिथि के अनुसार सूचीबद्ध कर उनका जन्म दिन प्रार्थना में मनाया जाता है। इस हेतु हैप्पी बर्थ डे का बोर्ड बनाकर, दीपक जलाकर, तिलक, अक्षत लगाकर एवं माला पहनाकर प्रार्थना सभा में हैप्पी बर्थ डे टू यू स्काउट क्लेप्स के साथ गाकर सम्मानित किया जाता है। विद्यालय के श्यामपट्ट पर नाम भी लिखा जाता है। इस नवाचार से विद्यालय में विद्यार्थी एवं शिक्षक का आत्मीय सम्बन्ध मजबूत होता है एवं अभिभावकों का विद्यालय के प्रति सकारात्मक भाव उत्पन्न होता है।

3. स्टार ऑफ द वीक एण्ड मन्थ -विद्यालय में गुणवत्तापूर्ण शिक्षा हेतु साप्ताहिक स्टार ऑफ द वीक नवाचार महत्त्वपूर्ण है। सोमवार से शनिवार तक पूरे सप्ताह में पूर्ण उपस्थिति, अनुशासन, यूनिट टेस्ट में सर्वाधिक अंक प्राप्त, स्वच्छ गणवेश, बाल सभा में श्रेष्ठ प्रदर्शन इत्यादि पेरामीटर्स की कसौटी पर खरा उतरने वाले विद्यार्थी का प्रत्येक कक्षा से चयन कर शनिवारीय कार्यक्रम में शर्ट की जेब पर स्टार की प्रतिकृति लगाकर सम्मानित किया जाता है। विद्यार्थी इस स्टार को एक सप्ताह तक अपनी जेब पर लगाकर आता है। दूसरे सप्ताह में उसी छात्र का दुबारा चयन होने पर टू स्टार इस तरह से फाइव स्टार तक जा सकता है। चयनित विद्यार्थी का कक्षा के बाहर बोर्ड पर एक सप्ताह तक नाम अंकित किया जाता है। 'स्टार आफ द वीक' एवं 'स्टार ऑफ द मन्थ' से नवाजा जाता है। इससे अन्य विद्यार्थियों में भी प्रतिस्पर्धा की भावना पैदा होती है तथा शैक्षणिक गुणवत्ता में वृद्धि के लिए अच्छी पहल है।

4. यूनिट टेस्ट / साप्ताहिक जाँच परीक्षा- परीक्षा परिणाम उन्नयन हेतु यूनिट टेस्ट का आयोजन कर मूल्यांकन कर विद्यार्थियों को उसके परिणाम के आधार पर रेंक निर्धारण करना। इससे विद्यार्थियों में प्रतिस्पर्धा बढ़ती है तथा कमजोर विद्यार्थियों की पहचान एवं कठिन प्रश्नों का पता चल जाता है। प्रथम रेंक के विद्यार्थियों को पुरस्कृत किया जाता है। रैंकिग में पीछे रहे विद्यार्थियों को काठिन्य निवारण कर प्रोत्साहित किया जाता है।

5. आपणी स्कूल-आपणा भामाशाह योजना- इस योजना से विद्यालय मे विकास कार्यो हेतु भामाशाहों का योगदान बढ़ रहा है। इसमें 500 / रू देने वालों को प्रशंसा पत्र, 1100 / रू देने वालों को भामाशाह सम्मान पत्र, 2100 / रू देने वालो को साफा, भामाशाह सम्मान पत्र, 5100 / रू देने वालों को साफा, शॉल, भामाशाह सम्मान पत्र, स्मृति चिन्ह देकर सम्मानित किया जा रहा है। सम्मानित 1100 / रू देने वालों का नाम दीवार पर लिखवाना,

11000/ रूपये से अधिक देने वालों का नाम ग्रेनाईट पत्थर पर लिखवाना। इस योजना से विद्यालय में ग्रामवासी, विद्यालय के शिक्षक आगे आ रहे हैं। इस योजना में विद्यालय का सम्पूर्ण स्टाफ शिक्षक दिवस एवं वार्षिकोत्सव पर भामाशाह बनकर सबके लिए प्रेरणादायक बने है। विद्यार्थियों को गणवेश, जूते, मोजे, सर्दी से बचाव हेतु जर्सी–स्वेटर–टोपे वितरण, स्टेशनरी इत्यादि वितरण किया जाता है। भामाशाह द्वारा 2.5 लाख रूपये की लागत से प्याऊ का निर्माण करवाया गया है तथा ,क अन्य भामाशाह द्वारा 25 गुणा 50 फीट का सभागार निर्माण का कार्य प्रगति पर है।

6. ईग्लिश स्पोकन कन्वर्सेशन-ग्रामीण क्षेत्र में विद्यार्थियों को अंग्रेजी भाषा को सरल सहज बनाने हेतु प्रार्थना सभा में विद्यार्थी एक दूसरे से अंग्रेजी में प्रश्नोत्तर के माध्यम से वार्तालाप करना सीख रहे है।

7. मोटीवेशन स्पीच-शिक्षकों द्वारा विद्यार्थियों के विकास के लिए प्रार्थना सभा में एक मोटीवेशन स्पीच, संस्मरण, कहानी, कविता, दोहा, लोक गीत बताया जाता है।

8. विद्यार्थी प्रभावी सम्प्रेषण-ग्रामीण क्षेत्र के विद्यालयों में विद्यार्थियों में प्रभावी सम्प्रेषण की कमी रहती है इसको दूर करने हेतु प्रार्थना सभा में प्रतिदिन एक विद्यार्थी को अपनी बात संस्मरण, कविता, कहानी के माध्यम से सम्प्रेषण कला को प्रभावी बनाया जा रहा है। इसके अच्छे परिणाम सामने आए हैं।

9. क्लीन स्कूल-ग्रीन स्कूल-स्मार्ट स्कूल-

क्लीन स्कूल :-साफ सुथरा वातावरण सबको अच्छा लगता है विद्यालय प्रांगण साफ–स्वच्छ हो तो अध्ययन–अध्यापन का वातावरण भी बनता है। विद्यार्थी विद्यालय में आने को तैयार रहते हैं तथा आनन्ददायी शिक्षण का वातावरण तैयार होने से अधिगम स्तर मे वृद्धि होती है। प्रत्येक कक्षा कक्ष में प्लास्टिक बाल्टी के कचरा पात्र रखे गए तथा विद्यार्थियों को स्वच्छ भारत अभियान के बारे में समझाने से स्कूल साफ सुथरा रहने लग गया है। कक्षाकक्ष, शौचालय, मूत्रालय, प्रांगण, खेल मैदान को निरन्तर क्लीन रखने प्रयास निरन्तर जारी है।

10. ग्रीन स्कूल :-विद्यालय हरियाली युक्त परिसर है जहाँ पक्षियों की चहचहाट, कलरव, कोयल की सुरीली आवाज सुनने को मिलती है। ग्रीन स्कूल योजना में इको क्लब, स्काउट, एनएसएस, वृक्ष मित्र, वृक्ष भामाशाहों शिक्षकों एवं विद्यार्थियों के माध्यम से विद्यालय परिसर एवं खेल मैदान में एक हजार से अधिक छायादार, औषधीय एवं अंलकृत पौधे लगा, हुए है जिनकी निरन्तर देखभाल की जा रही है। इस हेतु विद्यालय परिसर में लॉन, 250 गमले, सैंकड़ों छायादार औषधीय महत्त्व के नीम, पीपल, बरगद, अशोक, विल्व पत्र, सहजन, टीकोमा, बोटल पाम , फाईकस के सघन वृक्ष है। फलदार पौधों में अमरूद, अंजीर, आंवला, जामुन, बिल्वपत्र, नीबू, शहतूत इत्यादि के वृक्ष लगे हुए है। सौन्दर्य एवं अंलकृत पौधे गमलों एवं रास्ते के दोनों तरफ शोभायमान है। अंलकृत पौधों में कोचिया, लाल–पीली–सफेद कनेर, केल, डूरेन्टाए लिलिए सन ऑफ इण्डिया, बोगनवेलिया, क्रिसमिस ट्री, सूरजमुखी, गुलदाउदी, ,रीकन पाम, क्रोटन, फोनिक्स पाम, चाईना पाम, तुलसी, सिनवेरिया, एलोवेरा, सुदर्शन, पत्थरचट्टा इत्यादि है। गुलाब गार्डन में सैंकड़ों पुष्प रोज खिलते है।

11.स्मार्ट स्कूल- विद्यालय को स्मार्ट बनानें में कई कारक कार्य करते हैं। विद्यालय में स्मार्ट क्लास रूम एवं कम्प्यूटर प्रयोगशाला द्वारा शिक्षण कार्य करवाया जाता है। एनड्रोइड फोन से कक्षा 9 एवं 10 की विज्ञान गणित में क्यूआर कोड का उपयोग करना सीसीटीवी केमरा, ऑटोमेटिक बेल सिस्टम, साउण्ड सिस्टम, इन्टरनेट से सुविधायुक्त बनाया गया है। बरामदों में पिन बोर्ड लगाकर सुसज्जित किया गया है जिन पर ज्ञानोपयोगी एवं विद्यालय गतिविधियों की सूचनाएँ लगाई जाती है। स्मार्ट स्कूल के विद्यार्थियों को स्मार्ट बनाने हेतु भामाशाहों के सहयोग से टाई, बेल्ट, परिचय पत्र दिए गए हैं। विशेष तौर से शिक्षकों द्वारा भी स्वेच्छा से यूनिफोर्म बनवाई हुई है जिसे सोमवार एवं मंगलवार को पहनकर विद्यालय आते है।

12.विद्यालय सौन्दर्यकरण-विद्यालय भवन दीवारों की सुन्दरता सभी को आकर्षित करती है। विद्यार्थियों द्वारा एसयूपीडब्ल्यू केम्प, एनएसएस, स्काउट के माध्यम से सभी खम्भों पर तिरंगा रंग करवाया गया। दरवाजों , बरामदों, बोर्ड पर रंगरोगन किया गया। दीवारों को पुतवाकर उन पर राजस्थानी मांडने विद्यार्थियों द्वारा बनाए गए जो बरबस आने वाले आगंतुको का

तत्कालीन कलेक्टर टोंक,वं वर्तमान माननीय निदेशक महोदय द्वारा अवलोकन

ध्यान आकर्षित करती है। चार कमरों पर ट्रेन की आकृति पुतवाकर सौन्दर्यकरण किया गया है जो बच्चों एवंबड़ों के आकर्षण का केन्द्र बना हुआ है।

13. हमारी परिषद्- हमारा क्लब –विद्यालय में कक्षा 11 एवं 12 के विद्यार्थियों हेतु वाणिज्य परिषद्, कला परिषद्, कक्षा 6 से 10 के छात्रों हेतु '' विज्ञान क्लब'' मीना मंच, चाईल्ड राइट क्लब, निर्वाचन, साक्षरता क्लब, स्टूडेन्ट पुलिस केडेट इत्यादि गठित किए गए हैं। इनके माध्यम से विभिन्न गतिविधियों द्वारा बच्चों का चहुँमुखी विकास हो सके। पूर्व छात्र परिषद् एल्यूमिनाई द्वारा ''शिक्षक दिवस'' का प्रभावी आयोजन कर

शिक्षकों का सम्मान किया गया।

14. दूनी विद्यार्थी स्टेशनरी बैंक-जरूरत मंद विद्यार्थियों को स्टेशनरी उपलब्ध कराने हेतु स्टेशनरी बैंक की स्थापना की गई है। बैंक में पेन, पेन्सिल, रबर, कटर,, स्केच कलर, अभ्यास पुस्तिका, स्लेट, बरती, पुस्तिका कवर, स्टिकर, गोंद, फेविस्टिक, ग्राफ, रिक्त मानचित्र, चित्रकला अभ्यास पुस्तिका, वर्कबुक, परकार, चंदा इत्यादि विद्यार्थी उपयोगी सामग्री सदस्यों द्वारा एकत्रित कर बैंक मे जमा की जाती है तथा प्रभारी द्वारा जरूरतमंद विद्यार्थियों को प्रदान की जाती है।

15. विद्यालय शिक्षा मित्र-विद्यालय एवं ग्राम पंचायत के 19 वार्डो में विद्यालय शिक्षा मित्र स्वयं सेवकों का दायित्व दिया गया है जो विद्यालय की योजनाओं को जन–जन तक पहुँचाने का कार्य कर नामांकन वृद्धि में सहयोग कर रहे हैं। विद्यालय शिक्षा मित्रों के माध्यम से ड्रॅाप आउट विद्यार्थियों को विद्यालय से जोड़ने का प्रयास निरन्तर जारी है। इससे विद्यालय के प्रति सामुदायिक जागृति एवंसहयोग में वृद्धि हो सकेगी।

16. बोलती दीवारें-प्रदर्शनी शिक्षण–कॅरिअर डे, हिन्दी दिवस, पृथ्वी दिवस, शिक्षक दिवस, महिला दिवस, स्वतन्त्रता दिवस, गणतन्त्र दिवस, विद्यालय विकास प्रदर्शनी, विज्ञान प्रदर्शनी, पुस्तक प्रदर्शनी, सूचना पट्ट प्रदर्शन के माध्यम द्वारा स्व अध्ययन से प्रभावी शिक्षण करवाया जाता है जिसमें विद्यार्थी अधिक रुचि लेते हैं। इसमें शिक्षकों, विद्यार्थियों हेतु अलग–अलग कॉर्नर बना, गए हैं। शिक्षक एवं विद्यार्थियों द्वारा निर्मित सामग्री – पोस्टर, चार्ट, कहानी, कविता, मॉडल, फोटोग्राफ्स, इत्यादि का प्रदर्शन किया जाता है। गाँधी दर्शन कॉर्नर, कम्यूनिटी कॉर्नर, कॅरिअर कॉर्नर इत्यादि उल्लेखनीय है।

17. <u>खेल मैदान व गार्डन</u>-विद्यालय के खेल मैदान को शिक्षकों, विद्यार्थियों, भामाशाहों एवं वृक्ष मित्रों के सहयोग से 500 अंलकृत, छायादार एवं औषधीय महत्त्व के पौधे लगाकर साफ–स्वच्छ एवं हरित गार्डन के रूप में विकसित किया गया है जो खेल में उपयोग के साथ–साथ सुबह–शाम ग्राम वासियों के घूमने का केन्द्र बन गया है। बैठने के लिए सीमेन्ट की बैंचें भी लगाई गई है। विद्यालय समुदाय के लिए एवं समुदाय विद्यालय के लिए उपयोगी चरितार्थ हो रहा है।

18. <u>स्कूल टूरिज्म</u>-रा.उ.मा.वि. दूनी के विभिन्न नवाचारों को अवलोकन हेतु अन्य विद्यालयों के शिक्षक आकर प्रेरणा से अपने विद्यालय में इन नवाचारों को अपनाते हैं।

19. <u>किचन गार्डन</u>- पोषण वाटिका– विद्यालय में कक्षा 1 से 8 के छात्रों के लिए मिड डे मील योजनान्तर्गत मध्याह्न में खाना खिलाया जाता है। पोषाहार में ताजा सब्जियाँ एवं मसालों हेतु 100 गुणा 40 फीट में जैविक विधि से किचन गार्डन विद्यार्थियों एवं शिक्षकों के सहयोग से तैयार किया गया इससे पोषाहार में ताजी, जैविक सब्जियां प्राप्त होने से पोषाहार की गुणवत्ता में वृद्धि होने के साथ–साथ विद्यार्थियों को पर्यावरणीय ज्ञान एवं सब्जियाँ उगाने की तकनीक की जानकारी की वृद्धि होती है। टमाटर, आलू, फूल गोभी, ब्रोकली, गांठ गोभी, पत्ता गोभी, पिंक कलर की गोभी, पालक, धनियां, प्याज, लहसुन, पौदीना, मिर्च, भिण्डी, ग्वार फली, सेम फली, चंवला, मूली, लाल गोल मूली, सलाद बोकचोई, शकरकन्द, कद्दू, लौकी, चौलाई गुणवत्तापूर्ण पोषाहार के साथ विद्यार्थियों को सब्जियाँ एवं मसाले उगाने का प्रायोगिक एवं व्यवहारिक ज्ञान भी प्राप्त हो रहा है। विद्यार्थियों की जैविक सब्जी उत्पादन के प्रति रुची विकसित हो रही है।

20. <u>साहित्यक एवं सांस्कृतिकः-</u>

विद्यालय में साहित्यक एवं सांस्कृतिक कायक्रमों में हमेशा उल्लेखनीय कार्यक्रम आयोजित किए जाते हैं। स्थानीय विद्यालय में सप्ताह की छः प्राथनाएं, समूह गान, नाटक, एकल गीत, एकल तथा सामूहिक नृत्य, वाद–विवाद, क्विज, रोल प्ले इत्यादि सम्मलित है। इनमें स्वरचित एवं मौलिक रचनाऐं विद्यार्थियों एवं शिक्षकों द्वारा प्रस्तुत किए जाते हैं। कोरोना, टीकाकरण, बाल विवाह, नशा मुक्ति, जल संरक्षण, मतदाता जागरूकता बेटी बचाओं– बेटी पढ़ाओं, विधिक जागरूकता, इत्यादि अभियानों में स्वरचित स्वयं द्वारा स्वरबद्ध कार्यक्रम प्रस्तुत कर समुदाय को जागरूक किया जाता है।

भारतीय संस्कृति अतिथि देवो भवः की संस्कृति है। राजस्थान में भी पधारो म्हारे देश जैसी परम्परा है। इसी थीम पर विद्यालय में पधारे हुए अतिथियों, अधिकारियों, अभिभावकों, पूर्व छात्रों का तिरंगा दुपट्टाए मेडल, राजस्थान की आन–बान शान पगड़ी पहनाकर, सरस्वती की तस्वीर, स्मृति चिन्ह देकर सम्मान सत्कार किया जाता है।

21. <u>विद्यालय का हृदय-पुस्तकालयः-</u>

व्यक्ति की सबसे अच्छी मित्र अच्छी पुस्तके है। विद्यालय के सुसज्जित पुस्तकालय में अथाह ज्ञान के भण्डार वाली पुस्तकें, संदर्भ पुस्तकें, महापुरूषों की जीवनियां, कहानी, बाल साहित्य, पत्र–पत्रिकाऐं उपलब्ध है जिनका उपयोग विद्यार्थी एवं शिक्षकों द्वारा रिक्त कालांश में किया जाता है।

22. <u>प्रोत्साहनः-</u>

विद्यालय में संचालित वाणिज्य संकाय में परीक्षा परिणाम उन्नयन हेतु विद्यार्थियों को बोर्ड परीक्षा में 95, 90, 85 तथा 80 प्रतिशत से अधिक प्राप्तांक लाने पर क्रमशः 5101रू, 2101रु, 1,101रु, तथा 500रु. की प्रोत्साहन राशि देकर सम्मानित किया जाता है। कला संकाय, आठवी, पांचवी बोर्ड परीक्षा के टोपर्स को पगड़ी, स्मृति चिह्न देकर समारोह में सम्मानित किया जाता है।

23. <u>टीचर्स प्रोफेशनल डवलपमेन्ट प्रोग्राम</u>–

शिक्षकों की शिक्षण विधा प्रभावी बने इस हेतु विद्यालय के शिक्षकों हेतु टीचर्स प्रोफेशनल डवलपमेन्ट प्रोग्राम की शुरूआत की गई है। इस कार्यक्रम में टीएलएम निर्माण, सम्प्रेषण कला, योगा, विशेष प्रतिभा के गेस्ट व्याख्यान करवाए जाते हैं।

प्रधानाचार्य
राज.उ.मा.वि. दूनी
जिला–टोंक(राज.)
मो.–9414841814

साइबर सुरक्षा जागरूकता के उद्देश्य में शिक्षकों की महती भूमिका

डॉ सुनीता चौधरी

विगत वर्षो में कोविड महामारी के कारण विद्यार्थियों को ऑनलाइन अध्ययन के दौरान डिजिटल डिवाइस के उपयोग को बढ़ावा मिला तथा विद्यार्थियों द्वारा प्रतिदिन 04–05 घंटे लगातार अध्ययन एवं गृह कार्य हेतु डिजिटल डिवाइस का उपयोग करना पड़ा। अचानक से बिना पूर्व तैयारी के कारण हमें विद्यार्थियों को ऑफलाइन कक्षाओं से ऑनलाइन कक्षाओं की तरफ मोड़ना पड़ा। यह उस समय की आवश्यकता थी, अन्य कोई विकल्प हमारे पास उपलब्ध नहीं था। पढ़ाई के साथ–साथ डिजिटल डिवाइस उपलब्धता के कारण मनोरंजन के बहुत सारे विकल्प, इंटरनेट सर्फिंग के दौरान उपलब्ध रहते हैं, जिनमें कई विकल्प किशोरवय आयु हेतु असुरक्षित हैं और उन्हें कभी भी किसी अप्रत्याशित जोखिम में डाल सकते हैं। अतः इन्टरनेट की दुनिया की आचार संहिता एवं सुरक्षित विकल्प के बारे में विद्यार्थियों को जागरूक करना अत्यंत आवश्यक है। सामान्यतः देखा जाता है कि इंटरनेट सर्फिंग के दौरान अनजाने में ही विद्यार्थी एक ऐसे जाल में प्रवेश कर जाता है, जहाँ से बाहर निकलने का मार्ग उसे नहीं पता। वह इस संदर्भ में अपने अभिभावकों से भी डर की वजह से संवाद नहीं कर पाता। अतः पाठयक्रम में इन्टरनेट का मूलभूत ज्ञान, ऑनलाइन व्यवहार, साइबर अपराध की विधि धाराएँ, निराकरण हेतु प्रयास पर परिचर्चा आवश्यक है लेकिन साइबर सुरक्षा एक तकनीकी ज्ञान है जिसे शिक्षकों के माध्यम से विद्यार्थियों तक पहुँचाने के मार्ग में कई चुनौतियां है। इसे एक समेकित कार्य योजना के साथ ही प्रारंभ किया जा सकता है। किशोरवय अवस्था एक बालक के जीवन का वह समय है जिसमें विद्यार्थी को इस क्षेत्र में कहीं से मार्गदर्शन न मिलने के कारण उसके मानसिक स्वास्थ्य पर दुष्प्रभाव पड़ेगा और उसका शैक्षणिक विकास अवरूद्ध होगा। कार्य योजना के प्रथम चरण में साइबर सुरक्षा से संबंधित उपयुक्त आईईसी सामग्री का विषय विशेशज्ञों के माध्यम से निर्माण करना, द्वितीय चरण में तैयार आईईसी सामग्री पर विषय विशेशज्ञों के माध्यम से शिक्षकों का क्षमता अभिवर्द्धन करना एवं तृतीय चरण के रूप में प्रशिक्षित शिक्षकों के माध्यम से विद्यार्थियों तक साइबर सुरक्षा जागरूकता पर पहुँच बनाना था।

प्रौद्योगिकी एवं नैतिक मूल्यों का अन्तःसंबंधः– शिक्षा प्राप्त करते हुए विद्यार्थी के सर्वांगीण विकास हेतु कुछ नैतिक जीवन मूल्य जैसे–ईमानदारी, सेवा की भावना, कर्त्तव्य परायणता, दूसरों का सम्मान, सत्य व अहिंसा आदि की भावना भी शिक्षकों द्वारा विकसित की जाती है । सामाजिक जीवन की व्यवस्था के कुछ नियम आवश्यक होते हैं। उन नियमों का पालन करने से ही संस्कारित जीवन शैली जन्म लेती है एवं अपराध न के बराबर हो जाते हैं। आज की यह आवश्यकता है कि प्रौद्योगिकी के विकास के साथ–साथ नैतिक सम्बन्धों को विकसित किया जाए। वस्तुतः बचपन में छोटी–छोटी चोरी, असत्य वचन, बेईमानी करने पर मन में दूसरों के प्रति हिंसा की भावना उत्पन्न होने के कारण अभिभावकों एवं शिक्षकों से कितनी ही बार डांट खाई होगी और उसी के कारण बचपन में अवांछित आदतों को छोड़ा होगा। प्रत्येक नैतिक मूल्य को विकसित करने में छोटी–छोटी सी, संस्कार, पौराणिक एवं अन्य जीवन कथाओं का कितना योगदान रहा होगा। अभिभावक, शिक्षक, विद्यार्थी एक ऐसा त्रिकोण है, जिसका एक छोर दूसरे छोर से जुड़ा हुआ है। तीनों छोरों के आपसी सामंजस्य पूर्ण जुड़ाव के माध्यम से विद्यार्थी स्वयं का चहुँमुखी विकास कर चरित्रवान एवं नैतिक गुणों से युक्त होता है। आज शिक्षक जिस दायित्व का वहन कर रहे हैं, कभी वे भी विद्यार्थी थे, उनके गुरु के द्वारा उनके उज्ज्वल भविष्य हेतु किए गए प्रयास या अभिकथन आज भी उनके मन मस्तिष्क में अमिट है। इसीलिए इसका दायित्व शिक्षकों के लिए और भी अधिक बढ़ जाता है। इंटरनेट के कारण सूचनाओं का आदान–प्रदान अतिशीघ्र होने लगा है। इंटरनेट का बढ़ता उपयोग एवं जानकारी साझा करने के विभिन्न प्लेटफार्म उत्पन्न होने के कारण वास्तविक एवं अवास्तविक के अन्तर में पहचान बोध न होने से, किशोरवय विद्यार्थी कहीं किसी साइबर खतरे का शिकार तो नहीं हो रहा अथवा उसका मानसिक स्वास्थ्य तो प्रभावित नहीं हो रहा, यह एक चिंतन का विषय है। यदि किसी को खतरा महसूस हो रहा है या घटना घटित हो चुकी है तो उसकी रिपोर्टिंग कैसे की जा सकती है, कौन–कौन से ऐसे पोर्टल है ? किसी विद्यार्थी में अचानक आए व्यवहार में परिवर्तन के कारण को कैसे समझा जाए। आज इन्टरनेट के युग में भी इसका उपयोग करते हुए, उन्हीं नैतिक मूल्यों का पालन करते हैं तो स्वयं को दूसरों से सुरक्षित रख सकते हैं। आज विभिन्न लोक–लुभावन विज्ञापन, जैकपॉट, लॉटरी लगने जैसे फेक लिंक प्राप्त होते हैं, जिनमें विद्यार्थी लोभवश ऐसे लिंक पर क्लिक करके स्वयं को असुरक्षित कर देते हैं।

संस्थाप्रधान की भूमिका–एक विद्यालय का संपूर्ण प्रबंधन, भौतिक एवं शैक्षिक विकास के साथ–साथ साइबर सुरक्षा का दायित्व भी संस्थाप्रधान के कंधों पर होता है। उनके निर्देशों के अभाव में कोई भी गतिविधि अपना स्थान प्राप्त नहीं करती। संस्था प्रधान द्वारा विद्यालय हेतु कार्य–योजना का पालन शिक्षकों एवं समस्त स्टाफ द्वारा किया जाता है। अतः साइबर सुरक्षा जागरूकता जैसे महत्त्वपूर्ण विषय पर संस्थाप्रधान की भूमिका अत्यंत महत्त्वपूर्ण है :–

1. विद्यालय में SDMC]SMC]PTM MTM की नियमित बैठकों के दौरान ''साइबर सुरक्षा'' को भी बैठक एजेण्डे में जोड़ा जाना आवश्यक है।
2. प्रत्येक सत्र की माह वार कार्य योजना शिक्षकों के माध्यम से तैयार की जाती है। संस्थाप्रधान विद्यालय कार्य योजना में ऐसी गतिविधि को स्थान प्रदान कर सकते हैं।
3. विद्यालय में ''साइबर सुरक्षा

जागरूकता'' पर लेख, निबंध के पोस्टर, कोटेशन निर्माण पर विद्यार्थियों में स्वस्थ प्रतिस्पर्धा को स्थान प्रदान करें।

4. साइबर सुरक्षा जागरूकता पर प्रतिस्पर्धा में श्रेष्ठ, रचनात्मक एवं प्रतिभावन विद्यार्थी को पुरस्कृत कर प्रशस्ति पत्र प्रदान करे। जिससे अन्य विद्यार्थी भी प्रोत्साहित हो सके।

5. किसी विद्यार्थी में पूर्व की तुलना में अचानक आए हुए बदलाव की उपेक्षा नहीं करें बल्कि विद्यार्थी में व्यवहार परिवर्तन के कारणों का पता लगाने का प्रयास करें एवं समस्या समाधान की दिशा में कार्य हेतु तत्पर रहे।

6. विद्यालय समय के अतिरिक्त समय में विद्यार्थी द्वारा उपयोग किए गए इन्टरनेट समय का अभिभावकों द्वारा मोनिटरिंग किए जाने हेतु प्रेरित करें एवं प्रबंधकीय नियंत्रण को उनके हाथों में रखे जाने हेतु प्रेरित करें।

7. साइबर सुरक्षा जागरूकता पर महत्त्वपूर्ण आईईसी सामग्री को (जैसे– पोस्टर, बैनर इत्यादि) ऐसे स्थान पर चस्पा करवाए जहाँ से विद्यार्थियों का नियमित आवागमन हो। आवागमन के दौरान वह संदेशों को देखकर पढ़ सकें।

अभिभावकों की दृष्टि से– विद्यालय समय के अतिरिक्त समय में विद्यार्थी निरंतर परिवार एवं समाज में रहता है। विद्यालयों में अभिभावकों के साथ विद्यार्थी की नियमित उपस्थिति एवं शैक्षिक प्रगति/कक्षावार प्रगति साझा की जाती है। विद्यालय समय पूर्व एवं पश्चात् विद्यार्थी द्वारा डिजिटल डिवाइस उपयोग करते समय अभिभावकों का निगरानी रखना ही डिजिटल पैरेंटिंग है।

1. अभिभावक समय का विभाजन कर आवश्यकतानुसार बच्चों द्वारा मोबाइल में उपयोग किया जाने वाला स्क्रीन समय सीमा निश्चित करें।

2. स्क्रीन शेयर के दौरान बीच में ब्रेक लेने को कहें तथा रचनात्मक कार्यों हेतु स्क्रीन का उपयोग करने हेतु प्रेरित करें।

3. ऑनलाइन गेम की बजाय सामूहिक खेल को बढ़ावा होगा । जिससे बच्चों में नेतृत्व, सहयोग की भावना, समय प्रबंधन जैसे महत्त्वपूर्ण गुणों का विकास हो एवं वे ऊर्जावान महसूस हो सके।

4. साइबर अपराध से जुड़े कानूनी प्रावधान के बारे में उन्हें सचेत करें। जिस प्रकार अभिभावकों द्वारा अपने बच्चों को शिष्टाचार, की अच्छी बातें सिखायी जाती है, उसी प्रकार डिजिटल शिष्टाचार के प्रति उचित व्यवहार हेतु प्रेरित करें।

साइबर सुरक्षा के यथा सम्भव उपाय–शिक्षकों का योगदान – शिक्षक विद्यार्थियों हेतु दृश्य/अदृश्य प्रेरणा स्रोत होते हैं। कक्षा–कक्ष विषय वस्तु, पठन–पाठन के अतिरिक्त अन्य संदर्भों में भी उनके द्वारा कही गयी बात, विद्यार्थियों के मानस पटल पर अमिट छाप छोड़ती है। अतः ऑनलाइन सुरक्षा के क्रम में शिक्षकों द्वारा विद्यार्थियो हेतु ध्यान योग्य बातें उन्हें साइबर खतरों के प्रति जागरूक बनाने में कारगर होंगी। इस हेतु शिक्षकवृंद विद्यार्थियों को इन्टरनेट की समय सीमा निश्चित करने, सुरक्षित डाउनलोडिंग, सुरक्षित शेयरिंग, ऑनलाइन दोस्ती के मध्य व्यवहार, ऑनलाइन गेम के दौरान सुरक्षा इत्यादि पर चर्चा कर सकते हैं।

हम सभी जानते हैं कि एक प्रकाशित साइबर घटना समाज को सचेत एवं सावधान रहने हेतु तत्पर करती है। अतः जिस प्रकार प्रार्थना सत्र में महत्त्वपूर्ण ज्ञानवर्धक खबरों के कथन, समाचार पत्र वाचन, डिबेट आदि आयोजित होती है उसी प्रकार साइबर घटित अपराध के बारे में चर्चा कर अन्य सभी विद्यार्थियों को सचेत किया जा सकता है एवं साइबर सुरक्षा पर ई–रक्षा प्रतियोगिता निबन्ध लेखन, स्लोगन, टैग लाइन पोस्टर, प्रतियोगिता आदि के माध्यम से विद्यार्थियों में जागरूकता उत्पन्न की जा सकती है। इन्टरनेट का समुचित एवं सुरक्षित उपयोग विद्यार्थियों के समग्र विकास की दृष्टि से उचित होगा, वरना उनका शारीरिक, मानसिक एवं भावनात्मक संवेग प्रभावित होगा। बढ़ते साइबर अपराधों को सुनकर यही प्रतीत होता है कि जिस प्रकार पढ़ाई के साथ–साथ अन्य व्यावहारिक एवं नैतिक ज्ञान बाल्यावस्था से शिक्षकों द्वारा प्रदान किया जाता था, उसी प्रकार ''सुरक्षित साइबर स्पेस में विद्यार्थियों की सुरक्षा'' को लेकर शिक्षक जागरूक है। वह स्वयं इस बारे में प्रशिक्षण ले रहे हैं एवं छात्रों को जागरूक करने की दिशा में निरन्तर तत्पर है। शिक्षक विद्यार्थियों को प्रशिक्षण भी दे रहे हैं। जिस प्रकार भौतिक जगत में भौतिक रूप से घटित प्रत्येक अपराधों को विभिन्न नामों से जाना जाता है, उसी प्रकार साइबर खतरों को विभिन्न नामों से जाना जाता है–जैसे स्वयं की पहचान गुप्त रख किसी को परेशान करने की दृष्टि से अमान्य मुद्दे, मैसेज भेजना इत्यादि साइबर बुलिंग कहा जाता है। अज्ञात नम्बर से फोन पर स्वयं को बैंक संस्था अधिकारी अथवा प्रतिनिधि एवं आपके निजी गोपनीय क्रेडिट कार्ड, डेबिट कार्ड, महत्त्वपूर्ण OTP नम्बर की जानकारी प्राप्त करने हेतु कहना फिशिंग कहलाता है। इन्टरनेट पर लगातार पीछा करना या बिना मर्जी के डिजिटल प्लेटफार्म पर सम्पर्क स्थापित करना, दुर्भावनावश पूर्ण इरादे से साइबर स्टाकिंग कहलाता है। महत्त्वपूर्ण डाटा चोरी करना, हैकिंग कर उपर्युक्त प्रकार से अनेक साइबर अपराध निरन्तर बढ़ रहे हैं। अतः ऑनलाइन साइबर अपराध की शिकायत व े ब प ा ट ॅ ल https://cybercrime.gov.in पर की जा सकती है। इन्टरनेट के अधिकारों का उल्लंघन करने वाली गतिविधियों के नियमन हेतु सूचना प्रौद्योगिकी अधिनियम लागू किया गया है जिसमें प्रदत्त विधि धाराएँ इन्टरनेट यूजर को सशक्त बनाती हैं और साइबर स्पेस को सुरक्षित रखने का पूर्ण प्रयास करती हैं। आज विद्यार्थियों को इन विधि धाराओं एवं दण्ड प्रावधान के बारे में जानकारी प्रदान करने में शिक्षकों की भूमिका अत्यंत महत्त्वपूर्ण मानी जा सकती है।

पाठक वर्ग निम्न लिंक पर क्लिक करके ट्रेनिंग मॉड्यूल में जाकर साइबर सिक्योरिटी से संबंधित आईईसी सामग्री डाउनलोड कर प्रयोग कर सकते है।

लिंक –

https://drive.google.com/drive/folders/1r-W0XfDgqVF1Rle3awHkjp-LAOz8W3Qo?usp=sharing

सहायक निदेशक
राजस्थान स्कूल शिक्षा परिषद जयपुर।
मो. 7014527885

पर्यावरण संरक्षण का आधार : धर्म एवं संस्कृति

-डॉ. गौरीशंकर प्रजापत

पर्यावरण हमारे जीवन का मूलभूत आधार है, जो हमें सांस लेने के लिए वायु, पीने के लिए पानी, खाने के लिए भोजन तथा रहने के लिए भूमि मुहैया कराता है।

इसके साथ ही मनुष्य का शारीरिक एवं मानसिक विकास उसके परिवेशीय वातावरण पर ही निर्भर करता है। पृथ्वी पर पाए जाने वाले वन, सागर, नदी, पर्वत, पशु– पक्षी ,फल– फूल, वनस्पतियां, जैविक– क्रिया कलाप आदि मिल कर एक संतुलित पर्यावरण का निर्माण करते हैं। हमारा विकास एवं सुख–समृद्धि भी इन्हीं तत्वों पर आधारित है।

पर्यावरण का मुद्दा पृथ्वी पर मानव जाति के अस्तित्व और उसके समस्त क्रियाकलापों से जुड़ा है। प्रति पर विजय मानवता के विकास का एक लक्ष्य रहा है। यह सत्य है कि मानवता के लिए विकास जरूरी है लेकिन अनियंत्रित विकास हमारे सामने ग्लोबल वार्मिंग जैसी स्थिति उत्पन्न कर रहा है और अभी से इस पर नियंत्रण नहीं किया गया तो यही विकास विनाश के रूप में परिवर्तित हो जाएगा। इस विनाश से कोई व्यक्ति, परिवार, समाज, देश व महाद्वीप ही नहीं, बल्कि संपूर्ण पृथ्वी प्रभावित होगी और हो भी रही है। पर्यावरण सुरक्षा पृथ्वी के अस्तित्व का प्रश्न बन चुकी है। विकास की अंधी दौड़ में पर्यावरण सुरक्षा की दिशा में हम बुरी तरह पिछड़ गए हैं। बढ़ती आबादी की आवश्यकताओं की पूर्ति के लिए प्रति के अंधाधुंध दोहन के कारण पर्यावरण दिन–प्रतिदिन असंतुलित होता जा रहा है।

प्राणी जगत प्रति का अभिन्न अंग है। यह पर्यावरण की परिधि में रहकर क्षमताओं एवं स्वभाव के अनुसार कार्य करते रहते हैं। आदि मानव प्रति की गोद में जन्मा और प्रति भी उनके जीवन का एक प्रमुख आधार बनी। मानव जब जन्म लेता है तो सबसे पहले उसकी मुलाकात प्रकृति से होती है। उसके निपट अकेलेपन में अगर कहीं आकर्षण, साहचर्य का भाव था, तो वह प्रति के प्रति था।

मनोविज्ञान की ष्टि से मनुष्य ने प्रति को देखा और उसने बहुत कुछ सीखा है और सफलता की यात्रा प्रति के सहारे पूरी की है। सफलता की यात्रा में न जाने कितनी बार प्रति से दूर हटा है, तो कितनी बार नज़दीकियां बनाई है। प्रकृति ने मानव को संजीवनी रूपी बूटी प्रदान करने वाला हरा भरा पर्यावरण एवं साफ सुथरा परिवेश दिया है।

वैदिक ऋषियों ने वैदिक मंत्रों में वृक्षों की वर्षों की उपयोगिता प्रतिपादित करते हुए वृक्ष सरंक्षण की ओर हमारा ध्यान आकर्षित किया है। ऋग्वेद के दसवें मंडल के एक मंत्र में कहा गया है कि औषधियां मातृरूप हैं। जिस प्रकार माता दूध से अपनी संतान का पालन पोषण करती है उसी प्रकार वनस्पतियां भी अनेक भोज्य पदार्थ, उपयोगी वस्तुएं प्रदान कर हमारा भरण पोषण करती है।

शतं वो अम्ब धामानि सहस्रमुत वो रुह।
अधा शतक्रत्वो यूयमिमं मे अगंद त।।

1. मानव जन्म से ही पर्यावरण के विभिन्न तत्वों के संपर्क में समाहित रहा है। वह पेड़–पौधे, पशु–पक्षी, नदी– नाले, फल–फूल, हवा–पानी, वर्षा, जंगल, पर्वत, भूकंप, अकाल, तूफान, डांफर आदि अनेक प्रातिक तत्वों से अवगत रहता है। अतः मानव को पर्यावरण के प्रति जागरूक करने के लिए हमारे साहित्यकारों एवं कवियों ने प्रति के प्रति प्रेम आकर्षण जागृत करने का भरसक प्रयास किया है।

2. पर्यावरण दो शब्दों परी और आवरण से मिलकर बना है। परी का अर्थ है सभी ओर तथा आवरण का अर्थ है घेरा अर्थात जो हमें सभी ओर से घेरे हुए हैं वही पर्यावरण हैं।

अतः पर्यावरण शब्द का शाब्दिक अर्थ है कि चारों ओर से ढका हुआ, चारों ओर लगा पर्दा, पास आने वाले घातक पदार्थों को रोकना आदि। उपर्युक्त परिभाषा से यह सिद्ध होता है कि पर्यावरण ही हमारा

रक्षक है ,साथी है, सहयोगी है, लेकिन हमने हमारे रक्षक को ही भक्षक बना लिया है। बाड़ खेत ने खाय। बाड़ ही खेत को खाने लगी है। मनुष्य ने मानव सभ्यता के उदय होने के साथ ही मानव विकास की अंधी दौड़ दौड़ना शुरू कर दिया और मनुष्य की अनंत इच्छाओं के कारण विज्ञान ने खगोलीय वस्तुओं जैसे चाँद–सितारों को आम व्यक्ति के करीब ला दिया परंतु विकास की इस दौड़ में पर्यावरण के संतुलन की अनदेखी करने से ग्लोबल वार्मिंग जैसी समस्या ने विकराल रूप धारण कर लिया है। ग्लोबल वार्मिंग से ग्लेशियरों की बर्फ तेजी से पिघलने के कारण सागरों का जलस्तर बढ़ रहा है। वैज्ञानिकों के अनुसार इस तरह समुद्र का जल स्तर बढ़ता रहा तो वह दिन दूर नहीं जब समुद्र के समीपस्थ शहरों और देशों का नामोनिशान मिट जाएगा। जबकि इसके विपरीत जहाँ मानव जाति का विकास हुआ है, उस क्षेत्र के आसपास की नदियों का जलस्तर निरंतर गिर रहा है, और आने वाले वर्षों में पीने के पानी की समस्या बड़ी चुनौती के रूप में उभर कर सामने आएगी।

प्रति का हम शोषण करते हैं और जिस चीज का शोषण करते हैं उसे हम बिल्कुल नष्ट कर देना चाहते हैं। हमारी परंपरा और संसति में हमेशा पर्यावरण का पूजन किया जाता रहा है पर्यावरण की चीजों में देवत्व माना गया है और इसीलिए जीवित वृक्ष को काटना पाप समझते हैं।

विश्व के पहले पर्यावरणविद् गुरु जाम्भोजी ने मानव जीवन को सुरक्षित करने के लिए पर्यावरण के प्रति अपनी शब्दवाणी से सचेत किया है। बिश्नोई धर्म की स्थापना के साथ उनतीस धर्म नियम बनाए उनमें पर्यावरण संरक्षण मूल मंत्र है । इस प्रकार उन्होंने धर्म को पर्यावरण से जोड़कर मानव जाति के लिए अतुलनीय कार्य किया। उनके विचार केवल समाज सुधार के लिए नहीं थे अपितु युगान्तकारी एवं क्रांतिकारी है। आज पर्यावरण क्षरण पूरे विश्व की ज्वलंत समस्या है, वहीं गुरु जांभोजी के सदुपदेशों का अनुसरण आवश्यक है। गुरु जांभोजी के उनतीस धर्म नियमों में हरे वृक्षों को काटना व जीव हत्या करना पूर्ण निषेध है। 'जीवेषु दया कुर्यात्' अर्थात जीवों पर दया करनी चाहिए। जिस प्रकार मनुष्य को अपने प्राण प्यारे हैं उसी प्रकार पशु, पक्षी, कीड़े, मकोड़े आदि जीवों को भी अपने प्राण प्रिय है। 'हरित वृक्षा नोच्छैद्याः' अर्थात हरे वृक्ष नहीं काटे जाने चाहिए क्योंकि इनमें भी जीवात्मा विराजमान होती है। गुरु जांभोजी ने अपने उपदेशों में कहा है 'जीव दया पालनी, रूंख लीलों नहीं घावे' अर्थात जीवों पर दया करना और हरे वृक्षों को नहीं काटना, प्रति में पर्यावरण सन्तुलन को बनाए रखने के लिए जैविक घटकों, प्राणी व वनस्पति का अहम् महत्त्व है।

प्रति के साथ मानव का अटूट संबंध चिरकाल से रहा है। प्राचीन काल से कला, साहित्य एवं संसति में प्रति से मानव की निकटता पाई जाती है।

भारतीय संसति ने प्रति को देवता रूप माना है । यह प्रपंच पंचभूतों से निर्मित है इनका प्रभाव प्रति में सर्वत्र विद्यमान हैं। भक्ति और विश्वास के साथ प्रति संरक्षण की भावना जागृत होती है। प्रति की हर एक चीज जैसे– पेड़, पशु–पक्षी, नदी –तालाब, पर्वत, सागर आदि को ईश्वरीय रूप देकर प्रार्थना एवं पूजा के योग्य बना दिया गया है ।

पर्यावरण की चीजों को देवत्व माना गया है। हमारे दिन का प्रारम्भ सूर्य आराधना से शुरू होता है, जो विश्व में जीवन का आधार है। देश में नदियों को माता तथा हिमालय पर्वत के वनों को शिव की जटाएं मान कर पूजा जाता है, तो गोवर्धन पर्वत को पूज कर उसकी परिक्रमा करते हैं । नव निर्माण से पूर्व धर्म शास्त्र के अनुसार शुभ मुहूर्त में भूमि पूजन किया जाता है। तुलसी के पौधे की पूजा करते हैं, उसके पत्ते तोड़ने से पूर्व क्षमा मांगते हैं। पीपल वृक्ष की पूजा की जाती है। खेजड़ी को तो राजस्थान का कल्पवृक्ष कहा गया है।

वेदों में धर्म एवं पर्यावरण के परस्पर घनिष्ठ संबंधों की वैज्ञानिक व्याख्या मिलती है। ऋग्वेद में वृक्षों के महत्त्व पर प्रकाश डालते हुए कहा गया है–

मूलतोः ब्रह्मा रूपायः
मध्यतो विष्णु रूपायः।
अग्रतः शिव रूपायः
वृक्ष राजाय ते नमः।।
६–ऋग्वेद

ऋग्वेद में कहा गया है कि जिस वृक्ष के मूल में ब्रह्मा का निवास है, तने में विष्णु का निवास है एवं अग्रभाग में शिव का निवास है, उस वृक्षराज को मैं नमन करता हूँ। श्रीमद् भगवत् गीता में पीपल वृक्ष की महत्ता पर प्रकाश डाला गया है। पीपल वृक्ष निरंतर जीवन दायिनी हवा ऑक्सीजन का विसर्जन करता रहता है जो सभी जीव जंतुओं के जीवन के लिए अनिवार्य है । पीपल की उपयोगिता को ध्यान में रखते हुए हमारी माताएं एवं बहनें पीपल पेड़ की पूजा करती हैं।

इस सम्बन्ध में एक कहावत प्रसिद्ध है–'गाँव गाँव खेजड़ी– गाँव गाँव गोगो'। वृक्षों और पर्वतों के साथ साथ समुद्र, तालाब, और नदियों के घाट की पूजा के साथ परिक्रमा करने की परम्परा हमारे धर्म में है। इसी प्रकार जीव–जन्तुओं को भी महत्त्व दिया गया है यथा–गणेश जी का वाहन चूहा, शिव जी का वाहन बैल, दुर्गा जी का वाहन सिंह, शीतला माता का वाहन गधा, सरस्वती जी का वाहन हंस, लक्ष्मी जी का वाहन उल्लू और कार्तिकेय जी का मोर है आदि। इस तरह महत्त्वपूर्ण गुणों वाले वृक्षों, पौधों, पशु–पक्षियों, जीव–जन्तुओं आदि को धर्म से जोड़ा गया है।

वन्य जीवों के प्रति प्रेम तथा आदर भावना भारतीय सँसति की महत्त्वपूर्ण पहचान है। यहाँ पर विभिन्न जलस्रोतों की पूजा की जाती है, गंगा नदी को माता कहकर पुकारा जाता है। हिंदू देवी–देवताओं की मूर्तियों एवं चित्रों के साथ वन्य जीवों को दर्शाना वन्य जीवो के प्रति प्रेमभाव दर्शाता है। ये सभी इस बात के द्योतक है कि हमें वन्य प्राणियों की रक्षा करनी चाहिए ताकि हमारा पर्यावरण संतुलन बना रहे। इससे पर्यावरण सरक्षण संभव होता है। पुराणों और ग्रंथों में पौधारोपण की महिमा के बारे में कहा गया

है। इसके आधार पर जो भी वृक्षारोपण करता है वह स्वर्ग मे और जो नहीं करता है वह नरक में जाता है। भारतीय पुराणों, इतिहासों एवं दर्शनों का सर्जन वन के स्वच्छ वातावरण में हुआ है।

पर्यावरण की सुरक्षा के लिए जैव–विविधता का महत्त्व सबसे अधिक है। केवल मानव का नहीं बल्कि सभी जीव–जंतुओं का प्रति पर समान अधिकार है। मानव और पशु–पक्षियों की आवश्यकताओं की पूर्ति प्रति से होती है। पारिस्थितिकी के संतुलन के लिए जल, वायु, पशु–पक्षी वृक्ष, पौधे, नदी, नालों, पर्वतों आदि का होना अनिवार्य है।

प्रति और मानव के बीच आदान–प्रदान की क्रिया–प्रतिक्रिया की व्यवस्था थी। इन व्यवस्थाओं में यदि कोई उतार–चढ़ाव आए तो इसका परिणाम प्रतिकूल होता है।

समकालीन परिश्य इसका जीवंत दस्तावेज है। कोरोना काल में मनुष्य सांस के लिए तड़प तड़प कर मर रहा है, क्योंकि हमने प्रति को कुछ दिया नहीं तो लेने का अधिकार भी नहीं है। प्रति हमेशा देने वाले को चार गुना वापस देती है। प्रति में मुख्य रूप से वन है। हमारी कला साहित्य एवं संसति का आविर्भाव वन में हुआ है। निर्मल हवा, शुद्ध जल, छायादार पेड़, विष रहित खाद्य पदार्थ, जीवन दायिनी ऑक्सीजन आदि का खजाना है हमारे वन।

ऐसे शांत एवं स्वच्छ व अंतरिक्ष में तपस्या में लीन हमारे ऋषिवर कितने महान एवं गतिशील बने हुए थे। आम बात है कि स्वस्थ मन में नयी चिन्ताओं और नवीन सृष्टियों का बीजयापन होता है। पेड़ों की शाखाओं में हवा के झोंकों से उत्पन्न मधुर स्वर, पक्षियों, नदियों की कल–कल, छल–छल नाद से उत्पन्न मधुर शब्द संगीतकला के आविर्भाव का कारण बना। प्राचीन गुफाओं में निवासियों से चित्रकला का विकास हुआ। कई सालों तक वनों में घूमने के कारण मिली ताजगी एवं ऊर्जा से श्री राम ने रावण का वध आसानी से कर दिया था। उसी प्रकार पांडवों ने अपने राज्य की प्राप्ति इन वनों की स्वच्छता से हुई। रामायण और महाभारत भारतीय आत्मशक्ति के स्रोत है। शकुंतला वृक्षों को पानी दिए बिना आप पानी ग्रहण नहीं करती थी। पार्वती देवी ने देवता को पुत्र समान मानकर माँ के दूध के समान पानी पिलाकर बढ़ाया था। एक सच्चे परिस्थितिवादी एवं पर्यावरणवादी भगवान ष्ण और उनके वृंदावन को हम कैसे भूल सकते हैं। इसी प्रकार गुरु जंभेश्वर ने अपने बिश्नोई पंथ की स्थापना एक वृक्ष के नीचे बैठकर की थी। हमारे धर्म ग्रंथों में प्रति के प्रमुख घटक जल के संरक्षण की बात कही गई है। मनुस्मृति में भगवान मनु ने सृष्टि की रचना से लेकर सामाजिक व्यवस्थाओं को स्थापित करने तक का वर्णन किया है। इसके सभी 12 अध्यायों में जल के महत्त्व पर प्रकाश डाला है। वेदों में जल को 'आपो देवता' कहकर संबोधित किया है। पुराणों में जल को ही जगत की उन्नति का आधार माना गया है। महाभारत में भीष्म ने युधिष्ठिर के पूछे जाने पर विस्तार से जल का महत्त्व बताया है। महाभारत में कहा गया है कि तलाब बनाने वाला मनुष्य तीनों लोकों में सर्वत्र पूज्य होता है। विदुर नीति में विदुर ने नदी को पूरे जीवन से जोड़ते हुए जल को तीर्थ कहा है एवं जल को जीवन का रक्षक माना है।

हिंदू धर्म में विभिन्न जल तीर्थों की महत्ता का वर्णन किया है। चाणक्य नीति में नीतिगत सूत्रों का समावेश है। इसमें कहा गया है कि बावड़ी, कुआं एवं तालाब आदि जल स्रोतों को नष्ट करने वाला व्यक्ति मलेच्छ होता है। गुरु ग्रंथ साहिब ने जल को जीवन दाता और भक्ति रूप माना है। इसमें वायु को गुरु, पानी को पिता, धरती को माता माना है। हिंदू धर्म में कहा गया है कि जल संरक्षण मानव का सबसे बड़ा धर्म है। हिंदू धर्म में जल पात्र से ही यज्ञ हवन एवं सभी संस्कार संपन्न होते हैं।

प्रति आजकल एकदम बदल गई है। प्रति पर मानव का बलपूर्वक अधिकार नाश का कारण बन गया है। वे निर्दयता से अपने स्वार्थों की पूर्ति के लिए वृक्षों को काटते हैं, पर्वतों को खोदते हैं, तालाब एवं झीलों में मिट्टी डालकर वहाँ पर बड़े–बड़े मॉल, फ्लैट एवं कारखाने बनाते हैं। परिणाम स्वरूप बाढ़, सूखा, प्रातिक संसाधनों का अभाव, अम्लीय वर्षा, जल–वायु प्रदूषण, त्वचा कैंसर, कोरोना जैसी महामारी, ओजोन परत में छिद्र, भूस्खलन, मरुस्थलीकरण आदि प्रति को समाप्त करते हैं। फैक्ट्रियों से निकलने वाला अपशिष्ट, नदियों में डाले जाने वाला कचरा, खेती में प्रयोग होने वाले कीटनाशकों से मिट्टी की ऊर्वरता नष्ट हो जाती है। मानव और प्रति के पुराने रिश्ते आज समाप्त होते जा रहे हैं। इन्हीं विषयों को आधार बनाकर अनेक साहित्यकारों ने अपनी कलम चलाई है। काव्यों के माध्यम से मानव और प्रति के गहरे संबंधों को प्रकट किया है। ये कविताएं इन समस्याओं को उभारने और उजागर करने में सक्षम निकलती है।

उपर्युक्त सभी तथ्यों का विश्लेषण करने पर हम इस निष्कर्ष पर पहुँचे हैं कि धर्म का प्रति संरक्षण में विशेष योगदान है। धर्म सृष्टि का आधारभूत तत्व है एवं धर्म में कमी पर्यावरण में गुणात्मक कमी का कारण बनती है। पर्यावरण के परिप्रेक्ष्य में आयुर्वेद का सूत्र पर्यावरण संरक्षण के क्षेत्र में मील का पत्थर साबित हो सकता है।

सुखार्था सर्वभूतानां मता सर्वा
प्रवशत्तयः।
सुखं च न बिना
धम्प्रत्तस्माद्धर्मपरो भवेत्।।

अर्थात् सभी प्राणी अपने जीवन काल में सुख प्राप्त करने के लिए हमेशा तत्पर रहते हैं और वह सुख बिना धर्म के प्राप्त नहीं होता। अतः मानव को सदैव धर्मोचित आचरण में प्रवृत्त रहना चाहिए।

विभागाध्यक्ष, राजस्थानी विभाग
श्री नेहरू शारदा पीठ
पीजी महाविद्यालय बीकानेर
मो.-9414582385

बाल मनोविज्ञान और शिक्षक

-हंसराज गुर्जर

बाल मनोविज्ञान में बालकों के मानसिक विकास का अध्ययन किया जाता है। बालकों की गर्भावस्था से लेकर किशोरावस्था तक का अध्ययन इसमें शामिल है। बच्चे के व्यवहार के बारे में प्राथमिक शिक्षक को जानना अति आवश्यक माना गया है। क्योंकि जब तक शिक्षक बच्चों के बारे में जानेगा नही, तो वह बच्चों के साथ अच्छी तरह से कार्य नहीं कर सकेगा। उसे बच्चों की रुचियों, स्वभाव व क्रमिक विकास आदि के बारे में जानना बहुत जरूरी है। जब ही वह बच्चों के साथ सहजता से उन्हें सीखने के भरपूर अवसर उपलब्ध करवा सकेगा। यदि कोई शिक्षक यह समझता है कि बच्चे तो कोरा कागज होते हैं, मिट्टी का लौंदा है, जैसा चाहे वैसा बनाया जा सकता। ऐसी मान्यता वाले शिक्षक के सीखने–सिखाने के काम भी इसी धारणा से ओतप्रोत होंगे। वह स्वयं ज्यादा काम करेगा, बच्चों की सहभागिता कम रखेगा, मतलब सीखना–सिखाना शिक्षक केन्द्रित हो जाएगा। इसके विपरीत यदि शिक्षक इस धारणा को लेकर काम करता है कि हर बच्चा सीख सकता है, सबमें व्यक्तिगत भिन्नता होती है। कोई जल्दी, कोई धीमी गति से सीखता है। इस मान्यता के साथ काम करने वाले शिक्षक बच्चों की आवश्यकता, रुचियों, स्तर का ध्यान रखकर ही सीखने–सिखाने की गतिविधियां उनके साथ करता है। वह बच्चों के लिए मार्गदर्शक के रूप में ज्यादा से ज्यादा सीखने के अवसर उपलब्ध कराता है। अर्थात यहाँ सीखने–सिखाने में बच्चा केंद्र में रहता है। इसे ही बाल केंद्रित शिक्षा कहते हैं। बच्चों को करके सीखने के ज्यादा से ज्यादा मौके (अवसर) देना, उनकी बातों को ध्यान से सुनना, प्रश्न करने के लिए प्रोत्साहित करना, उनकी बात का सम्मान करना, जिज्ञासाओं को शांत करना, बच्चों को मौखिक अभिव्यक्ति के पर्याप्त अवसर उपलब्ध करवाना।

इस प्रक्रिया से बच्चों में शिक्षक के प्रति प्रेम व विश्हवास बढ़ता है। कक्षा–कक्ष में भयमुक्त वातावरण बाल मित्र बनता है। बच्चे आनंद व स्वतंत्रता के साथ सीखते हैं। ऐसे माहौल में बच्चों को रटना नहीं पड़ता है। शिक्षक से बार–बार बातचीत करके अपनी समझ को मजबूत करते हैं। बच्चे खुद करके सीखने से उनमें आत्मविश्वास व आत्मबल पैदा होता है। बच्चे अपनी सोचने–समझने की शक्ति को लगातार बढ़ाते रहते हैं। उन्हें कोई बात समझ में नहीं आने पर वह शिक्षक से सवाल भी करते हैं। जैसे बच्चों ने मुझसे शिक्षण के दौरान पूछा है।

एक बार में बच्चों को बीज उपचार के बारे में बता रहा था कि हम बीजों को पानी में डालकर भी उनकी पहचान कर सकते हैं। जो अच्छे बीज होते हैं वह वजन मे भारी होते हैं। वह पानी में डालने पर नीचे बैठ जाते हैं। हल्के, खोखे व खराब बीज पानी में तैरने लगते हैं। इतना सुनते ही कक्षा 5 का एक बच्चा बोला सर मिर्ची के बीज तो सारे के सारे पानी में ही तैरते हैं। फिर क्या वह सारे बीज खराब होते हैं?

इसी तरह एक बार में बच्चों को जल ही जीवन है अध्याय पढ़ा रहा था। जल का महत्त्व बताते समय मैंने कहा कि जल के बिना कोई भी जीव जिंदा नहीं रह सकता है। तो बच्चे ने सवाल किया सर चींटा तो कभी पानी नही पीता है। मैंने उसको पानी पीते कभी नहीं देखा। क्या आपने देखा है ? फिर वह कैसे जिंदा रहता है ? एक बार कक्षा 2 का बच्चा प्रार्थना सभा में मुझसे पूछता है सर आप गीत और कविताएं कहाँ से लाते हो ?एक दूसरे बच्चे ने पूछा सर भगवान भी मरते हैं क्या ?

इस तरह के सवाल करने का अर्थ है की बच्चे शिक्षण में पूर्ण सहभागिता के साथ अपनी समझ को पक्का कर रहे हैं। अपने अनुभवों से जोड़ते हुए चल रहे हैं। व्यवहार में भी अपने कक्षा शिक्षण को ले जा रहे हैं।

पर इस तरह के सवाल बच्चे जब ही कर पाते हैं। जब बोलने की आजादी होती है। उनकी बात को ध्यान से सुना जाता है। उनकी जिज्ञासाओं को शांत किया जाता है। उनका शिक्षक में प्रेम और विश्वास होता है। यह सब निडर बच्चा ही कर सकता है। इसी तरह की कक्षाओं को हम जीवंत कक्षाएं कहते हैं। अध्यापक बच्चों के साथ मित्रवत् व्यवहार करता है। एक सफल शिक्षक अपने बच्चों के खेलने, काम करने के तरीके, दोस्तों की संगति आदि से ही बच्चों की रुचियों, स्वभाव के बारे में जान लेता है। अच्छा शिक्षक पहले उनकी रुचियों को जानता है। उसके बाद ही वह उनके साथ योजना बनाकर काम करता है। पढ़ने–पढ़ाने का कार्य बेहतर करने के लिए बाल मनोविज्ञान की जानकारी प्राथमिक शिक्षक को होना बहुत ही आवश्यक है यह मैं मानता हूँ कि इसके बिना शिक्षक शिक्षण प्रक्रियाओं व सीखने–सीखाने में बच्चों के साथ पूरा–पूरा न्याय नही कर पाएगा। ऐसा मेरा मानना है।

अध्यापक रा.उ.मा.वि. बीलोता,

ब्लाक- उनियारा, जिला- टोंक

मो.नं. 9829434517

गुरु पूर्णिमा

गोविन्द नारायण शर्मा

भारत देश विश्व गुरु रहा है। **वन्दे नितरां भारत वसुधां**। भारतीय संस्कृति में अनेक त्यौहार, पर्व, उत्सव व जयन्तियाँ विभिन्न, धार्मिक, सांस्कृतिक, आध्यात्मिक, राष्ट्रीय पर्व के रूप में वर्ष पर्यन्त मनायी जाती है। जिनका अपना–अपना सांस्कृतिक, धार्मिक गौरव एवं आध्यात्मिक महत्त्व है। आज इसी कारण विश्व के अन्यान्य देश भारत से सांस्कृतिक व आध्यात्मिक सम्बन्ध प्रगाढ़ कर नयी पीढ़ी को सुसंस्कृत, सुशिक्षित बनाने के लिए सांस्कृतिक आदान प्रदान में लगे हैं।

वेदों को श्रुति कहा गया है, जिसका अर्थ सुनने से है। वेद अपौरुषेय है। श्रुति परम्परा से गुरु से शिष्य जो मंत्र सुनता है वह कण्ठस्थ कर इस परम्परा को आगे बढ़ाता रहता। इस प्रकार वैदिक परम्परा अक्षुण्ण बनी रही। हर वर्ष की भाँति इस वर्ष भी गुरु पूर्णिमा (आषाढ़ शुक्ल पूर्णिमा) बुधवार, विक्रम संवत, 2079 को तद्नुसार–13 जुलाई, 2022 को मनायी जाएगी। इसे व्यास पूजा के नाम से भी जाना जाता है। गुरु पूर्णिमा पर्व महर्षि वेदव्यास को प्रथम गुरु मानते हुए उनके सम्मान में मनाया जाता है। महर्षि वेदव्यास ही थे जिन्होने सनातन धर्म के चारों वेदों की व्याख्या की थी। पौराणिक मान्यता के अनुसार माना जाता है कि आषाढ़ पूर्णिमा को महर्षि वेदव्यास जी का जन्म हुआ था। चूँकि गुरु वेदव्यास ने पहली बार मानव समाज के लिए चारों वेदों को संहिता बद्ध किया था एवं उनका ज्ञान समस्त जन को दिया,इसलिए वे सभी के प्रथम गुरु हुए। उनके जन्म दिवस पर उनके सम्मान में यह पर्व मनाया जाता है। इसे व्यास पूर्णिमा भी कहा जाता है। इस दिन गुरु से मंत्र दीक्षा भी प्राप्त करते हैं। गुरु वह है जो ज्ञान दे। संस्कृत भाषा के इस शब्द का अर्थ शिक्षक एवं उस्ताद से लगाया जाता है। गुरु अन्धकार को दूर करने वाला है। विद्यार्थी के लिए एक श्रद्धेय व्यक्ति है,परामर्श दाता के रूप में सेवा करता है,जो मूल्यों को ढालने में मदद करता है। अनुभवात्मक आत्मज्ञान को उतना ही साझा करता है, जितना कि शाब्दिक ज्ञान जीवन में एक अनुकरणीय, प्रेरणादायक स्रोत और जो एक विद्यार्थी के आध्यात्मिक विकास में मदद करता है। हिन्दु तथा सिख धर्म में गुरु का अर्थ धार्मिक एवं आध्यात्मिक नेतृत्त्व से भी लगाया जाता है। आध्यात्मिक ज्ञान करवाने वाले गुरु का स्थान इन सब में ऊपर माना गया है।

गुरु पूर्णिमा का पर्व आषाढ़ माह की पूर्णिमा को ही क्यों मनाया जाता है–आषाढ़ माह की पूर्णिमा को चुनने के पीछे गहरा अर्थ है। गुरु पूर्णिमा सिर्फ एक प्रतीक नहीं है। गुरु तो पूर्णिमा के चन्द्रमा के समान है,जो पूर्ण प्रकाशमान है। शिष्य, आषाढ़ के बादलों की तरह जो हवा के झोंको से इधर उधर उडकर तितर–बितर हो जाते हैं। आषाढ़ में चन्द्रमा बादलों से घिरा रहता है,जैसे बादल रूपी शिष्यों से चन्द्ररूपी गुरु घिरे रहते हैं। शिष्य अन्धेरे बादलों की तरह ही है उसमें भी गुरु चन्द्रमा के समान चमक सके। तमाच्छादित वातावरण में भी प्रकाशमान हो सके तभी गुरु पद की प्रतिष्ठा है। जीवन में गुरु व शिष्य के महत्त्व को आने वाली पीढ़ी को बताने के लिए यह पर्व आदर्श है । यह पर्व श्रद्धा भाव का पर्व है। गुरु का आशीर्वाद सभी के लिए कल्याणकारी एवं ज्ञानवर्धक है। इस दिन गुरु पूजन के बाद गुरु का आशीर्वाद प्राप्त करना चाहिए।

सर्वेषाम् दानानां ब्रह्मदानं विशिष्यते।
सभी प्रकार के दानों में ब्रह्मदान
अर्थात् विद्या का दान ही विशिष्ट है।
श्रद्धावान् लभते ज्ञानम् तत्परः संयतेन्द्रियः।
ज्ञानं लब्ध्वा परां शान्तिमचिरेणाधिगच्छति ।।
गीता अध्याय 4 श्लोक 39

श्रद्धावान् व्यक्ति ही ज्ञान प्राप्त कर सकता है, जिन्होंने अपने मन और चंचल इन्द्रियों को नियंत्रित कर लिया है। वे दिव्य ज्ञान प्राप्त करते हैं। इस प्रकार के पारलौकिक ज्ञान के माध्यम से परम् शान्ति को प्राप्त करते हैं। बिना श्रद्धा के व्यक्ति शिक्षित तो हो सकता है,परन्तु ज्ञानी नहीं हो सकता है। जिससे ज्ञान प्राप्त किया जावे उसके प्रति श्रद्धा, विश्वास, नम्रता का भाव होना चाहिए।

गुरुपदिष्टःवाक्येषु विश्वासः श्रद्धा।।

गुरु के श्रीमुख द्वारा उपदेश रूप में कहे गए वाक्यों पर विश्वास करना ही श्रद्धा है। श्रद्धालु व्यक्ति ही ज्ञान व विद्या प्राप्त कर सकता है। वैसे तो किसी भी तरह का ज्ञान देने वाला गुरु कहलाता है। लेकिन अध्यात्म का ज्ञान देने वाले सद्गुरु कहलाते हैं। दीक्षा प्राप्ति जीवन की आधार शिला है। इससे मनुष्य को दिव्यता तथा चैतन्यता प्राप्त होती है, तथा वह अपने जीवन के सर्वोच्च शिखर पर पहुँच सकता है। दीक्षा आत्म संस्कार करवाती है। दीक्षा प्राप्ति से शिष्य सर्वदोषों से मुक्ति प्राप्त कर सकता है। इसलिए कहा गया है –

यह तन विष की बेलड़ी,
गुरु अमृत की खान।
शीश कटाए गुरु मिले,
फिर भी सस्ता जाण ।।

मानव शरीर अनेक प्रकार के दुर्गुणों से युक्त है और गुरु अमृत का सागर है जो शिष्य के दुर्गुणों को दूर कर सद् मार्ग पर ले जाता है। सिर कटवाने पर भी यदि सद्गुरु मिले तो सस्ता है, कोई बुराई नही है।

सद्गुरु उच्च कोटि के साधक, विद्वान, लोक कल्याणकारी और शिष्य के लिए ईश्वर तुल्य होते हैं। शिष्य की यह भावना, श्रद्धा, निष्ठा, समर्पण ही उसे परमात्मा तक पहुँचाती है। सद्गुरु की दिव्य चेतना शिष्य साधक का मार्गदर्शन संरक्षण जिन्दगी के साथ भी जिन्दगी के बाद भी उसके हृदय में निवास करते हुए करती रहती है। श्रीमद् भगवत्गीता में सच्चे गुरु को तत्त्वदर्शी सन्त कह कर व्याख्या की गयी है। गीता में स्पष्ट कहा है –

ऊर्ध्वमूलम् अधः शाखम्
अश्वत्थम् प्राहुः अव्ययम् ।
छन्दासि यस्य प्रणानि यः
तम् वेदः सः वेदवित् ।।
(गीता अध्याय 15 श्लोक 1)

ऊपर को मूल वाला, नीचे को तीनों गण रूपी शाखा वाला उल्टा लटका हुआ संसार रूपी पीपल का वृक्ष जानों इसे अविनाशी कहते हैं। क्योंकि उत्पत्ति प्रलय चक्र सदा चलता रहता है जिस कारण से इसे अविनाशी कहा है। इस संसार रूपी वृक्ष के पत्ते आदि छन्द हैं अर्थात् भाग है, जो इस संसार रूपी वृक्ष के सर्व भागों को तत्त्व से जानता है। वह वेद के तात्पर्य को जानने वाला है। वह

तत्त्वदर्शी संत है। गीता में कहा है कि परम अक्षर ब्रह्म स्वयं पृथ्वी पर प्रकट होकर अपने मुख कमल से तत्त्व ज्ञान विस्तार से बोलते हैं।

वन्दे बोधमयं नित्यं गुरुं शंकररुपिणम्।
यमाश्रितो हि वक्रोऽपि चन्द्रः सर्वत्र वन्द्यते।।
(राचमाबा 3)

ज्ञान मय नित्य शंकर रूपी गुरु की मैं वन्दना करता हूँ,जिनके आश्रित होने से ही टेढ़ा चन्द्रमा भी सर्वत्र वन्दनीय है। अर्थात् गुरु की कृपा होने पर वक्र चन्द्रमा शिवजी के मस्तक पर विराजमान होकर जगत के द्वारा सदैव वन्दित होता है। गुरु का आश्रय पाकर शिष्य अपने जीवन को धन्यकर जगत वन्द्य हो जाता है।

बन्दउँ गुरु पद कंज कृपा सिंधु नररूप हरि ।
महामोह तम पुंज जासु बचन रबि कर निकर।। (राचमाबा 5)

मैं उन गुरु महाराज के चरण कमल की वन्दना करता हूँ, जो कृपा के समन्दर और नर रूप में श्री हरि ही है, और जिनके वचन महामोह रूपी घने अन्धकार के नाश करने के लिए सूर्य किरणों के समूह है ।

श्रीगुर पद नख मनि गन जोती।
सुमिरत दिब्य दृष्टि हियँ होती।।
दलन मोह तम सो सप्रकासू ।
बड़े भाग उर आवइ जासू ।।
(राचमाबाचौ 3)

श्री गुरु महाराज के चरण नखों की ज्योति मणियों के प्रकाश के समान है। जिसके स्मरण करते ही हृदय में दिव्य दृष्टि उत्पन्न हो जाती है। वह प्रकाश अज्ञान रूपी अंधकार का नाश करने वाला है। वह जिसके हृदय में आ जाता है उसके बड़े भाग्य हैं।

श्रीगुरु चरन सरोज रज
निज मनु मुकुरु सुधारि ।
बरनउँ रघुबर बिमल जसु
जो दायकु फल चारि ।।

सन्त शिरोमणि तुलसी दास जी हनुमान चालीसा के प्रारम्भ में कहते हैं– श्री गुरु महाराज के चरण कमलों की धूलि से अपने मन रूपी दर्पण को पवित्र करके श्री रघुवर जी के निर्मल यश का वर्णन करता हूँ जो चारों फल धर्म, अर्थ, काम और मोक्ष को देने वाले हैं। गुरु की कृपा के बिना यह संभव नही था।

उठे लखनु निसि बिगत सुनि
अरूण सिखा धुनि कान।
गुर तें पहिलेहिं जगतपति
जागे राम सुजान।। 226 बा

रात्रि बीतने पर मुर्गे की बांग कानों में सुनकर लक्ष्मण जी उठे। जगत के स्वामी राम सुजान गुरु से पहले ही जाग गए ।

आचार्य चाणक्य के अनुसार गुरु का स्थान पिता के तुल्य होता है, जिस प्रकार पिता कभी भी अपनी सन्तति के लिए कोई भी अहितकर नही सोचता है, ठीक उसी प्रकार गुरु भी अपने शिष्यों के लिए अनुचित नही सोचता है। गुरु के बताए मार्ग पर चलने वाला व्यक्ति अपने जीवन में कभी भी असफल, निराश नहीं हो सकता है। जीवन में उचित अनुचित की पहचान गुरु ही करवाता है। जो व्यक्ति गुरु का सम्मान करता है,उसके पास सदैव लक्ष्मी व सरस्वती का निवास रहता है। वह व्यक्ति सदैव प्रसन्न रहता है। गुरु के बिना व्यक्ति के जीवन में सफलता प्राप्त करना दुःसाध्य है। गुरु बनना भी कठिन कार्य है। जब व्यक्ति इन्द्रियों को अपने वश में कर ले, तभी वह गुरुत्व को प्राप्त कर सकता है।

सन्त कबीरदास जी ने भी गुरु के महत्त्व को बताते हुए लिखा है–

गुरु गोविन्द दोनों खड़े काके लागूं पाय।
बलिहारी गुरु आपकी गोविन्द दियो बताय।। कबीर दास

मैं गुरु महाराज पर बलिहारी जाता हूँ जिनकी असीम कृपादृष्टि से ईश्वर को पहचानने की दिव्य शक्ति हृदय में प्रकट हुई। गुरु के बिना हम अपने सम्मुख स्थित गोविन्द (ईश्वर) को भी जानने में असमर्थ हैं।

गुरु कुम्हार शिष कुम्भ है
गढि गढि काढै खोट ।
अन्तर हाथ सहार दै
बाहर बाहै चोट।।

गुरु कुम्हार के समान होता है, जो मिट्टी से मटका बनाते समय अन्दर की तरफ हाथ का सहारा देता है, बाहर उस पर जो चोट करता है,उससे वह टूटे नहीं और घड़े का स्वरूप सुन्दर व शीतल जल के योग्य सुपात्र बन सके। ठीक वैसे ही गुरु अपने शिष्य को विपरीत एवं विषम परिस्थितियों में विचलित होने से बचाने हेतु सहारा देकर दिग्भ्रमित होने से बचाकर हर प्रकार की कसौटी पर परख कर सुयोग्य शिष्य बनाता है।

गुरु पारस को अन्तरा,
जानत है सब सन्त।
वह लोहा कंचन करे,
यह करिलये महन्त।।

सभी सन्त पुरुष, विद्वान पारस व गुरु में अन्तर जानते हैं। पारस लोहे को कंचन बनाता है, परन्तु गुरु अपने विद्यार्थी को महान बनाता है। ऐसे अनगिनत उदाहरण मिलते हैं जैसे भगवान कृष्ण, बलराम व सुदामा के गुरु सान्दिपन मुनि हुए जिन्होंने चौंसठ दिनों में चौंसठ कलाएँ व वेद पुराणों का अध्ययन करवाया था। भगवान राम के गुरु वशिष्ठ रहे जिन्होंने श्रीराम जी को समस्त प्रकार से शिक्षित व दीक्षित किया। भगवान परशुराम शिव जी के शिष्य रहे। कौरव पाण्डवों के गुरु द्रोणाचार्य व कर्ण के गुरु परशुराम जी हुए जिन्होंने शास्त्रों एवं शस्त्रास्त्रों की शिक्षा दी। एकलव्य ने गुरु द्रोणाचार्य को अपना मानस गुरु मानते हुए उनकी मिट्टी की मूर्ति बनाकर तीर संधान में निपुणता प्राप्त की व गुरु दक्षिणा में अपने बाएं हाथ का अंगूठा दे दिया। अर्जुन सर्वश्रेष्ठ धनुर्धर बना। स्वामी विवेकानन्द के गुरु रामकृष्ण परमहंस हुए जिन्होंने विश्व बन्धुत्व का पाठ पूरे विश्व को पढ़ाया। शिवाजी महाराज के गुरु समर्थ गुरु रामदासजी हुए जिनसे शिक्षा प्राप्त कर शिवाजी ने देश को पराधीनता की बेड़ियों से आजाद करवाने का स्तुत्य कार्य किया। ऐसे अनेकानेक सन्तों ने अपने गुरुओं से शिक्षा प्राप्त कर अपनी वाणी, वचनों, शिक्षाओं व कृतियों का सृजन कर स्वयं का एवं जगत का कल्याण किया। सिक्खों में गुरु नानक साहब से लेकर 10 गुरु हुए। उन्हीं दस गुरुओं की शिक्षाओं को गुरु ग्रन्थ साहिब के रूप में संकलित किया एवं गुरुवाणी को जीवन का आधार बनाया। इस प्रकार गुरुओं के प्रतिमान सम्मान प्रकट करने के लिए गुरु पूर्णिमा का पर्व मनाया जाता है। साधक साध्य भाव को प्रकट करता है। आज के इस भौतिकवादी युग में गुरु शिष्य के मध्य श्रद्धा, विश्वास को प्रगाढ़ बनाने के लिए आदर्श गुणों का बीजारोपण करने के लिए गुरु पूर्णिमा पर्व की महत्ती आवश्यकता है। ।।इति शुभम्।।

प्रधानाचार्य
रा. उ. मा. वि. मोडीकलां
ब्लॉक–रियांबडी,
जिला–नागौर
मो. नं.–9660408232

English for communication in the classroom

Beginning a Lesson

Dr. Ram Gopal Sharma

Creating classroom atmosphere for English is crucial for learners as well as
teachers. Learners need to feel comfortable in order to be able to learn and develop positive attitude towards English language and teachers need to feel good in the classroom in order to be able to use and keep developing their teaching skills. The expressions below help to build up a set of routines at the beginning of the class. Repetitions of such expressions regularly, help the students to grasp the language very easily.

A. Setting up routine

*Now we can get down to work.
*Let's begin today's lesson.
*Let's begin our lesson now.
*I hope you are ready for your English lesson.
*I think we can start now.
*Is everybody ready to start?
*Have you done your homework?
*Tapan, please give out (distribute) these home work note books.
*Take out your books, please.
*Monika, share your book with Ankita, please.
*Exercise one at the top of page three.
*Activity two at the bottom of page three.
*Which exercise are we doing?
*The bell hasn't gone yet.
*Turn to page.
*Open your books at page…
*Look at activity one...
*We'll learn how to …
*Let's study sentence pattern today.
*Give ear to what I'm saying.
*Pay attention, everybody
*Which topic will you present on?
*Listen to what others are saying/asking. You may get help.

C. Prohibiting the students

*Please don't write down.
*Don't look at the answers, please.
*Don't discuss with your partner.
*Please don't stand in groups.
*Please don't open your books.
*Don't you help him, Mukesh
*Don't talk, you two girls.
*We have run out of time. Stop now.
*You are not allowed/permitted to…
*You mustn't ………..
*You can't sit here.
*Don't change seat/get up from seat without permission.
*You can't cheat/move to other desk/change seat under any circumstances during test.
*You are not supposed to…
*Shouting isn't permitted in class/school.
*This isn't the right place for…
*Who hasn't answered yet?
*Right. Now we will go on to the next exercise.
*Have you done yesterday's homework?
*Leave one page/some pages/two pages for completing leftover work of yesterday.
*Don't forget to write today's date before you start today's work.
*Write/mention heading/chapter number/name of chapter/exercise number in the first line.
*Start today's work/new exercise/new chapter from a new page.
*Keep your notebook straight while writing. *Sharp your pencils near dustbin only.
*No leave to washroom/water point in the first period.
*Just a moment. Wait a minute. Hold on a second.
*Please, write the date on the board.
*Have you got a pencil?
*Can I borrow your rubber?
*Could you lend me a rubber, please?
*Ready? Let's start. Kartik, you start.

B. Learner centric instructions

*Sit in pairs.
*Pair and share.
*Make a group of four.
*Make a circle.
*Discuss in groups.
*Share your ideas within group.
*Share it with class.
*Give possible explanation for…
*Sum up the discussion in three sentences.
*We have last one minute to finish

the activity.
*One more thing before you go/start.

*Don't you dare…
*Don't even think about…
*You would require special permission to …
*The punishment for being is …
*Spitting/giggling/sleeping isn't allowed here.
*Do you have permission to…
*Never ever …………..
*It will not be tolerated in the class.
*Tearing page is against our class rules.

Giving personalised instructions and asking for information

- Mohan, do try question no. 2.
- Can you speak louder?
- Golu, you answer now.
- Is it correct?
- Boys, listen now.
- Varsha, give me some more examples, please.
- Keep going.
- Khushi, read the next sentence. Can you read this word?
- Try to hurry up.
- Calm down. We still have couple of time to finish the activity/work.
- Have another try.
- Can you come back to your seat?
- Put your chairs and tables back where they were.
- Can one member from each group collect the cards/pictures/ stuff and submit on my table?
- Make sure you haven't forgotten anything/your belongings.
- I want a/two/some volunteers to stick these posters on wall.
- Your watch must be fast.

Last couple of minutes left.
Why are you leaving your places?
You can go back to your place.
You can't go until you all…
Did any group finish the game/sheet/task?
I'd like to add…
I'll be back to your group after ten minutes.
What is your group's/teams opinion?
Has your team agreed upon it?
Take opinion of each team member for the final answer.
Divide your work among team members for completing it on time.
Equal opportunity should be given to each member.
Decide your team leader/captain.
Your time is up/over.
Decide among yourselves who will come in front to present
from your team.
Look at exercise two, Mudrika. Can you read the instructions, please?
What does it Mean? Can you spell it, please?
How do you spell the word, 'tour' please?
Can you correct this sentence, Sangeeta?
Explain it/topic in your words, Mohit.
Answer it.
Vedika, sit alone or next to someone. You won't be tempted to talk.
• What would you say if I did it?
• Would you approve of (doing something)?
• What is your attitude to the idea of...
• Are you in favour of (me doing something)?
• You are in favour of ..., aren't you?
• Do you think anyone would mind if I...?
• Do you think it would be really awful if I…?
• Can you give me a hand with this?
Vikas, put your watch away and continue with assignment right now.
Please repeat after me.
First listen, and then repeat.
Say it with me.
Which question are you on, Sitaram?
Come on, everybody.
• It's common knowledge that...
• It's a fact (that) ...
• Anyone will tell you ...
• Everybody knows that ...
• Few people would deny that ...
• It's no secret that ...
• I think we can accept / agree that..
• It is generally assumed that...
• It has been scientifically proven that...
• Why don't you stop now?
• How about stopping now?
• If I were you, I'd stop now.
• You'd better stop right now.
• I would strongly advise you to stop now.
• My advice would be to stop now.
• It might be a good idea to stop.
• You might try stopping.
• What are you doing tomorrow?
• Got any plans for tomorrow?
• What's your plan for tomorrow?
• Are you doing anything tomorrow?
• What's on the cards for tomorrow?
• Have you got anything on tomorrow?
• Have you got anything planned for tomorrow?
• What's happening tomorrow?
• Do you think it's all right to do it?
• What do you think about (me doing that)?
• Do you think I ought to do it?
• Could you help me for a second?
• Can I ask a favour?
• I wonder if you could help me with this?
• I could do with some help, please.
• I can't manage. Can you help?
• Give me a hand with this, will you?
• Lend me a hand with this, will you?
• Could you spare a moment?
• I need some help, please.
• Give us a second.
• I'll be right with you.
• Sorry, I'm a bit tied up right now.
• Wait and watch.
• You'll just have to be patient.
• Give me a chance.
• Don't be so impatient.
• We wish to apologise for the delay to...
• What do you think of...?
• What do you think about...?
• How do you feel (about...)?
• What's your opinion of...?
• What do you think about that?
• What are your views on...?
• What would you say to/ if we_?
• Are you aware of.....?
• I'm looking forward to...
• I can't wait until...
• I'm counting the days till...
• I'm trying to put off as long as I can.
• I'm not at liberty to say.
• Let me get back to you.
• I'm sorry, that's confidential.
• Sorry, that's personal/classified/confidential.
• I'd rather not talk about it.
• Mind your own business.
• Never mind, please.
• I'll tell you when you're older.
• He knows all about photography.
• He's a camera expert.
• He's an expert on digital cameras.
• There's nothing he doesn't know about.
• He knows photography inside out.

Chief Block Education Officer
Reodar(Sirohi)
Cell No.-9460305331

मेरी आवाज ही पहचान है, गर याद रहे

- कमल कुमार जांगिड

जी हाँ। यह आवाज ही तो है जिसने सबसे पहले मानव से मानव को जोड़ा। न केवल जोड़ा बल्कि उसे सभ्य और संस्कारी भी बनाया। ऐसी ही कई आवाजें हमारे चारों ओर आज भी हवाओं में तैर रही हैं। इनमें से कुछ आवाजें हमें जगाती है, कुछ हंसाती और गुदगुदाती है, और कुछ हमें दूर शांत वातावरण में ले जाती हैं और कुछ आवाजें सिखाती और बताती है। इन सभी आवाजों को हम तक समेट और सहेज कर लाता है रेडियो। जी हाँ। वही रेडियो जो कभी मन का मीत तो कभी जीवन का सुरीला संगीत बनकर हमारे जीवन में आज भी एक अहम मुकाम बनाए हुए है। आज हम बात करते हैं अपने उसी जीवन के हमसफ़र और हमराह साथी रेडियो की।

वैसे तो रेडियो का इतिहास अधिक पुराना नहीं है और बीसवीं शताब्दी के प्रारम्भिक चरण में रेडियो के माध्यम से ध्वनि तरंगो को प्रसारित करने की कोशिशें भी की जाने लगी थी पर वह मनचाही कामयाबी नहीं मिल सकी। आखिर सन 1927 में भारत में बम्बई (मुम्बई) और कलकत्ता (कोलकाता) में रेडियो प्रसारण की शुरूआत हो गई और इस तरह 1936 में शुरूआत हुई ऑल इंडिया रेडियो की। 1936 में शुरू हुआ ऑल इंडिया रेडियो का सफर 1957 में आकाशवाणी तक आते-आते अनेक उतार चढ़ाव से गुजरा। वैसे तो उसी समय जब ऑल इंडिया रेडियो का पौधा धीरे-धीरे आकाशवाणी के शीतल छायादार पेड़ के रूप में ढल रहा था तब दुनिया के अनेक देशों में रेडियो ब्रॉडकास्टिंग के क्षेत्र में पुरजोर कोशिशें की जा रही थी पर दूसरे विश्वयुद्ध की पृष्ठभूमि में हुई ये तमाम कोशिशें कुछ हद तक ही कामयाब हो सकी।

खैर शुरूआती दौर में रेडियो प्रसारण की शुरूआत हुई लघु तरंगो यानि शॉर्ट वेव के माध्यम से, जिनकी आवृत्ति मीटर बैंड इकाई पर मापी जाती थी। ऑल इंडिया रेडियो के समय में भारत में शॉर्ट वेव तरंगों के माध्यम से कई विदेशी भाषाओं में प्रसारण शुरू कर दिया था। इनमें प्रमुख रूप से वॉइस ऑफ़ अमेरिका, रेडियो पीकिंग (चाइना रेडियो इंटरनेशनल), रेडियो जर्मनी, बीबीसी (हिन्दुस्तानी सेवा) मुख्य है। यहाँ यह बताना उचित है की 1942 का वह वर्ष था जब नेताजी सुभाषचन्द्र बोस ने आजाद हिन्द रेडियो की शुरूआत बर्लिन से की। 1947 में जब देश आजाद हुआ था, तब देश में कुल छह ही आकाशवाणी केंद्र थे और रेडियो की पहुँच भारत के लगभग ग्यारह प्रतिशत लोगों तक ही थी।

अब बात आती है रेडियो पर उस समय प्रसारित होने वाले कार्यक्रमों के प्रसारण, उनके प्रसारण समय और उनकी गुणवता की। जैसा कि पहले उल्लेख किया गया कि रेडियो प्रसारण का शुरूआती दौर था तो कार्यक्रम व संसाधन बहुत ही सीमित थे और उनका प्रसारण भी कुछ समय के लिए ही किया जाता था। जो प्रसारण किया जाता था वो भी शॉर्ट वेव पर होता था जिसके कारण कार्यक्रम साफ-साफ कम ही सुनाई देते थे। कार्यक्रमों की गुणवत्ता का जहाँ तक सवाल है तो अधिकतर समाचारों, भेंट वार्ताओं जैसे समसामयिक मुद्दों पर आधारित होते थे। जो सामान्य श्रोताओं की समझ से परे होते थे। कालांतर में रेडियो पर मनोरंजनात्मक कार्यक्रमों की भी आवश्यकता महसूस की जाने लगी और जिसे काफी हद तक पूरा किया श्रीलंका विदेश प्रसारण सेवा की हिंदी सेवा यानि रेडियो सिलोन ने रेडियो सिलोन पर उन दिनों जब भारतीय और विशेषकर हिंदी सिने संगीत के साथ-साथ हल्के-फुल्के हास्य और मनोरंजनात्मक कार्यक्रम प्रसारित किए जाते थे। भारतीय रेडियो स्टेशनों पर उस समय के स्वर्णिम फिल्मी संगीत का प्रसारण प्रतिबंधित था, ठीक उसी समय रेडियो सिलोन ने फिल्मी संगीत पर आधारित एक नया कार्यक्रम 'बिनाका गीत माला' (जो बाद में सिबाका गीत माला) शुरू किया।

सप्ताह भर के हिट गीतों को नीचे से ऊपर की वरीयता (पायदान) के क्रम में प्रसारित करता था और वर्ष के अंत में (अंतिम एपिसोड) सालभर के गीतों को भी इसी क्रम से प्रसारित किया जाता था।

बिनाका गीत माला में नंबर एक अर्थात चोटी का गीत वोटिंग एवं श्रोता संघो की राय पर सरताज गीत कहलाता था और इस गीत के बजने से पहले बिगुल बजाकर सलामी दी जाती थी।

बिनाका गीतमाला की चर्चा एक और कारण से भी की जाती है और वो यह है कि इस कार्यक्रम के प्रस्तुतकर्ता उद्घोषक-अमीन सयानी जिन्होंने अपनी आवाज (बहनों और भाइयों) के दम पर भारत ही नहीं बल्कि एशिया महाद्वीप के करोड़ों दिलों पर राज किया। मनोरंजक कार्यक्रम के प्रसारण से भारत में रेडियो सिलोन को न केवल लोकप्रियता हासिल हुई बल्कि विज्ञापनों तथा प्रायोजित कार्यक्रमों जैसे 'बिनाका गीत माला' व 'शेरेडॉन के साथी' आदि के प्रसारण से अच्छी खासी आय भी होने लगी।

अब लौटते हैं फिर से आकाशवाणी की ओर, तो उस समय भारतीय रेडियो पर संगीत के नाम पर केवल सुगम संगीत का प्रसारण किया जाता था। रेडियो सिलोन की बढ़ती लोकप्रियता के कारण अब भारत में भी आकाशवाणी की मनोरंजन सेवा की जरूरत महसूस की जाने लगी। इस सेवा का भार दिया गया पंडित नरेन्द्र शर्मा को, जिन्होंने इस कार्य को एक चुनौती के रूप में स्वीकार किया। इस प्रकार एक ऐसे कार्यक्रम की परिकल्पना और रूपरेखा तैयार की गई जो गीत, नाटक, फिल्म, चित्र, नृत्य आदि को कानों से महसूस करवा सके। 3 अक्टूबर 1957 का वह ऐतिहासिक दिन जब 'विविध भारती' का आगाज मद्रास स्टूडियो से उद्घोषक शील कुमार द्वारा की गई इस उद्घोषणा से हुआ कि 'यह विविध भारती है'।

आकाशवाणी का पंचरंगी कार्यक्रम। यह बताना आवश्यक है कि पंचरंगी यानि पाँच रंग वाला। पाँच कलाओं से युक्त कार्यक्रम। ये पाँच कला थी 'गीत, संगीत, नृत्य, नाटक और चित्र' धीरे-धीरे विविध भारती का कारवां आगे बढ़ता गया और लोकप्रियता की सीढ़ियां चढ़ता गया। समय के साथ विविध भारती का प्रसारण देश के अनेक प्रसारण केन्द्रों से किया जाने लगा।

जिससे आकाशवाणी को न केवल लोकप्रियता ही मिली बल्कि विज्ञापनों के माध्यम से उसकी आय में भी वृद्धि हुई। स्पोंसर्ड प्रोग्राम (प्रयोजित कार्यक्रमों) की बात करें तो ये विविध भारती पर 1970 के आस-पास प्रारम्भ हुए। विविध भारती के अनेक लोकप्रिय कार्यक्रमों में से हम दो ऐसे कार्यक्रमों का उल्लेख कर देना आवश्यक समझते हैं जिसके

कारण विविध भारती ने अपनी खास पहचान बनाई । पहला 'हवामहल' जो नाटक प्रहसन तथा लघु नाटिकाओं (झलिकाओं) पर आधारित था । दूसरा कार्यक्रमों की लोकप्रियता को बढ़ाने में इनकी सांकेतिक धुनों (सिग्नेचर ट्यून) का भी अहम् किरदार था । समय के साथ विविध भारती के कई प्रसारण यथा भूले बिसरे गीत, त्रिवेणी, गीतों भरी कहानी, आपकी फरमाइश, कहकशां, एक ही फिल्म से, सखी-सहेली, हैलो फरमाइश, आज के फनकार, आपके मेहमान, बाइस्कोप बातें, संगीत सरिता, छायागीत, उजाले उनकी यादों के आदि लोकप्रिय हुए । इनमें से कुछ कार्यक्रम आज भी श्रोताओं द्वारा सुने और सराहे जाते हैं। अब थोड़ा जिक्र उन खास कलाकारों का जिन्हें लोगों ने उनकी आवाजों के जरिऐ पहचाना और अथाह प्रेम दिया। इनमें प्रमुख निम्मी मिश्रा, कांचन प्रकाश, कमल शर्मा, आमीन सयानी, रेनू बंशल, अमर कान्त, युनुस खान, ममता सिंह आदि।

विविध भारती की स्थापना के कुछ ही वर्षों बाद 1965 में आकाशवाणी की उर्दू सर्विस शुरू हुई इस सेवा को भी श्रोताओं से बेशुमार मोहब्बत मिली। खासकर उर्दू प्रसारण की तहजीब और मिठास ने भी सामैन को अपनी ओर खींचा। ऑल इंडिया रेडियो की इस सेवा ने केवल भारत ही नहीं बल्कि भारतीय उपमहाद्वीप तथा खाड़ी देशों में भी मकबूलियत के झंड़े गाड़े ।

उर्दू में ब्रॉडकास्ट होने वाले प्रोग्राम और नश्रियात ने श्रोताओं के दिलों में जगह बनाई। आपकी पसंद, गजलें, नग्में, कव्वालियाँ, मंजर, खबरों का खुलासा, आज की बात, जहाँनुमा (हालत , हाजरा)और पहली मजलिस में ब्रॉडकास्ट होने वाले प्रोग्राम जो कि सामैन के ख़त-ओं-खुतूत, पैगामत पर आधारित होता था 'सूरज के साथ-साथ' काफी लोकप्रिय हुआ।

आकाशवाणी की राष्ट्रीय प्रसारण सेवा की स्थापना 1987 में हुई ।इसका प्रमुख उद्देश्य शास्त्रीय व सुगम संगीत के कार्यक्रमों को श्रोताओं तक पहुँचाना था परन्तु बाद में इस पर हिंदी, उर्दू और अंग्रेजी सहित अन्य भाषाओं में कार्यक्रम और समाचार भी प्रसारित कि, जाने लगे। 26 जनवरी 2015 को आकाशवाणी ने शास्त्रीय संगीत को समर्पित एक नया रेडियो चैनल' रागम' आरंभ किया जिसके कारण राष्ट्रीय प्रसारण सेवा को 2019 तक आते-आते बंद कर दिया गया ।

आकाशवाणी की इस राष्ट्रीय प्रसारण सेवा का सफ़र लगभग 32 वर्षो तक ही जारी रह सका परन्तु इस पर प्रसारित होने वाले फिल्म संगीत (विशेष रूप से वे गीत जो शास्त्रीय और सुगम संगीत की रागों पर आधारित होते थे) पर आधारित रात्रिकालीन कार्यक्रम 'बेला के फूल' ने काफी लोकप्रियता और प्रसिद्धि प्राप्त की ।

आकाशवाणी के प्रारम्भिक वर्षो में अधिकांश कार्यक्रम समाचारों और समसामयिक मुद्दों पर आधारित हुआ करते थे । यहाँ उन लोगों का जिक्र आवश्यक होगा जिन्होंने अपनी आवाज और समाचार पढ़ने के अंदाज के दम पर आकाशवाणी समाचारों को न केवल लोकप्रिय ही बनाया बल्कि दक्षिण भारत की हवाओं में भी तैर कर हिंदी की सुगंध को फैलाया । इनमें प्रमुख देवकी नंदन पाण्डेय, कृष्ण कुमार भार्गव, विनोद कश्यप, अखिल मित्तल, आशुतोष जैन, आशा द्विवेदी, रामानुज प्रसाद सिंह, लोचनी आस्थाना, क्लेयर नाग आदि थे ।

आकाशवाणी पर समय के साथ-साथ समाचार प्रस्तुतीकरण का अंदाज भी बदला यथा समाचारों की धुन, मुख्य समाचार इसके बाद राष्ट्रीय और राजनैतिक समाचार तत्पश्चात क्रमशः राज्यों, खेल और मौसम के समाचार और अंत में फिर मुख्य समाचार और समाचार धुन के साथ समाप्ति ।

समाचार प्रसारण में यदि आकाशवाणी के एकाधिकार को अगर किसी ने चुनौती दी तो वह थी बीबीसी की हिंदी सेवा। जहाँ एक ओर आकाशवाणी के समाचारों को सरकारी समाचारों के रूप में आरोपित किया जाता था वहीं दूसरी ओर सही सटीक ,निष्पक्ष और त्वरित समाचार सुनाने के लिए बड़ी संख्या में श्रोताओ का रुझान बीबीसी की ओर हुआ। आपातकाल हो या पड़ौसी देशों के युद्ध के समाचार या फिर अंतर्राष्ट्रीय घटनाक्रम, श्रोताओं की पहली पसंद बना बीबीसी हिंदी। बीबीसी न केवल अपने समाचारों को स्पष्टता और सत्यता के कारण बल्कि शुद्ध व प्रामाणिक हिंदी भाषा में समाचार प्रस्तुत करने के लिए भी श्रोताओं में प्रसिद्ध हुई ।

बीबीसी के प्रमुख समाचार वाचकों में मुख्य ओमकारनाथ श्रीवास्तव, अचला शर्मा, रमा पांडेय, प्रियदर्शनी, राजेश जोशी तथा अलग ही अंदाज में 'खेल और खिलाड़ी' प्रस्तुत करने वाले रेहान फ़जल (वर्तमान में रेहान फ़जल द्वारा बीबीसी पर 'विवेचना' प्रस्तुत की जाती है) थे । बीबीसी की प्रमुख सभा, आजकल, दिनभर (सांय), नमस्कार भारत (प्रातः) प्रसारित हुआ करती थी। वर्तमान में बीबीसी की मध्यकालीन सभा 'दिनभर' का प्रसारण डिजिटल प्लेटफॉर्म के माध्यम से सुना जा सकता है। बीबीसी के अन्य लोकप्रिय कार्यक्रमों में श्रोताओं की समसामयिक घटनाओं के बारे में सोच को व्यक्त करने का कार्यक्रम 'बीबीसी इंडिया बोल' का नाम लिया जा सकता है ।

ऐसी बात नहीं है कि रेडियो केवल समाचारों के माध्यम से ही सूचनाओं का प्रेषण करता रहा बल्कि इससे भी आगे बढ़कर रेडियो की एक महत्त्वपूर्ण भूमिका रही है। विशेषकर नामचीन हस्तियों के इंटरव्यू से लेकर सजीव प्रसारण तक के कई महत्त्वपूर्ण प्रसारण रेडियो से ही किए जाते थे और आज भी किए जाते हैं। आकाशवाणी के समृद्ध संग्राहलय में कई नामचीन हस्तियों के भाषण और साक्षात्कार मूलरूप में आज भी सुरक्षित रखे गए हैं। अवसर विशेष पर प्रसारित भी किए जाते हैं। इनमे से प्रमुख महात्मा गाँधी का साक्षात्कार, नेताजी सुभाष चन्द्र बोस, सरदार वल्लभ भाई पटेल, लालबहादुर शास्त्री व कई फ़िल्मी सितारों, खिलाड़ियों तथा अन्य क्षेत्रों के लब्धप्रतिष्ठत लोगों के भाषण व इंटरव्यू हैं।

बात करते हैं कि सजीव प्रसारण अर्थात लाइव ब्रॉडकास्ट की । आजाद भारत में पहली बार राष्ट्रपिता महात्मा गाँधी की अंतिम यात्रा की लाइव कॉमेंट्री ऑल इंडिया रेडियो पर ब्रॉडकास्टिंग की गई थी। आँखों देखा हाल सुना रहे थे आकाशवाणी के मशहूर कॉमेंटेटर और उद्घोषक मेलविल डी मिलो। उस कमेंट्री को सुनकर कालांतर में आकाशवाणी से जुड़े दो ऐसे गुणी और महान कॉमेंटेटर जिन्होंने कॉमेंट्री को एक नई पहचान ही नहीं दी बल्कि अपनी जादुई आवाज से हिंदी को घर-घर, खेत-खलिहान, दुकानों और दफ्तरों तक पहुँचा दिया। जी हाँ। हम बात कर रहे हैं पद्मश्री स्वर्गीय जसदेव सिंह और पद्मश्री सुशील दोषी की । इन्होंने मैलविल डी मैलो की ही कॉमेंट्री शैली से प्रभावित होकर कॉमेंट्री क्षेत्र को चुना । आकाशवाणी पर केवल खेलों का ही सजीव प्रसारण नही होता

था बल्कि कई अन्य समारोहों, कार्यक्रमों व आयोजनों के साक्षी आकाशवाणी के श्रोता इसकी लाइव ब्रॉडकास्टिंग के माध्यम से बनते जा रहे हैं।

इनमें प्रमुख आयोजन हैं गणतंत्र दिवस और स्वतंत्रता दिवस समारोह, संसद कार्यवाही के महत्त्वपूर्ण पल, राष्ट्र स्तरीय पुरस्कार वितरण समारोह, महत्त्वपूर्ण व्यक्तियों की अंतिम यात्राएं, धार्मिक आयोजन जैसे पुरी की रथ यात्रा और मथुरा का कृष्ण जन्मोत्सव समारोह आदि।

आकाशवाणी के मुख्य कमेंटेटर्स में सुरेश सरैया, विनित गर्ग, संजय बनर्जी, प्रेमकुमार, प्रकाश वाकनकर, सुनील वैद्य, जैनेन्द्र सिंह, रितु राजपूत आदि हैं। आप भी भली भांति ही जानते होंगे की रेडियो के महत्त्व और गुणों का अंदाजा इसी बात से लगाया जाता है कि भारत के प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी भी अक्टूबर 2014 से अपने 'मन की बात' रेडियो ही के माध्यम से भारत की जनता के साथ साझा करते हैं।

यहाँ थोड़ा सा प्रयास यह बताने का कि रेडियो की फ्रीक्वेंसी मॉड्युलेशन यानि एफ. एम. रेडियो सेवा जो वर्तमान में श्रोताओं के मध्य बहुत लोकप्रिय बनी हुई है। भारत में एफ एम रेडियो की सेवा 1977 में तत्कालीन मद्रास शहर (चेन्नई) में की गई थी परन्तु एफ. एम. प्रसारण की गति 90 के दशक में धीरे-धीरे बढ़ने लगी और 2005 तक आते-आते पूरे देश में एफ. एम. सेवा को अच्छी खासी लोकप्रियता हासिल हो गई जिसके दो मुख्य कारण थे। पहला कार्यक्रमों की गुणवत्ता और आवाज उत्त्कृट तथा स्पष्ट थी। दूसरा मनोरंजन के साथ-साथ क्षेत्रीय भाषाओं में कार्यक्रमों और क्षेत्रीय उत्पादों का विज्ञापन प्रसारित करना था। बाद में धीरे-धीरे एफ एम बैंड पर कई कम्युनिटी रेडियो और शैक्षिक रेडियो चैनलों का प्रसारण भी शुरू किया गया। आज आम नागरिक अपने मोबाइल और इंटरनेट के माध्यम से कहीं भी, किसी भी समय एफ.एम. सेवा का लुत्फ उठा सकता है।

एक नजर डालते हैं राजस्थान में रेडियो के सफ़र पर जिसकी शुरूआत होती है। 8 अप्रेल 1955 के दिन स्थापित आकाशवाणी के जयपुर केंद्र की स्थापना के साथ। जो प्रारम्भ में केवल 20 किलोवॉट क्षमता के ट्रांसमीटर के साथ आरम्भ किया गया और इसे मीडियम वेव के 603 किलो हर्टज पर सुना जा सकता था। आगे 1987 में इस ट्रांसमीटर की क्षमता बढ़ाकर 200 किलोवॉट कर दी गई। 2015 में इसका प्रसारण शॉर्ट वेव, मीडियम वेव के साथ-साथ एफ एम बैंड 101-102 मेगा हर्टज पर भी शुरू कर दिया गया। 13 सितम्बर 1959 को आकाशवाणी जयपुर से पहला समाचार बुलेटिन प्रसारित किया गया जिसका संपादन किया राधानाथ चतुर्वेदी ने और इसे पढ़ा, जाने माने कॉमेंटेटर और समाचार वाचक जसदेव सिंह ने। आकाशवाणी जयपुर ने अपने प्रसारण के माध्यम से न केवल अपने सामाजिक सरोकारों को निभाया अपितु राजस्थान की समृद्ध संस्कृति और विरासत को संरक्षित कर उसे जन-जन तक भी पहुँचाया। इस सफ़र में आकाशवाणी जयपुर को कई बहुगुणी प्रसारकों और उद्घोषकों का साथ भी मिला। गणपत लाल डांगी, जसदेव सिंह, इकराम राजस्थानी, वेदव्यास, सीता उज्ज्वल आदि थे जो न केवल उत्कृष्ट वक्ता थे अपितु अच्छे साहित्यकार भी थे।

गणपतलाल डांगी ने तो भारत-पाक युद्ध 1971 में अपनी ओजस्वी रचनाओं से जन-जन में राष्ट्रीय चेतना का संचार किया। अनेक युवाओं को सेना में जाने की प्रेरणा भी मिली। जयपुर केंद्र से प्रारम्भिक प्रयास से ही प्रमुख कार्यक्रम बहुरंगी रहे। इनमे चौपाल, ग्राम भारती, खेती री बातां, पणिहारी, साहित्य धारा, युववाणी, भेंट वार्ताएँ, क्षणिकाएं, नाटक, झलकियाँ, प्रहसन, फिल्म संगीत, लोक गीत व संगीत, सुगम संगीत व विद्यालय प्रसारण प्रमुख थे। मुख्य उद्घोषकों में शीला चावला, सुदर्शन नाहर, बीना चतुर्वेदी आदि थे। वर्तमान में आकाशवाणी जयपुर आंशिक या पूर्ण रूप से सम्पूर्ण राजस्थान में सुना जा सकता है। जयपुर से प्रसारण समय प्रातः 5 बजकर 55 मिनट से रात 11 बजकर 10 मिनट तक प्रतिदिन निरंतर किया जा रहा है। अब इसे सुनने के लिए रेडियो सेट की आवश्यकता नहीं है। आप अपने मोबाइल पर आकाशवाणी के एप न्यूज ऑन, आईआर को डाउनलोड कर ऑनलाइन जयपुर ही नहीं बल्कि देश के किसी भी आकाशवाणी केंद्र के कार्यक्रमों का आनंद उठा सकते हैं। साथ ही दूरदर्शन की डाइरेक्ट टू होम (डीटीएच) सेवा पर भी आकाशवाणी के कार्यक्रम सुने जा सकते हैं। वर्तमान में राजस्थान में आकाशवाणी के 19 प्रमुख और कुछ अन्य सामुदायिक रेडियो चैनल प्रसारित किए जा रहे हैं।

आइए अब बात करते हैं आकाशवाणी नागौर जिले के 'चिरमी' चैनल की। इसकी स्थापना 4 अक्टूबर 1991 को हुई थी। इस चैनल का प्रसारण एफ. एम. बैंड 103-107 मेगा हर्ट्ज पर किया जाता है। इस केंद्र के अधिकांश कार्यक्रम विविध भारती मुम्बई और आकाशवाणी जयपुर से अनुप्रसारित किए जाते हैं तथा शेष कार्यक्रम स्थानीय स्तर पर तैयार किए और प्रसारित किए जाते हैं। आकाशवाणी नागौर के 'चिरमी' चैनल का प्रसारण सुबह 9 बजे से रात्रि 10 बजे तक सुना जा सकता है।

आज भी देश के किसी भी हिस्से में स्थित आकाशवाणी केंद्र की पहली सभा का प्रसारण समय 5 बजकर 55 मिनट पर 'वन्दे मातरम्' (राष्ट्र गीत) के गायन के साथ प्रारंभ होता है तथा प्रसारण सभा की समाप्ति 'जय हिन्द' की उद्घोषणा के साथ होती है। साथ ही प्रारंभ में वन्दे मातरम् उद्घोषणा और गायन के बाद शहनाई पर मंगल ध्वनि बजाई जाती है।

आकाशवाणी की सांकेतिक धुन को बनाया था चेकोस्लोवाकिया में जन्मे वाल्टर कोफमैन ने जो कि 1930 के दशक में आकाशवाणी मुम्बई में वेस्टर्न म्यूजिक डिपार्टमेंट में म्यूजिक कम्पोजिंग का काम किया करते थे। आज देश भर में आकाशवाणी के 230 से अधिक चैनल हैं जिनमें से 25 चैनल वर्ल्ड सर्विस के हैं। आकाशवाणी का ध्येय वाक्य 'बहुजन हिताय-बहुजन सुखाय' है। आकाशवाणी की अपनी समाचार सेवा ऑल इंडिया रेडियो न्यूज-का प्रसारण 24 गुणा 7 किया जा रहा है।

आकाशवाणी द्वारा विज्ञापन प्रसारित किए जाने के कारण कई लोग इसका ध्येय वाक्य 'शुभवाणी, लाभवाणी, आकाशवाणी' भी बताते हैं। आकाशवाणी के समृद्ध संग्रहालय में दुर्लभ भाषण, साक्षातकार, रिकॉर्डिंग, आकाशवाणी संगीत सम्मलेन, रूपक, नाटक, रेडियो धारावाहिक उपलब्ध हैं जिन्हें आप अपने संग्रह के लिए ऑनलाइन खरीद भी सकते हैं।

आप अपने 'मन के रेडियो' को 'फुल वॉल्यूम' में बजाते रहे और जिन्दगी के उतार-चढ़ाव भरे संगीत की सरगमी धुनों पर झूमते रहिए और हाँ। अपने मन की मतवाली बीन को भी तो बजने दीजिए...।

कृष्णा विहार,
कुचामन सिटी (नागौर).341508
मो.नं. 9928278014

पुस्तक समीक्षा

पुस्तक–ज्ञान सतसई , **कवि** : ज्ञानेश कुमार मिश्र; **प्रकाशक**: सनातन प्रकाशन,जयपुर; **संस्करण** : 2021; **मूल्य** : रुपए 250 ; **पृष्ठ** : 144

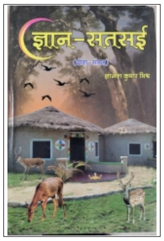

'ज्ञान–सतसई' काव्यरचना कवि ज्ञानेश कुमार मिश्र की सनातन परंपरा, धर्म और संस्कृति का पोषण करने वाली है। कवि मिश्र जी ने 'अपनी बात' में काव्य रचना से संबंधित स्वानुभवों को सुंदर अभिव्यक्ति दी है। माता–पिता को समर्पित काव्य रचना के अनुसार अल्प आयु में पिता का देहांत तथा शिक्षिका माता का ज्ञानमयी स्वरूप वर्णित है। निश्चित ही कोई भी कार्य तभी सफल होता है जब माता–पिता और गुरुजनों का आशीर्वाद मिलता है। समरसता की भावना को बल प्रदान करने वाली 'ज्ञान–सतसई' निश्चित ही धर्म–कर्म, ज्ञान और नीति का सामंजस्य लिए हुए हैं। दोहा शैली में रचित काव्य ज्ञान–सतसई धार्मिक, नैतिक, सामाजिक सौंदर्य रूपी विविध कल्पनाओं का अद्‌भुत समन्वय किया गया है। नौ शीर्षकों में सारगर्भित शब्दों का संचयन कर दोहों की भावाभिव्यंजना सरस व मधुर बन गयी है। साहित्य के विभिन्न काव्य शैलियों में दोहा शैली को सर्वाधिक लोकप्रिय माना गया है। गागर में सागर भरने की क्षमता सिर्फ इसी परंपरा में संभव है। रीतिकालीन कवि बिहारी की दोहा शैली से स्पष्ट किया जा सकता है– देखन में छोटे लगत घाव करे गंभीर' अर्थात कम शब्दों में अधिक प्रभावशाली बात कही जा सकती है। प्रथम शीर्षक में भक्ति धारा की सुंदर व्याख्या करते हुए ईश्वरीय प्रेम का वर्णन । दृष्टव्य है–

गुड़ सुगंध के फैलते, खुद चींटी चलि आत।
वैसे ही हरि भजन से, शुद्ध हृदय के पात।।(15)

कवि का भाव है कि जीवन में भगवान का स्थान अन्यतम है इस संसार रूपी भवसागर से प्रभु भक्ति से ही पार उतरा जा सकता है। हरि–भजन ही सर्वश्रेष्ठ पूंजी है जैसे गुड़ की सुगंध फैलते ही चींटी स्वतः ही आ जाती है वैसे ही हरि का भजन करने से मन स्वतः निर्मल हो जाता है, प्रभुमय हो जाता है और भक्त को प्रभु मिल जाते हैं। उत्प्रेक्षा अलंकार का सुंदर प्रयोग किया है। ज्ञान और नीति की प्रेरणा देते हुए कवि उचित समय पर कार्य होने की बात कहते हैं। अनुचित समय पर किया गया कार्य दुष्फल देता है।

कवि की भावानुभूति सुंदर है। सटीक उदाहरण दिया है कि उचित समय आने पर बिगड़ी हुई बात बनती है और असमय किया गया कार्य विनाश का कारण बनता है। जैसे बहिन को गलत तरीके से चौथ का चंद्रमा दिखाने पर बहिन के पति की असामयिक मृत्यु हो जाती है। यदि समय पर चंद्र दर्शन करती तो व्रत का संकल्प पूर्ण होता और धर्म की भागीदार बनती पाप की नहीं। कवि ने दान की महत्ता के साथ सर्वश्रेष्ठ ज्ञान–दान की महिमा को सुंदर शब्दों में सजाया है –

गउ दान, धन–दान, गज ,सुबरन कन्य–दान।
भूमि–दान, वर–दान सों ,ऊपर विद्या–दान।।
(93)

जीवन में व्यक्ति विभिन्न प्रकार के दान की परंपराओं को सम्पन्न करता है। धर्म–कर्म सामाजिक जीवन में अलग–अलग परंपरा के अनुसार कोई गऊ–दान करता है कोई धन–दान करता है, राजा–महाराजा जैसे लोग हाथी दान और स्वर्ण दान भी सामार्थ्य अनुसार करते हैं। पुत्री के विवाह पर कन्या–दान की रस्म भी धार्मिक अनुष्ठान माना जाता है। सेठ साहूकार भूमि–दान भी करते हैं। सनातन धर्म में वरदान की बातें भी पुराणों में उल्लेखनीय हैं लेकिन इन सभी प्रकार के दान से बढ़कर है विद्या–दान। विद्या का दान सर्वश्रेष्ठ माना जाता है जिससे एक शिक्षित व्यक्ति अनेक लोगों का जीवन संवारता है। बाकी सारे दान समयानुसार खत्म हो सकते हैं परंतु विद्या–दान कभी खत्म नहीं होता, निरंतर बढ़ता रहता है। अति उत्तम भाव हैं। कवि ज्ञानेश जी ने दर्शन पर सुंदर विचार दिए हैं। दर्शन की महिमा अपार है। कवि समस्त जीवों के आंतरिक दर्शन और आत्मा–परमात्मा के मिलन की बात करते हैं। इस नश्वर संसार में आत्मा कठोर तपस्या से गुजरती है तब परमात्मा रूपी प्रियतम का मिलन होता है। उदाहरण–

माया की बाती करो, भगती का कर घीव।
अंतर मन में प्रज्वलित, तव आवेंगे पीव।। (365)

माया रूपी भावना की बाती बना कर जलाएँ, भक्ति रूपी भाव का घी डालें और मन रूपी दीपक को प्रज्वलित करें तो रोशनी रूपी प्रियतम अर्थात परमात्मा के दर्शन होंगे आत्मा परमात्मा का अनूठा मिलन होगा। कवि का मंतव्य है कि सांसारिक मोह–माया को त्यागकर ही ईश्वर की प्राप्ति संभव है। जब तक इन बंधनों का परित्याग नहीं करेंगे तब तक भक्ति रूपी संसार नहीं मिल पाएगा। कवि ज्ञानेश जी ने ज्ञान–सतसई में जीवन के सभी पहलुओं पर विचार किया है। दर्शन के विभिन्न रूपों में से नारी के बारे में दार्शनिक उदाहरण दृश्टव्य है।

बहुत सुंदर उदाहरण से स्पष्ट किया कि जैसे दो पहियों के बिना रथ नहीं चल सकता और दो पंखों के बिना पक्षी अपनी उड़ान नहीं भर सकता वैसे ही गृहस्थ पुरुष भी अकेला नहीं जी सकता। वह उसी प्रकार अधूरा रहता है जैसे मुख पर एक ही आंख हो तो मुख की सुंदरता नष्ट हो जाती है। कवि के अनुसार नर–नारी दोनों का जीवन समान रूप से अन्योन्याश्रित है। नारी के बिना पुरुष का जीवन और पुरुष के बिना नारी का जीवन अधूरा रहता है। उत्प्रेक्षा अलंकार का संयोजन सुंदर बन पड़ा है। राष्ट्र प्रेम की भावना से ओतप्रोत कवि सुशासन की बात कहते हैं। धर्म की रक्षा की बात करते हुए कवि कहते हैं–

जो शासन नहीं धर्मरत, तिन न करौ स्वीकार ।
धर्म रक्ष धारण खड्ग, करो राम अवतार।। (783)

नीति कहती है कि जो शासन धर्म के अनुसार नहीं चलता उसे स्वीकार नहीं करना चाहिए और धर्म की रक्षा के लिए तलवार उठानी पड़े तो वह भी उचित है अर्थात बुराई का अंत करने के लिए रामावतार भी स्वीकार्य है। कवि ने सुशासन की स्थापना व राष्ट्र हित की बात कही है। नख– शिख वर्णन काव्य रचना का अभिन्न अंग है। श्रृंगार रस की बात करें तो रीतिकालीन कवियों ने सुंदर वर्णन किये हैं। प्रस्तुत काव्य रचना में सांसारिक भौतिक वातावरण से श्रृंगार का समन्वय स्थापित किया है।

समेकित रूप से कहा जा सकता है कि काव्य संग्रह बहुत उत्तम कोटि का है साथ ही पुस्तक का बाह्य आवरण पारंपरिक और प्राकृतिक मनोरम श्यामली युक्त है। छायाचित्र राजस्थानी वेशभूषा को परिलक्षित कर रहा है। उत्तम कोटि का कागज़ और उत्कृश्ट छपाई पुस्तक की खूबसूरती को और अधिक उन्नत कर रहे हैं। बहुत ही सहज और सरल शब्दावली जो सर्वग्राह्य है। मैं काव्यकृति 'ज्ञान–सतसई' के रचनाकार कवि ज्ञानेश मिश्र को बधाई और असीम शुभकामनाएं प्रेषित करती हूँ।

समीक्षकः – राजरानी अरोड़ा
प्रधानाचार्य, महात्मा गांधी राजकीय विद्यालय, खंडेला, सीकर–332709 (राज.)
मो.–9460863798

बाल शिविरा– माह जुलाई 2022

मानव के संस्कार

सारे मुल्कों को नाज था,
अपने अपने पर, परमाणु पर
'कायनात' बेबस हो गई
एक छोटे से किटाणू पर।

अहंकार के अंधे इन्सान को
न तो अपनी
गलतियाँ दिखती है।
और न ही
दूसरे इंसानों में
अच्छी बातें।।

किसी भी व्यक्ति को ये
नहीं सोचना चाहिए कि
वो अपनी जिन्दगी में
कितना खुश है।
बल्कि ये सोचना चाहिए कि
उसकी वजह से कितने
लोग खुश है।।

जिस दिन आपने ठान लिया कि
मैं ये चीज हर हाल में
करके दिखाऊँगा उस दिन दुनिया
कह कोई भी ताकत आपको
उस काम को करने से
नहीं रोक पाएगी।।

नाम-उषा कुमारी चौधरी
कक्षा-11
राजकीय उच्च माध्यमिक विद्यालय
बिशनगढ़ (सायला)
जिला-जालोर

मेरा देश प्यारा देश

मेरा देश प्यारा देश
सब देशों से न्यारा देश।
सोने की चिड़िया कहलाता
ऐसा प्यारा हमारा देश।।

इसकी आन और इसका मान
सदा बढ़ाना इसकी शान।
सदा चलना तुम सच्ची राह
जिससे बढ़े देश की शान।।

जैसा देश वैसा भेष
एक भाषा श्रेष्ठ ज्ञान।
देश भक्ति से कार्य करें हम
बढ़े देश की पहचान।।

मेरा देश प्यारा देश
सब देशों से न्यारा देश।
सोने की चिड़िया कहलाता
ऐसा प्यारा हमारा देश।।

नाम-रविना कुमारी
कक्षा-8
राजकीय उच्च माध्यमिक विद्यालय
बिशनगढ़ (सायला)
जिला-जालोर

शाला प्रांगण से......माह जुलाई 2022

राजसमंद से सुरेश कुमार भील को मिला राज्य पुरस्कार

राजस्थान राज्य भारत स्काउट गाइड राज्य मुख्यालय जयपुर के तत्वावधान में राज्य स्तरीय राज्य पुरस्कार समारोह कार्यक्रम बांसवाड़ा में हुआ संपन्न। कार्यक्रम में माननीय राज्यपाल महोदय श्री कलराज मिश्र बतौर मुख्य अतिथि वर्चुअल रूप से राजभवन से जुड़े। राज्यपाल महोदय ने कहा कि सारी वसुधा ही मेरा कुटुंब है। सनातन परंपरा की यह अमूल्य विरासत है । जिसे आज पूरा विश्व बड़ी शिद्दत से अनिवार्य मानता हैं। राजस्थान प्रदेश के स्टेट चीफ कमिश्नर एवं पूर्व मुख्य सचिव श्री निरंजन आर्य ने कहा कि ऐसे राष्ट्रीय जनजाति महोत्सव राष्ट्रीय भावना एकता को प्रदर्शित करने के सबसे बड़े मंच होते हैं । साथ ही राज्य पुरस्कार समारोह में इस अवसर पर राजस्थान प्रदेश के 96 स्काउट गाइड, रोवर- रेंजर को राज्य पुरस्कार से सम्मानित किया गया । सहायक लीडर ट्रेनर स्काउट एवं शारीरिक शिक्षक राकेश टॉक ने जानकारी देते हुए बताया कि राज्य स्तरीय समारोह में जिला राजसमंद के स्थानीय संघ कुंभलगढ़ के राजकीय उच्च माध्यमिक विद्यालय कुंचौली से श्री सुरेश कुमार भीम को राज्यपाल कलराज मिश्र की राजभवन से वर्चुअल मीटिंग में स्वीकृति के पश्चात राजस्थान प्रदेश के स्टेट चीफ कमिश्नर एवं पूर्व मुख्य सचिव श्री निरंजन आर्य ने राज्य पुरस्कार प्रदान किया। इस अवसर पर बांसवाड़ा के जिला कलेक्टर प्रकाश चंद शर्मा, एसपी राजेश मीणा , अतिरिक्त जिला कलेक्टर श्री नरेश बुनकर, जिला शिक्षा अधिकारी माध्यमिक श्री मावजी खांट, लियो निदेशक श्री मनीष त्रिवेदी व समाजसेवी श्री हरीश कलाल मौजूद थे।

राष्ट्रीय जनजाति महोत्सव बांसवाड़ा में मनमोहक प्रस्तुति

जिला प्रशिक्षण आयुक्त स्काउट श्री राकेश टॉक ने बताया कि राजकीय उच्च माध्यमिक विद्यालय कुंचौली के सभी स्काउट गाइड ने त्रिपुरा सुंदरी, बेणेश्वर धाम में भ्रमण कर कागदी पिकप पर एडवेंचर एक्टिविटी के तहत घोड़े पर बैठना, जिप लाइन, भूल भुलैया, सितोलिया, आँखों पर पट्टी बांधकर तिलक लगाना, गुब्बारा फोड़ना, झील में नौकायान का आनंद लिया साथ ही गांधी दर्शन के तहत बांसवाड़ा नगर में नगर भ्रमण में सहभागिता कर नगर वासियों द्वारा जगह जगह पर स्वागत करते हुए रस, छाछ, बिस्किट्स, पानी पिला कर अभिनन्दन किया। प्रदेश के विभिन्न जिलों व अन्य राज्यों से आए हुए स्काउट गाइड प्रातःकालीन वेला में स्वच्छता कार्यक्रम के तहत माननीय राज्यपाल महोदय द्वारा गोद लिए गए ग्राम सागेता में स्वच्छता कार्यक्रम के तहत पूरे गांव की सफाई कर ग्राम वासियों को गांव को साफ सुथरा रखने के लिए प्रेरित किया। साथ ही आज विभिन्न प्रतियोगिताएं -चित्रकला, फर्स्ट एड, वाद्य यंत्र, स्वागत गीत, कलर पार्टी, शारीरिक व्यायाम, पिरामिड, अनुमान लगाना, निबंध प्रतियोगिता आयोजित हुई। कुंचौली स्कूल से स्काउट्स 18 वीं राष्ट्रीय स्काउट गाइड जम्बुरी रोहट, पाली, राजस्थान में आयोजित होगी उसके लिए ये स्काउट्स अभ्यास कर रहे हैं। ग्राम पंचायत कुंचौली के सरपंच ने राष्ट्रीय जंबूरी के लिए हर संभव सहयोग करने का आश्वासन स्काउटर राकेश टॉक को दिया। ग्राम पंचायत कुंचौली से 18 स्काउट्स राष्ट्रीय जनजाति स्काउट गाइड महोत्सव बांसवाड़ा में अपने गांव का ही नहीं अपितु कुम्भलगढ का नाम रोशन कर रहे हैं इससे गांव में खुशी का माहौल है।

खडकड़ विद्यालय में विश्व तंबाकू दिवस का आयोजन

स्काउट ट्रेनिंग काउंसलर एवं रा उ प्रा वि जावरा संस्था प्रधान जितेंद्र शर्मा ने बताया कि खटकड़ पीईईओ के अधीन आने वाले विद्यालयों में तंबाकू निषेध दिवस का आयोजन किया गया एवं शपथ ली गई। इस अवसर पर संस्था प्रधान सर्व श्री जगदीश मीणा, योगेश सोनी, विजय किशन गोचर, वरिष्ठ सहायक वैभव जैन, अध्यापक भगवती प्रसाद जगावत, अभिषेक व्यास परशुराम मेघवाल, राजकुमार मीणा, लटुर लाल मीणा आदि उपस्थित थे।

विद्यालय की ओर से कला प्रशिक्षण वर्ग आयोजन

हरीगढ़- राजकीय बालिका उच्च प्राथमिक विद्यालय, हरीगढ़ में बालिकाओं की परीक्षा सम्पन्न होने के बाद विद्यालय की ओर से कला प्रशिक्षण वर्ग आयोजित किया जा रहा है। प्रधानाध्यापक प्रेम दाधीच ने बताया कि विद्यालय में परीक्षा सम्पन्न होने के बाद बालिकाओं में गुण विकसित करने की दृष्टि से सात दिवसीय कला प्रशिक्षण शिविर लगाया जा रहा है। जिसमें चित्रकला, मेहंदी, डांस, कम्प्यूटर, इंग्लिश स्पोकन जैसे विषयों का प्रशिक्षण विषय विशेषज्ञों द्वारा दिया जा रहा है। परीक्षा के कारण बच्चे मानसिक दबाव में रहते है, ऐसी स्थिति में शिविर लगाने से बच्चे तनाव मुक्त हो जाते है और स्वयं में गुणों का विकास भी होता है। प्रशिक्षण वर्ग में 60 बालिकायें भाग ले रही है । सर्वाधिक कम्प्यूटर सीखने में बालिकाएं रुचि ले रही है। शालिनी सेन द्वारा डांस सिखाया जा रहा है वही पूजा सुमन द्वारा मेहंदी। स्पोकन इंग्लिश अजय सिंघल द्वारा अभ्यास करवाया जा रहा है। सभी स्टाफ सदस्य भी इसमे सहयोग कर रहे है।

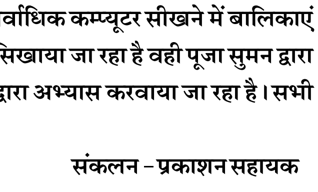

संकलन - प्रकाशन सहायक

ज्ञान संकल्प पोर्टल

भामाशाहों ने बदली विद्यालय की तस्वीर

राजकीय उच्च माध्यमिक विद्यालय देवगढ़, जिला-राजसमंद (राज.)

दीपक भारद्वाज

विद्यालय भवन जीर्णोद्धार:—

विद्यालय भवन का अधिकांश हिस्सा 85 से 50 वर्ष पुराना हो गया था। पुरानी शैली से निर्मित होने से विद्यालय की दीवारें मजबूत थी परन्तु चूने का पलस्तर कमजोर होकर हटने लगा था साथ ही छत भी मरम्मत के अभाव में टपकने लगी थी। तब **एक कमरा एक भामाशाह योजना** तैयार की गई जिसमें किसी भी एक कक्ष को कोई भामाशाह जीर्णोद्धार करा के पुनः विद्यालय को समर्पित करें। वर्ष 2017 से 2020 के मध्य विद्यालय की SDMC, भवन निर्माण समिति तथा विद्यालय स्टाफ के साझे प्रयासों से 11 बड़े कक्ष तथा 6 छोटे कुल 17 कक्षों का जीर्णोद्धार भामाशाहों के सहयोग से करवाए गए जिसमें चूने का पलस्तर हटाकर नया पलस्तर करना, छत पर मार्बल करेजी करना, नए खिड़की दरवाजे लगाना, तथा बिजली फिटिंग शामिल हैं। कक्षों के अतिरिक्त सीढ़ी आदि कॉमन एरिया की मरम्मत भी कराई गई जिसके लिए विद्यालय स्टाफ तथा अन्य भामाशाहों द्वारा क्राउड फंडिंग के जरिए लगभग 2.80 लाख रुपये एकत्र किए गए। इस पूरे जीर्णोद्वार कार्य पर लगभग 23.35 लाख रुपये की राशि व्यय की गई। विद्यालय के परिसर में स्थित दो चौक को नगरपालिका देवगढ़ के सहयोग से लगभग 15 लाख रुपये की लागत से पक्का कराया गया जिससे विद्यालय परिसर में कीचड एवं गन्दगी की समस्या दूर हो गई।

- **विद्युत फिटिंग:-** वर्ष 2017—18 मे विद्यालय के सम्पूर्ण परिसर में विद्यालय के पूर्व छात्र रहे डॉ. पुखराज सुखलेचा द्वारा लगभग 1.35 लाख रुपये की लागत से बिजली फिटिंग तथा विद्युत उपकरण लगवाए गए। अभी वर्तमान में विद्यालय के किसी भी कक्ष में पंखे ट्यूबलाईट जैसे किसी भी उपकरण की कमी नहीं है।

- **विद्यालय में सुरक्षा एवं निगरानी** हेतु भामाशाह श्री जगदीश चन्द्र कंसारा एवं विद्याालय में डी.एल.एड. अध्ययन केन्द्र के विद्यार्थियों के सहयोग से विद्यालय में लगभग दो लाख चालीस हजार रुपये की लागत से प्रत्येक कक्षा कक्ष खेल मैदान एवं परिसर में 38 **CCTV** केमरे लगाए गए। विद्यालय में भामाशाहो के सहयोग से इलैक्ट्रिक घण्टी तथा प्रिंटर जैसे उपकरण भी समय समय पर प्राप्त होते रहे हैं।

- **पेयजल:-** वर्ष 2017 में भामाशाह श्री बाबूलाल पानेरी के सहयोग से लगभग 4 लाख रुपये की लागत से एक प्याऊ का निर्माण करवाया गया। इस प्याऊ में 300 लीटर क्षमता का वाटर कूलर तथा आर. ओ. भी लगवाया गया है। इसके अतिरिक्त विद्यालय में जर्जर पड़ी एक अन्य टंकी का भी जीर्णोद्धार भामाशाह के सहयोग से किया गया। विद्यालय में शुद्ध पेयजल की सुचारू आपूर्ति हेतु PHED से 24 घंटे जलापूर्ति का कनेक्शन स्वीकृत करवाया गया।

- **विद्यालय की जल वितरण** प्रणाली को सुव्यवस्थित करने के लिए मुख्यमंत्री जन सहभागिता योजना के तहत ₹25,000/— भामाशाह से प्राप्त कर जमा कराए तथा कुल ₹95000 की लागत से सम्पूर्ण विद्यालय परिसर में जी.आई. पाईप फिटिंग करवाई गई जिससे पेयजल टंकियो, शौचालयों तथा पेड़ों को पानी पिलाने हेतु बने नलों में सर्वदा पानी उपलब्ध रहता है। एक भामाशाह से सहयोग प्राप्त कर विद्यालय में रेन वाटर हार्वेस्टिंग के लिए खुदे नलकूप में मोटर मय स्टार्टर लगाई गई जिससे नल से आपूर्ति नहीं होने पर भी विद्यालय में जल की उपलब्धता हमेशा रहती है।

- **सौन्दर्यकरण व वृक्षारोपण:—** विद्यालय के मुख्य प्रवेश द्वार का पुनर्निर्माण भामाशाह श्री हीरालाल आच्छा से छह लाख रुपये का सहयोग प्राप्त कर करवाया गया। विद्यालय का बाहरी दृश्य किसी महल सा प्रतीत होता है। विद्यालय भवन में किए गए रंग में भी देवगढ़ महल की समानता करने का प्रयास किया गया है।

विद्यालय में प्राथमिक कक्षाओं के बरामदे में सांप सीढ़ी जैसे खेल बड़े आकार में चित्रित किए गए हैं। विद्यालय के खंभों पर प्रेरक वाक्य व शब्द लिखे गए हैं। विद्यालय परिसर के समस्त बरामदों में खिड़की से नीचे की दीवार पर विद्यार्थियों द्वारा ही टेराकोटा रंग करके मांडणे चित्रित किए गए हैं।

विद्यालय में नवीन प्रवेश पर विद्यालय में एक पौधा लगाया जाता है। विद्यालय परिसर में सीमित स्थान होने के कारण गमलों में पौधे लगाए गए हैं। ये गमले विद्यालय के शिक्षकों द्वारा उनके जन्मदिवस पर उपहार स्वरूप विद्यालय को प्रदान किए जाते हैं। वर्तमान में विद्यालय में

लगभग 300 पौधे विभिन्न प्रजातियों के लगाए गए हैं। विद्यालय के शिक्षको, विद्यार्थियों एवं समाज के इच्छुक व्यक्तियों द्वारा प्रत्येक रविवार दो घण्टे स्वैच्छिक श्रमदान करके विद्यालय परिसर को स्वच्छ एवं हरित बनाये रखने का प्रयास किया जाता है।

खेल-

विगत 5 वर्षों में विद्यालय के खिलाड़ियों ने बास्केटबॉल के अतिरिक्त अन्य खेलों जैसे कबड्डी, कुश्ती, जूड़ो व एथलेटिक्स में भी उल्लेखनीय प्रदर्शन किया है। इसके लिए विद्यार्थियों को विद्यालय समय के अतिरिक्त भी प्रशिक्षण दिए जाने की व्यवस्था की गई। विद्यालय परिसर में स्थित बास्केटबॉल कोर्ट को परिवर्धित करके उसे बहूपयोगी इन्डोर हॉल बनवाने के लिए जनप्रतिनिधियों व विधायक महोदय से संपर्क करके उनके सहयोग से 69.70 लाख रुपये की राशि DMFT मद से **स्वीकृत** करवाई गई वर्तमान में यह कार्य 80 प्रतिशत पूर्ण हो चुका है। विद्यालय के खेल मैदान के समीप स्थित नगरपालिका की भूमि को मिलाकर एक खेल संकुल निर्माणाधीन है। नगरपालिका देवगढ़ इस संकुल का निर्माण कर रही है। इस संकुल में क्रिकेट, ट्रैक, बैंडमिंटन हॉल, टेबल टेनिस हॉल तथा पैवेलियन की सुविधा रहेगी।

प्रधानाचार्य

रा.उ.मा.वि. देवगढ़, राजसमन्द(राज.)

''ज्ञान संकल्प पोर्टल के विकल्प **Donate To A School** के माध्यम से राजकीय विद्यालयों को माह– मई 2022 में 50 हजार एवं अधिक का सहयोग करने वाले भामाशाह''

S.No.	Donar_Name	School Name	Block_Name	Dist_Name	AMOUNT
1	DEVENDRA RAM	GOVT. SENIOR	KHETRI	JHUNJHUNU	400000
2	JETHU SINGH	MAHATMA GANDHI	PIPRALI	SIKAR	320000
3	MAHENDER PRATAP	GOVT. SENIOR SECONDARY SCHOOL DHANI MOJI (215244)	RAJGARH	CHURU	280000
4	SUMAN LATA	GOVT. GIRLS SENIOR	NOHAR	HANUMANGARH	210000
5	PABU SINGH	GOVT. SENIOR	FATEHPUR	SIKAR	200000
6	MUKESH	SHAHEED NAYAK	SURAJGARH	JHUNJHUNU	125000
8	RAMESH	GOVT. SENIOR	ARTHUNA	BANSWARA	100000
9	KAILASH	GOVT. SENIOR	BANDIKUI	DAUSA	97350
10	SARITA	GOVT. SENIOR	RAJGARH	CHURU	79000
11	RAMJI LAL	GOVT. SENIOR	SAWAI	SAWAIMADHOPU	75000
12	DALEEP KUMAR	GOVT. SENIOR	RAJGARH	CHURU	75000
13	SHRAWAN KUMAR MANGAWA	GOVT. SENIOR SECONDARY SCHOOL MADANI (227221)	DANTARAMGA RH	SIKAR	71000
14	ANTAR SINGH	GOVT. SENIOR SECONDARY SCHOOL TAMBAKHERI (215192)	RAJGARH	CHURU	70000
15	PARSURAM MEENA	GOVT. SENIOR SECONDARY SCHOOL BANOTA (464623)	SAWAI MADHOPUR	SAWAIMADHOPUR	57771

16	RAMSWROOP	G O V T . S E N I O R	CHOMU	JAIPUR	51000
17	UMED SINGH	GOVT. GIRLS UPPER PRIMARY SCHOOL	RAJGARH	CHURU	51000
18	SHAMBHU LAL BHATT	BHAMASHAH DWARKA PRASAD KABRA GOVT.	CHITTORGARH	CHITTAURGARH	51000
19	DHARMENDRA	SHAHID S H	CHURU	CHURU	51000
20	SUBASH CHANDRA	SWATANTRATA SENANI SWARGIYA SHRI	CHIRAWA	JHUNJHUNU	51000
21	SANTOSH	GOVT. SENIOR	SARDARSHAHA	CHURU	51000
22	BHARAT LAL	GOVT. SENIOR	SAWAI	SAWAIMADHOPU	51000
23	ANSHUL	GOVT. SENIOR	SANGANER	JAIPUR	51000
24	RAJESH KUMAR	GOVT. SENIOR	LAXMANGARH	SIKAR	50000
25	BRAHM PRAKASH	GOVT. UPPER PRIMARY	SARDARSHAHA	CHURU	50000

''ज्ञान संकल्प पोर्टल के विकल्प **Donate To A School** के माध्यम से राजकीय विद्यालयों को माह— मई 2022 में प्राप्त जिलेवार राशि''

S.NO.	DISTRICT	TRANSACTION	AMOUNT
1	CHURU	94	2410380
2	SIKAR	120	1310981
3	JHUNJHUNU	28	738830
4	BANSWARA	28	256101
5	CHITTAURGARH	28	227714
6	SAWAIMADHOPUR	10	223871
7	HANUMANGARH	10	215250
8	JAIPUR	27	200000
9	NAGAUR	31	140316
10	DAUSA	5	109732
11	BUNDI	23	91017
12	ALWAR	15	68000
13	JHALAWAR	84	66222
14	GANGANAGAR	16	58281
15	PALI	22	52321
16	UDAIPUR	13	45311
17	BARMER	7	44501
18	KOTA	37	38068
19	BHARATPUR	13	34300

S.NO.	DISTRICT	TRANSACTION	AMOUNT
20	TONK	7	27511
21	AJMER	15	26251
22	BHILWARA	15	23202
23	BARAN	8	23180
24	DHAULPUR	1	22500
25	PRATAPGARH	9	22150
26	RAJSAMAND	16	17150
27	JODHPUR	13	14151
28	BIKANER	7	8100
29	JALOR	77	7253
30	DUNGARPUR	13	3400
31	JAISALMER	3	250
32	KARAULI	0	0
33	SIROHI	0	0
	Total	795	6526294

ज्ञान संकल्प पोर्टल के माध्यम से अनुमोदित/स्वीकृत प्रोजेक्ट:-

विभिन्न औद्योगिक घरानों/ संस्थानों/ व्यक्तिगत दानदाताओं द्वारा राजकीय विद्यालयों मे सहयोग प्रदान करने के उद्धेश्य से स्वीकृति हेतु ज्ञान संकल्प पोर्टल के विकल्प **Create your own Projects** में Projects Submit किए गए। माह मई 2022 में 10 करोड 85 लाख से अधिक की लागत से कुल 19 **Projects** स्वीकृत/अनुमति प्रदान की गई है, उक्त अनुमोदित/स्वीकृत किए गए Projects निम्नानुसार हैः–

क्र. स	कम्पनी/संस्था/दानदाता का नाम	प्रोजेक्ट संख्या	कम्पनी/संस्था/दानदाता द्वारा किए जाने वाले कार्य का विवरण	अनुमानित लागत/व्यय (लाखों
1	श्री बाबू लाल भंसाली	915	राजकीय उच्च माध्यमिक विद्यालय, चितलवान, जालोर में भवन, कक्षा–कक्ष, शौचालय–मूत्रालय, बिजली फिटिंग, पीने के पानी की सुविधा, प्रधानाचार्य कक्ष, रेम्प, खैल मैदान का विकास, कम्प्यूटर कक्ष, पुस्तकालय, वर्शा जल हारवेस्टिंग, रसोई शेड इत्यादि का निर्माण कार्य	305.00
2	श्रीमति भट्टू देवी सोहनलाल मूलचंद मालू मेमोरियल चैरिटेबल ट्रस्ट	931	राजकीय उच्च माध्यमिक विद्यालय, टाल मैदान, सरदारशहर, चुरू में भवन, कक्षा कक्ष (1–8), छात्र–छात्राओं का शौचालय, बिजली की सुविधा/ बिजली की फिटिंग, पेयजल, चारदीवारी, एचएम कक्ष, अन्य कमरे, कंप्यूटर कक्ष, अतिरिक्त कक्षा रूम इत्यादि का निर्माण कार्य	287.00
3	श्री अम्बे मां चैरिटेबल ट्रस्ट	938	श्री अम्बिका रा.बा.उ.मा.वि बूसी, रानी, पाली में भवन निर्माण कार्य	191.03
4	चम्बल फर्टीलाइजार एण्ड केमिकल्स लिमिटेड	909	कोटा एवं बांरा के 54 राजकीय विद्यालयों में मरम्मत, रंग–रोगन एवं चारदीवारी के निर्माण कार्य	109.79
5	श्री अशोक कुमार खीचा	930	महात्मा गांधी राजकीय विद्यालय शिवगंज, सिरोही में कक्षा (1–8), छात्रों के लिए शौचालय, छात्राओं के लिए शौचालय, अतिरिक्त कक्षा के कमरे (9–12) इत्यादि का निर्माण कार्य	66.00
6	स्वधर्म फाउण्डेशन	929	राजकीय प्राथमिक विद्यालय छत्रवाला, सांगानेर सिटी, जयपुर में कक्षा (1–8), छात्र– छात्राओं के शौचालय, रसोई शेड, रैंप, कंप्यूटर कक्ष, फर्नीचर, प्रमुख मरम्मत इत्यादि का निर्माण कार्य	56.12
7	इण्डियन ऑयल कॉर्पोरेशन लिमिटेड	920	राजकीय उच्च प्राथमिक सेन्द्रा, रायपुर, पाली में मिड डे मील शैड एवं प्रार्थना असेम्बली डोम का निर्माण कार्य	55.00
8	स्वधर्म फाउण्डेशन	916	राजकीय प्राथमिक विद्यालय देहलावास, सांगानेर सिटी, जयपुर में कक्षा–कक्ष का निर्माण कार्य	36.60
9	बिरला कोर्पोरेशन लिमिटेड	927	चित्तौडगढ के 4 राजकीय विद्यालयों में छात्र–छात्राओं का शौचालय,, पीने का पानी फर्नीचर, प्रमुख मरम्मत, कमरे का नवीनीकरण इत्यादि का निर्माण कार्य	20.4
10	श्री राम पिस्टन्स	936	रा.बा.उ.मा.वि तिजारा, अलवर में भौतिक विकास कार्य	15.00
11	श्री राम पिस्टन्स	937	अलवर के 2 राजकीय विद्यालय में भौतिक विकास कार्य	10.30
12	श्रीमति सुशमा शुक्ला	912	महात्मा गांधी राजकीय विद्यालय मोरडी, गरही, बांसवाडा में अतिरिक्त कक्षा–कक्ष	6.04
13	अजमेर राउण्ड टेबल इण्डिया	928	राजकीय उच्च प्राथमिक विद्यालय भूनाबेय, अजमेर में कक्षा–कक्ष का निर्माण	6.00
14	श्री सुरेश जैन	918	महात्मा गांधी राजकीय विद्यालय, जावल, सिरोही में पीने के पानी की सुविधा	5.95
15	श्री राम पिस्टन्स	921	राजकीय उच्च प्राथमिक विद्यालय फकरूदीनका, तिजारा, अलवर में शौचालय–मूत्रालय का निर्माण कार्य	3.49
16	स्वधर्म फाउण्डेशन	934	राजकीय प्राथमिक विद्यालय टीबा श्योपुर, सांगानेर सिटी, जयपुर में सोलर पैनल हेतु	1.55
17	श्री राम पिस्टन्स	923	अलवर जिले के तिजारा ब्लॉक के 8 विद्यालयों में सैनिटेशन	1.25
18	श्री कृश्ण सिंह	914	रा.बा.उ.मा.वि 25 एफ गुलाबेवाला, करणपुर, गंगानगर में दरवाजे और खिडकियां का निर्माण कार्य	1.00
19	श्री प्रगाराम मेघवाल	919	महात्मा गांधी राजकीय विद्यालय, जावल, सिरोही मे संगीत एवं अन्य कियाकलाप यंत्र	0.15
			कुल राशि	1085.118

चित्र वीथिका : जुलाई 2022

बाल शिविरा-जुलाई,2022

बाएं से दाएं– कक्षा 10 की छात्राएं क्रमशः सपना कुमारी मेहर , रीना कुमारी भील एवं श्रद्धा पाटीदार राजकीय उच्च माध्यमिक विद्यालय बोरड़ा, झालरापाटन (झालावाड़) द्वारा निर्मित पोस्टर

राजकीय बालिका उच्च प्राथमिक विद्यालय सराणा (जालोर) के कक्षा 7 की छात्रा धापू, कक्षा 6 की कृष्णा, तथा कक्षा 2 के छात्र जसवंत द्वारा बनाये गए बेहतरीन चित्र

चित्र वीथिका : जुलाई 2022

माननीय शिक्षा मन्त्री महोदय डॉ बी डी कल्ला द्वारा RSCERT उदयपुर मे दिनांक 8 जून को NAS की गतिविधियों के पोस्टर का विमोचन किया गया । साथ मे RSCERT की निदेशकसुश्री प्रियंका जोधावात, अतिरिक्त निदेशक श्री शिवजी गौड़, संयुक्त निदेशक अंजलिका जी प्लात , असोसिएट प्रोफेसर श्री कमलेंद्र सिंह राणावत ।

राजकीय उच्च प्राथमिक विद्यालय जावरा, बूंदी में नामांकन बढ़ाने हेतु आयोजित प्रवेशोत्सव कार्यक्रम के तहत जागरूकता रैली में विद्यार्थी, संस्था प्रधान एवं शाला स्टॉफ ।

राजकीय बालिका उच्च प्राथमिक विद्यालय हरीगढ़, ब्लॉक – खानपुर, जिला झालावाड़ में आयोजित भव्य प्रवेशोत्सव कार्यक्रम में भामाशाह श्री अब्दुल हकीम द्वारा शाला की बालिकाओं के लिए एक लाख रुपए की सामग्री भेंट / वितरित की ।

राजकीय उच्च माध्यमिक विद्यालय नाड़सर, भोपालगढ़ में मंगलवार को भामाशाह श्री बाबूलाल जलवानिया ने 15000 रुपये लागत की आटा चक्की प्रधानाचार्य श्रीमती सीमा कुल्हार एवं शाला स्टाफ को भेंट की।

No Bag Day के अवसर पर राजकीय उच्च माध्यमिक विद्यालय, नेवरा गांव, ओसियां (जोधपुर) में योगादि सहगामी क्रियाएं करते हुए योग शिक्षक एवं विद्यार्थीगण।.

शिक्षा विभाग राजस्थान

शिविरा पंचांग : 2022–2023

राजस्थान के प्रारम्भिक शिक्षा एवं माध्यमिक शिक्षा के अधीन समस्त राजकीय एवं गैर राजकीय विद्यालयों/आवासीय विद्यालयों/विशेष प्रशिक्षण शिविरों एवं शिक्षक प्रशिक्षण विद्यालयों के लिए सत्र 2022–2023 का यह शिविरा पंचांग प्रस्तुत है। इसके अनुसार ही सत्रपर्यन्त विद्यालयी कार्यक्रम, अवकाश, परीक्षा, खेलकूद प्रतियोगिता आदि का आयोजन अनिवार्य है। किसी विशेष अवसर अथवा कार्यक्रम पर यदि किसी संस्थाप्रधान को कोई परिवर्तन करने की आवश्यकता हो, तो वह परिवर्तन सम्बन्धी निवेदन अपने क्षेत्र के जिला शिक्षा अधिकारी (मुख्यालय)–प्रारम्भिक/माध्यमिक को प्रस्तुत करेंगे। जिला शिक्षा अधिकारी(मुख्यालय)–प्रारम्भिक/माध्यमिक मांग के औचित्य की जाँच करेंगे तथा उनकी अनुशंषा पर निदेशक, प्रारम्भिक/माध्यमिक शिक्षा, राजस्थान, बीकानेर की स्वीकृति के बाद ही संस्थाप्रधान द्वारा परिवर्तन किया जा सकेगा।

➢ **सामान्य निर्देश** :–

1. शिक्षण सत्रः 2022–2023 दिनांक 24 जून, 2022 से आरम्भ होगा तथा सामान्य प्रवेश प्रक्रिया आरम्भ होगी। प्रवेशोत्सव दो चरणों में चलाया जाएगा। प्रथम चरण 24 जून 2022 से प्रारम्भ होगा। नियमित कक्षा शिक्षण 01 जुलाई, 2022 से प्रारम्भ होगा।
2. प्रवेश की अंतिम तिथि 15 जुलाई, 2022 अथवा परीक्षा परिणाम घोषित होने के 10 दिन बाद तक रहेगी। (माध्यमिक कक्षाओं हेतु)
3. व्यावसायिक शिक्षा संचालित विद्यालयों में योजना का प्रचार–प्रसार एवं नवीन विद्यार्थियों के लिए प्रवेश हेतु काउंसलिंग कार्य 21 से 30 जून, 2022 तक किया जाए।
4. मध्यावधि अवकाश 19 से 31 अक्टूबर, 2022 तक रहेगा।
5. शीतकालीन अवकाश 25 दिसम्बर, 2022 से 5 जनवरी, 2023 तक रहेगा।
6. ग्रीष्मावकाश 17 मई, 2023 से 23 जून, 2023 तक रहेगा।
7. वार्षिक परीक्षा/बोर्ड परीक्षा में अंतिम परीक्षा के उपरान्त विद्यार्थियों को आगामी कक्षा में अस्थाई प्रवेश दिया जाए। आगामी नवीन सत्र 01 मई 2023 से प्रारम्भ होगा तथा 01 मई से 16 मई, 2023 तक प्रवेशोत्सव का प्रथम चरण का आयोजन होगा।
8. संस्थाप्रधान द्वारा समस्त स्टाफ से नवीन समय विभाग चक्र के अनुरूप सम्पूर्ण शैक्षिक सत्र के लिए कक्षा शिक्षण हेतु विषय योजना का निर्माण करवाया जाकर योजना का परिवीक्षण किया जाएगा। उक्त अवधि में विद्यार्थियों को टी0सी0/नव प्रवेशित विद्यार्थियों का एस.आर. रजिस्टर में पंजीयन सम्बन्धी कार्यों का समुचित निष्पादन किया जाएगा।)
9. केन्द्र व राज्य सरकार द्वारा समस्त राष्ट्र के लिए रेडियो/दूरदर्शन/समाचार पत्रों में/लिखित आदेश द्वारा घोषित अवकाश विद्यालयों में भी मान्य होंगे।
10. यदि किसी क्षेत्र विशेष अथवा वर्ग विशेष/कारण विशेष को आधार बनाकर या किसी विशेष दिन का सेक्शनल/रीजनल अवकाश/स्थानीय अवकाश राज्य सरकार द्वारा घोषित किया जाए तो वह अवकाश सम्बन्धित वर्ग के विद्यालयों/उन विशिष्ट क्षेत्रों पर ही लागू होगा, अन्य वर्ग के विद्यालयों पर उक्त अवकाश लागू नहीं रहेंगे।
11. शिविरा पंचांग एवं राजस्थान सरकार के पंचांग में उल्लिखित अवकाश की तिथि में कोई विसंगति हो, तो ऐसी स्थिति में राजस्थान सरकार के पंचांग की तिथि को सही मानते हुए इस पंचांग में वैसा ही संशोधन माना जाए।
12. सत्रारम्भ एवं सत्रान्त की संस्थाप्रधान वाक्पीठ का आयोजन शिविरा पंचांग में निर्धारित अवधि में ही करवाया जाना आवश्यक होगा। उक्त आयोजन में किसी भी प्रकार का परिवर्तन निदेशक, प्रारम्भिक/ माध्यमिक शिक्षा की अनुमति बिना नहीं किया जा सकेगा।
13. बाल सभाओं में वृहद् और सामुदायिक बाल सभाओं में बाल संरक्षण के तहत बाल अधिकारों के बारे में जागरूक किया जाए एवं बाल विवाह के दुष्परिणाम व बाल विवाह निषेध अधिनियम तथा सड़क सुरक्षा की जानकारी दी जाए। इसी प्रकार पीटीएम व एसडीएमसी की बैठकों में भी जन समुदाय के साथ उक्त बाबत् चर्चा की जाए।
14. बाल–सभा/पीटीएम/एसएमसी/एसडीएमसी की बैठकों में "तम्बाकू निषेध क्षेत्र" , तम्बाकू मुक्त विद्यालय की गाइड लाईन तथा COTPA ACT 2003 की जानकारी दी जाए ताकि विद्यालय व उसके आसपास के क्षेत्र को तम्बाकू मुक्त रखे जाने के प्रावधान की समुचित पालना हो सके।
15. प्रत्येक सोमवार को कक्षा 1 से 5 तक के छात्र–छात्राओं को आयरन की पिंक गोली तथा कक्षा 6 से 12 के छात्र–छात्राओं को आयरन फोलिक एसिड की नीली गोली मध्यान्ह भोजन उपरान्त दी जाए।
16. शिक्षक मुल्यांकन प्रपत्र (TAF) की प्रथम छःमाही डेटा प्रविष्टि जुलाई से अगस्त–2022 तथा द्वितीय छःमाही डेटा प्रविष्टि जनवरी से फरवरी–2023 (संभावित समय)
17. शाला–सिद्धि हेतु स्व मूल्यांकन के लिए संभावित समयावधि– जुलाई से अक्टूर–2022 तथा बाह्य मूल्यांकन हेतु संभावित समयावधि – अगस्त से दिसम्बर–2022
18. CCE/SIQE/FLN हेतु रचनात्मक आकलन सतत् रूप से सत्र पर्यन्त किया जाएगा।

➢ **प्रवेश** :–

1. कक्षा–1 में प्रवेश के समय राज्य सरकार द्वारा संशोधित प्रावधानानुसार विद्यार्थियों की आयु 5 वर्ष या उससे अधिक परन्तु 7 वर्ष से कम वर्ष निर्धारित की गई है।
2. राज्य सरकार प्रवेश प्रक्रिया हेतु कोई निश्चित तिथि का निर्धारण कर सकती है। फिर भी आर.टी.ई. अधिनियम– 2009 के अनुसार बालक–बालिकाओं का विद्यालय में प्रवेश वर्ष पर्यन्त हो सकेगा।
3. राज्य कर्मचारी/माता–पिता/अभिभावक के स्थान परिवर्तन की स्थिति में स्थानान्तरण प्रमाण–पत्र के आधार पर विद्यार्थी को मध्य सत्र में प्रवेश दिया जा सकेगा।
4. यदि परिस्थितिवश बोर्ड द्वारा रोके गये परीक्षा परिणाम विलम्ब से घोषित किए जाते हैं, तो विद्यार्थियों को परीक्षा परिणाम की घोषणा के सात दिवस के भीतर प्रवेश दिया जाए। प्रवेश के समय ही विद्यार्थियों को निःशुल्क पाठ्यपुस्तकें उपलब्ध करवाना सुनिश्चित किया जाए।
5. हाउस होल्ड सर्वे में आउट ऑफ स्कूल (OoSc) के रूप में चिन्हित बालक–बालिकाओं की मेनस्ट्रीमिंग हेतु अनामांकित बालक–बालिकाओं के माता–पिता/अभिभावकों से सम्पर्क कर उनका आयु अनुरूप कक्षा में प्रवेश कराना, उनके विशेष शिक्षण की आवश्यकता का आकलन करना एवं आवश्यकतानुसार संघनित पाठ्यक्रम के माध्यम से विशेष शिक्षण की व्यवस्था करना सुनिश्चित किया जाए।
6. ड्रॉपआउट एवं अनामांकित विशेष आवश्यकता वाले बालक–बालिकाओं को उनकी आयु के अनुरुप कक्षा में नामांकन पश्चात, विद्यालय में अध्ययनरत विशेष आवश्यकता वाले बालक–बालिकाओं का फंक्शनल असेसमेन्ट करवाया जाकर, पात्र बच्चों को समग्र शिक्षा अभियान के अन्तर्गत निःशुल्क अंग–उपकरण उपलब्ध कराए जाएंगे एवं होमबेस्ड एज्युकेशन से जोड़े गए बच्चों को उनकी आयु के अनुरूप कक्षा में प्रवेश सुनिश्चित किया जाएगा।
7. कस्तूरबा गाँधी बालिका आवासीय विद्यालय एवं मेवात बालिका आवासीय तथा वैकल्पिक शिक्षा प्रकोष्ठ के अन्तर्गत संचालित आवासीय विद्यालयों मे अनामांकित एवं ड्रॉपआउट बालिकाओं को प्रवेश दिलवाया जाएगा। पंचायत प्रारम्भिक शिक्षा अधिकारियों (PEEO)की बैठक में चर्चा कर उनके सहयोग से परिक्षेत्र की पात्र बालिकाओं का उक्त विद्यालयों में प्रवेश करवाया जाए।
8. कस्तूरबा गाँधी बालिका आवासीय विद्यालय हेतु राजस्थान स्कूल शिक्षा परिषद कार्यालय के दिशा–निर्देशों के अनुरूप विद्यालय की कुल सीटों की 5 प्रतिशत सीटों पर विशेष आवश्यकता वाले बालक–बालिकाओं को प्रवेशित किए जाने हेतु विशिष्ट प्रयास किए जाएं।

➢ **प्रार्थना सभा** :–

प्रार्थना सभा कार्यक्रम हेतु 25 मिनट का समय निर्धारित है, जिसमें की जाने वाली गतिविधियां – राष्ट्रगीत, प्रार्थना, योगाभ्यास, सूर्य नमस्कार, प्राणायाम, समाचार वाचन, प्रतिज्ञा, राष्ट्रगान आदि हैं। प्रत्येक माह के प्रथम सोमवार को प्रार्थना सभा में समस्त कार्मिक एवं विद्यार्थी तम्बाकू का उपयोग नहीं करने की शपथ लेंगे।

विद्यालय प्रबन्धन :–विद्यालय की व्यवस्था एवं प्रबन्धन, विद्यालय प्रबन्धन समिति/विद्यालय विकास एवं प्रबन्धन समिति (SMC/SDMC) के सदस्यों के समुचित सहयोग एवं भागीदारी की सुनिश्चितता की जाए। विद्यालय के सुचारु संचालन के लिए समग्र शिक्षा अभियान द्वारा निम्न सुविधाएं प्रदान की जाएगी :–

1. राज्य के समस्त राजकीय विद्यालयों में सामान्य शैक्षिक, सह–शैक्षिक भौतिक आवश्यकताओं की पूर्ति एवं पूराने उपकरणों के प्रतिस्थापन तथा विद्यालय स्वच्छता एक्शन प्लान हेतु कम्पोजिट स्कूल ग्रान्ट दिए जाने का प्रावधान है। इस सम्बन्ध में राजस्थान स्कूल शिक्षा परिषद् के कम्पोजिट स्कूल ग्रांट दिशा–निर्देश पत्रांक : रास्कूशिपा/जय/वै.शि./3S-1/CSG दिशा–निर्देश/2021–22/9081 दिनांक : 26.09.2021

के अनुसार विद्यार्थी संख्या के आधार पर किए गए वित्तीय प्रावधानों के अनुसार इस राशि में से 10 प्रतिशत राशि स्वच्छता एक्शन प्लान हेतु निर्धारित की गई है। उपर्युक्त आदेश के तहत शौचालय/मूत्रालयों की साफ–सफाई, पेयजल सुविधा के रख–रखाव तथा मध्याह्न भोजन से पूर्व साबुन से हाथ धोने की व्यवस्था एवं स्वच्छता हेतु स्वच्छता अनुदान राशि का उपयोग किया जाए।

2. प्रत्येक विद्यार्थी की वर्ष में दो बार (अगस्त व जनवरी माह में) "शाला स्वास्थ्य कार्यक्रम" के अन्तर्गत स्वास्थ्य जाँच की जाए तथा रिकॉर्ड संधारित किया जाए।
3. अक्टूबर–2022 से दिसम्बर–2022 तक आयोज्य SMC/SDMC प्रशिक्षण में समिति सदस्यों को सक्रिय भागीदारी हेतु प्रोत्साहित किया जाए।

➢ **कालांशवार विभाजन :–**

ग्रीष्मकालीन एवं शीतकालीन अवधि में विद्यालय संचालन समयानुरूप अग्रांकित विवरणानुसार कालांशवार 8 कालांश हेतु रहेगा।

समय सारिणी :–

एक पारी विद्यालयों हेतु समय सारिणी निम्नानुसार होगी :

क्र. सं.	विवरण	ग्रीष्मकाल में विद्यालय संचालन हेतु कालांश विभाजन	शीतकाल में विद्यालय संचालन हेतु कालांश विभाजन
1	समयावधि	1 अप्रेल से 30 सितम्बर	1 अक्टूबर से 31 मार्च
2	विद्यालय समय	7:30 बजे से 1:00 बजे तक (कुल 5:30 घंटे) (प्रत्येक कालांश 35 मिनट)	10:00 बजे से 4:00 बजे तक (कुल 6:00 घंटे) (01 से 06 कालांश 40 मिनट तथा 07 से 08 कालांश 35 मिनट)

1. **नोट :–** शैक्षिक गुणवत्ता एवं मनोविज्ञान के मद्देनजर कालांशों में विषय आवंटन काठिन्य स्तर के आधार पर इस प्रकार किया जाए कि अपेक्षाकृत कठिन विषय के बाद सरल विषय का कालांश हो। यथासंभव मुख्य विषयों का शिक्षण प्रथम छः कालांश में किया जाए। जहाँ तक संभव हो, समस्त विद्यालय एक पारी में चलाए जाएंगे। जो विद्यालय वर्तमान में दो पारी में चल रहे हैं तथा विद्यालय की परिस्थितिवश आगामी सत्र में भी दो पारी/आंशिक दो पारी में संचालन आवश्यक है, उनके संस्था प्रधान औचित्यपूर्ण प्रस्ताव संबंधित जिला शिक्षा अधिकारी (मुख्यालय)–प्रारम्भिक/माध्यमिक को प्रस्तुत करेंगे तथा जिला शिक्षा अधिकारी (मुख्यालय)–प्रारम्भिक/माध्यमिक परीक्षणोपरांत स्पष्ट अनुशंसा सहित जिले के समेकित प्रस्ताव सम्भागीय संयुक्त निदेशक को 15 जुलाई, 2022 तक प्रस्तुत करेंगे तथा सम्भागीय संयुक्त निदेशक सम्पूर्ण परिक्षेत्र के प्राप्त प्रस्तावों पर विभागीय निर्देशों के अनुरूप गुणावगुण के आधार पर 31 जुलाई, 2022 तक सकारण आदेश जारी कर निदेशालय (प्रारम्भिक/माध्यमिक) को अवगति प्रदान करेंगे। प्रतिदिन 08 कालांश हेतु समक्ष विभाग चक्र तैयार किया जाएगा। प्रार्थना सभा (मय योगाभ्यास) तथा मध्यान्तर प्रत्येक 25 मिनट के होंगे। मध्यान्तर चौथे कालांश के पश्चात् होगा।

2. **दो पारी में संचालित विद्यालयों का समय :–**

क्र.सं.	अवधि	विद्यालय संचालन का समय
I.	1 अप्रेल से 30 सितम्बर तक	प्रातः 7:00 से सांय 6:00 बजे तक (प्रत्येक पारी 5.30 घंटे) (प्रत्येक कालांश 35 मिनट)
II.	1 अक्टूबर से 31 मार्च तक	प्रातः 7:30 से सांय 5:30 बजे तक (प्रत्येक पारी 5.00 घंटे) (01 व 05 वा कालांश 35 मिनट शेष सभी कालांश 30 मिनट)

1. दो पारी विद्यालयों का कक्षा स्तर अनुसार संचालन निम्नांकित पारी क्रम में किया जाए :–

क्र.सं.	विद्यालय का प्रकार	पारी	पारी क्रम
1.	उच्च माध्यमिक विद्यालय (कक्षा 1 से 12)	(दो पारी)	प्रथम पारी कक्षा 9 से 12 द्वितीय पारी कक्षा 1 से 8
2.	उच्च माध्यमिक विद्यालय (कक्षा 6 से 12)	(दो पारी)	प्रथम पारी कक्षा 9 से 12 द्वितीय पारी कक्षा 6 से 8
3.	उच्च माध्यमिक विद्यालय (कक्षा 9 से 12)	(दो पारी)	प्रथम पारी कक्षा 11 से 12 द्वितीय पारी कक्षा 9 से 10
4.	माध्यमिक विद्यालय (कक्षा 1 से 10)	(दो पारी)	प्रथम पारी कक्षा 6 से 10 द्वितीय पारी कक्षा 1 से 5
5.	माध्यमिक विद्यालय (कक्षा 6 से 10)	(दो पारी)	प्रथम पारी कक्षा 9 से 10 द्वितीय पारी कक्षा 6 से 8

2. दो पारी विद्यालय (माध्यमिक/उच्च माध्यमिक) के संस्थाप्रधान का समय प्रातः 10:00 से सायं 5:00 बजे तक रहेगा तद्नुसार विद्यालय कार्यालय का समय भी उक्तानुसार ही रहेगा। वे अपने स्तर पर स्वेच्छा से इसमें कोई भी परिवर्तन नहीं करेंगे।
3. राजस्थान राज्य शैक्षिक अनुसंधान एवं प्रशिक्षण परिषद्, उदयपुर के शैक्षिक प्रौद्योगिकी विभाग, राजस्थान, अजमेर द्वारा आकाशवाणी के सहयोग से विद्यालय प्रसारण कार्यक्रम के तहत् कक्षा – 3 से 12 तक के लिए चयनित विषयों के पाठ्यक्रम आधारित चयनित पाठ, गैर पाठ्यक्रम आधारित पाठ तथा बोर्ड कक्षाओं के विभिन्न विषयों पर परीक्षामालाओं का प्रसारण आकाशवाणी केन्द्रों द्वारा करवाया जाता है। समस्त संस्थाप्रधान छात्र/छात्राओं को शिक्षण का लाभ पहुँचाने के उद्देश्य से स्वयं के विद्यालय में रेडियो की उपलब्धता सुनिश्चित करते हुए विद्यालय प्रसारण कार्यक्रम के तहत् किए जा रहे प्रसारण को अनिवार्यतः सुनवाने की व्यवस्था करेंगे। यह कार्यक्रम 1 जुलाई, 2022 से स्थानीय वार्षिक परीक्षा आरम्भ होने के पूर्व तक दोपहर **12:35 बजे से 12:55** बजे तक कार्यक्रमानुसार प्रत्येक विद्यालयी कार्य दिवस को प्रसारित किया जाएगा।
4. राजस्थान राज्य शैक्षिक अनुसंधान एवं प्रशिक्षण परिषद्, उदयपुर तथा माध्यमिक शिक्षा बोर्ड, राजस्थान, अजमेर द्वारा प्रत्येक कक्षा हेतु पुस्तकालय कालांश का निर्धारण किया गया है। यह सुनिश्चित किया जाए की प्रत्येक विद्यार्थी पुस्तकालय की सुविधा से लाभान्वित हो, अतः रोटेशन के आधार पर प्रति सप्ताह प्रत्येक कक्षा हेतु पुस्तकालय कालांश का निर्धारण किया जाए।

यदि एक ही शाला परिसर में दो विद्यालय संचालित हों तथा दो पारी में संचालन की स्वीकृति प्राप्त हो, तो माध्यमिक/उच्च माध्यमिक विद्यालय प्रथम पारी में तथा प्राथमिक/उच्च प्राथमिक विद्यालय द्वितीय पारी में संचालित होंगे। जिला शिक्षा अधिकारी (मुख्यालय)– प्रारम्भिक/माध्यमिक अपने स्तर पर इस व्यवस्था में कोई परिवर्तन नहीं करेंगे। समन्वित विद्यालय, जो दो या दो से अधिक परिसर में संचालित हैं, में समान स्तर की समस्त कक्षाएं एक ही समय में (समान पारी में) संचालित की जाएगी।

➢ **सहशैक्षिक गतिविधियां :–**

1. समस्त सहशैक्षिक गतिविधियों का आयोजन विभागीय निर्देशों के अनुरूप किया जाए।
2. सभी राजकीय माध्यमिक एवं उच्च माध्यमिक विद्यालयों में ''चाईल्ड राईट्स क्लब, वन एवं पर्यावरण क्लब, विज्ञान क्लब, रोड सेफ्टी क्लब एवं टूरिज्म क्लब व निदेशालय द्वारा समय–समय पर जारी क्लब गठन संबंधी निर्देशों के अनुरूप क्लब की स्थापना अनिवार्य रूप से की जाए तथा इनसे संबंधित गतिविधियों का संचालन आवश्यक रूप से किया जाए। तम्बाकू नियंत्रण हेतु TOBACO MONITOR विभागीय निर्देशानुसार बनाए जाएं ।
3. समस्त विद्यालयों में वार्षिको उत्सव एवं सखा संगम (एल्यूमिनी मीट) का आयोजन समग्र शिक्षा द्वारा घोषित कार्यक्रम अनुसार किया जाएगा। समस्त विद्यालयों में समाजोपयोगी उत्पादक कार्य (SUPW) एवं समाज सेवा शिविर अनिवार्यतः 30 नवम्बर से पूर्व आयोजित कर लिए जाए। इन शिविरों के दौरान गांधी जी द्वारा प्रत्येक व्यक्ति को स्वच्छता सम्बन्धी गतिविधियों को सहज प्रवृत्ति एवं दैनिक वृत्ति के रूप में अंगीकार करने की सीख के विशेष संदर्भ में दैनिक जीवन में "स्वच्छता एवं साफ–सफाई की अनिवार्यता" विषयक उद्बोधन तथा सामूहिक श्रमदान द्वारा विद्यालय परिसर के सौंदर्यकरण एवं वृक्षारोपण सम्बन्धी गतिविधियां अनिवार्य रूप से सम्मिलित की जाए।
4. माध्यमिक शिक्षा बोर्ड, राजस्थान, अजमेर द्वारा संचालित विद्यालय आधारित मूल्यांकन योजना के अन्तर्गत कक्षा 9 एवं 10 के लिए विद्यालय में संचालित साहित्यिक एवं सांस्कृतिक प्रवृत्तियों में से एक प्रवृत्ति में प्रत्येक विद्यार्थी को भाग लेना अनिवार्य होगा तथा स्वास्थ्य एवं शारीरिक विकास हेतु सुविधानुसार आयोजित प्रवृत्तियों में से प्रत्येक विद्यार्थी को कम से कम दो प्रवृत्तियों में भाग लेना अनिवार्य होगा।
5. समस्त विद्यालयों मे "विद्यालय प्रबन्धन समिति (एसएमसी)" एवं "विद्यालय विकास एवं प्रबन्धन समिति (एसडीएमसी)" की कार्यकारिणी समिति की बैठक प्रतिमाह अमावस्या के दिन ही आयोजित की जाएगी। ''समग्र शिक्षा अभियान सामुदायिक गतिशीलता प्रकोष्ठ'' के प्लान के अनुसार "विद्यालय प्रबन्धन समिति (एसएमसी)" एवं "विद्यालय विकास एवं प्रबन्धन समिति (एसडीएमसी)" की उक्त बैठकों को "समुदाय जागृति दिवस" के रूप में मनाया जाए। यदि अमावस्या के दिन विद्यालय में अवकाश हो तो, इनका आयोजन अगले कार्य दिवस पर किया जाएगा। "विद्यालय प्रबन्धन समिति (एसएमसी)" एवं "विद्यालय विकास एवं प्रबन्धन समिति (एसडीएमसी)" हेतु गैर आवासीय प्रशिक्षण का आयोजन राजस्थान स्कूल शिक्षा परिषद्, जयपुर से प्राप्त दिशा–निर्देशों के अनुरूप करवाया जाएगा।

➢ **प्रबोधन एवं प्रबन्धन :–**

1. एकीकृत जिला शिक्षा सूचना प्रणाली (यू–डाईस) के अन्तर्गत 30 सितम्बर के आधार पर जिले के समस्त राजकीय/केन्द्रीय विद्यालय/गैर–राजकीय समस्त विद्यालयों, जिनमें कक्षा 1–12 तक के विद्यार्थी अध्ययनरत हैं, शैक्षिक नियोजन की दृष्टि से उनकी विभिन्न सूचनाएं, यथा विद्यार्थियों/शिक्षकों/विद्यालयों की श्रेणीवार संख्या आदि संकलित की

जाए। सभी शिक्षक/संस्था प्रधान यू–डाईस सूचना संकलन प्रपत्र की समय पर पूर्ति सुनिश्चित करें।

2. कल्प कार्यक्रम के अंतर्गत संचालित विद्यालयों में कम्प्यूटर लैब का रख–रखाव विद्यालय को समग्र शिक्षा अभियान से उपलब्ध कराई जा रही स्कूल फेसिलेटी ग्राण्ट/मैन्टीनेन्स ग्राण्ट से विद्यालय द्वारा करवाया जाए एवं लैब को सुरक्षित रखते हुए विद्यालयों में कक्षा 6 से 8 के विद्यार्थियों हेतु प्रति सप्ताह अधिकतम दो–दो कालांश प्रति कक्षा लगवाए जाएं एवं विद्यालय में उपलब्ध ई–कन्टेन्ट (विज्ञान, गणित एवं अंग्रेजी) द्वारा सम्बलन प्रदान किया जाए।

➢ **उत्सव एवं अवकाश :–**

1. प्रत्येक माह हेतु माहवार पंचांग में अंकित उत्सव अनिवार्यतः मनाए जाएं।
2. प्रत्येक सप्ताह में आने वाले उत्सवों को उसी सप्ताह के शनिवार (No bag day) के अन्य कार्यक्रम के साथ मनाया जाए।
3. 15 अगस्त, 26 जनवरी एवं 02 अक्टूबर को पूर्ण अवकाश होने पर भी उसी दिवस को उत्सव मनाया जाना अनिवार्य है। शिक्षकों, कर्मचारियों एवं विद्यार्थियों की स्वयं के विद्यालय में उपस्थिति अनिवार्य है।
4. 02 अक्टूबर को विद्यार्थियों द्वारा महात्मा गाँधी के जीवन पर आधारित नाटक, कविता, अभिनय आदि गतिविधियां/क्रियाकलाप करवाए जाएं। गाँधी जी के जीवन तथा गाँधी दर्शन से सम्बन्धित डॉक्यूमेंट्री, फीचर फिल्में अथवा अन्य संदर्भ साहित्य से सम्बन्धित दृश्य सामग्री का प्रदर्शन विद्यार्थियों द्वारा गांधीजी के जीवन चरित्र एवं मूल्यों से प्रेरणा ग्रहण करने के उद्देश्य से करवाया जाए।
5. मध्यावधि अवकाश, शीतकालीन अवकाश तथा ग्रीष्मावकाश में विद्यालयों के मंत्रालयिक एवं चतुर्थश्रेणी कर्मचारी केवल राजपत्रित अवकाश का ही उपभोग करेंगे।
6. प्रत्येक संस्थाप्रधान इस पंचांग में निर्दिष्ट अवकाशों के अतिरिक्त सत्र में दो दिवसों का अवकाश घोषित कर सकते हैं, जिनमें से एक मध्यावधि अवकाश से पहले एवं दूसरा मध्यावधि अवकाश के बाद किया जाए। संस्था प्रधान इसकी पूर्व सूचना 31 जुलाई, 2022 से पूर्व नियन्त्रण अधिकारी को भेजें। अवकाश हेतु दिवसों का चयन करते समय यह ध्यान रखा जावे कि महत्वपूर्ण विद्यालयी कार्यक्रम अप्रभावित रहें।
7. जिला कलक्टर द्वारा घोषित अवकाश सम्बन्धित जिले के विद्यालय में मान्य होंगे।

मूल्यांकन एवं परीक्षा :–

1. कक्षा – 6 से 12 की परख, अर्द्धवार्षिक, वार्षिक परीक्षा एवं पूरक परीक्षाएं (कक्षा–8 की प्रारम्भिक शिक्षा पूर्णता प्रमाण–पत्र परीक्षा तथा कक्षा–5 की प्राथमिक शिक्षा अधिगम स्तर मूल्यांकन प्रारम्भिक शिक्षा निदेशालय एवं कक्षा – 10 एवं 12 में वार्षिक परीक्षा के स्थान पर माध्यमिक शिक्षा बोर्ड, राजस्थान, अजमेर द्वारा परीक्षा ली जाएगी) इस पंचांग के अनुसार सम्पन्न की जाए तथा परीक्षा परिणामों की घोषणा तथा विद्यार्थियों को प्रगति पत्रों का वितरण 30 अप्रेल, 2023 को अनिवार्य रूप से कर दिया जाए।
2. कक्षा– 1 से 5 में SIQE के अन्तर्गत CCE के तहत तीन योगात्मक आकलन अग्रांकित विवरणानुसार सम्पादित किए जाएंगे :–

टर्म	पाठ्यक्रम विभाजन	योगात्मक आकलन आयोजन माह
प्रथम	लगभग 45 %	सितम्बर – 2022
द्वितीय	लगभग 40 %	जनवरी – 2023
तृतीय	लगभग 15 %	बोर्ड परीक्षा से पूर्व

कक्षा – 5 हेतु तृतीय योगात्मक आकलन के स्थान पर "प्राथमिक शिक्षा अधिगम स्तर मूल्यांकन" का आयोजन किया जाएगा, जिसके लिए तिथियां पृथक से निर्धारित की जाएगी ।

3. परख अवधि में शाला समय से पूर्व विद्यार्थियों को अगले दिवस परख की तैयारी हेतु छोड़ा जा सकता है, लेकिन कर्मचारी पूरे समय तक उपस्थित रहेंगे।
4. सभी स्तर के विद्यालयों में अर्द्धवार्षिक एवं वार्षिक परीक्षा के लिए क्रमशः एक तथा दो दिवसों का परीक्षा तैयारी अवकाश रहेगा। इन दिनों में विद्यालय खुलेंगे और अध्यापक एवं मंत्रालयिक कर्मचारी परीक्षा के अभिलेख तथा व्यवस्था संबंधित कार्य पूर्ण करेंगे। इस प्रकार का अवकाश रविवार एवं अन्य राजपत्रित अवकाश छोड़कर किया जाएगा।
5. माध्यमिक शिक्षा बोर्ड, राजस्थान, अजमेर द्वारा आयोज्य कक्षा 10 एवं 12 की परीक्षा में प्रविष्ट होने वाले विद्यार्थियों हेतु 14 दिवस का परीक्षा पूर्व तैयारी अवकाश रहेगा। उक्त अवधि में विद्यार्थियों हेतु आवश्यकतानुसार विशेष कक्षाओं का आयोजन किया जाए।
6. एस.आई.क्यू.ई./सी.सी.ई. संचालित समस्त विद्यालयों में पारम्परिक प्रक्रिया से मूल्यांकन न होकर सतत् एवं व्यापक मूल्यांकन प्रक्रिया से ही मूल्यांकन किया जाएगा।
7. विशेष आवश्यकता वाले बालक–बालिकाओं की नियमित मूल्यांकन प्रक्रिया के सम्बन्ध में राजस्थान सरकार, स्कूल शिक्षा विभाग, प्रारंभिक शिक्षा (आयोजना) अनुभाग के परिपत्र क्रमांक : प.14 (3) प्राशि/आयो/2014, जयपुर, दिनांकः 27.10.2014 की पालना की जाए।

➢ **पूरक परीक्षा :–**

माध्यमिक शिक्षा के अधीन कक्षा 9 एवं 11 की पूरक परीक्षाओं का आयोजन 08 से 15 मई, 2023 तक किया जाए। परीक्षा परिणाम 16 मई, 2023 को घोषित कर प्रगति पत्र वितरित कर दिए जाएं।

"No Bag Day" –

1. माननीय मुख्यमंत्री महोदय द्वारा 20 फरवरी, 2020 को राज्य विधानसभा में बजट भाषण के दौरान शिक्षा विभाग से सम्बन्धित घोषणाओं (बिन्दु संख्या – 97) के अन्तर्गत समस्त सरकारी विद्यालयों में शनिवार के दिन "No Bag Day" रखे जाने और उस दिन कोई अध्यापन कार्य नहीं किए जाने बाबत निर्णय की घोषणा की गई थी। उक्तानुरूप सत्र :2022–23 में प्रत्येक सप्ताह में शनिवार को "बस्ता मुक्त दिवस" मनाया जाएगा ।
2. "No Bag Day" का उद्देश्य विद्यार्थियों के समग्र विकास एवं अन्तर्निहित क्षमताओं को पहचान कर अध्ययन – अध्यापन के पारम्परिक तरीकों से इतर सहगामी क्रियाओं के माध्यम से सीखने–सिखाने की प्रक्रिया को आनंददायी बनाना है।
3. इस योजना के अन्तर्गत प्रत्येक शनिवार को विद्यार्थी स्कूल बैग के बिना विद्यालय आएंगे।
4. प्रत्येक शनिवार को कक्षा स्तर के अनुसार थीम आधारित निम्नलिखित गतिविधियां करवाई जाएगी :–

क. सं0	शनिवार क्रमांक	थीम
1	माह का प्रथम शनिवार	राजस्थान का पहचानों
2	माह का द्वितीय शनिवार	भाषा कौशल विकास
3	माह का तृतीय शनिवार	खेलेगा राजस्थान–बढ़ेगा राजस्थान
4	माह का चतुर्थ शनिवार	मैं वैज्ञानिक बनूंगा
5	माह का पंचम शनिवार	बाल–सभा मेरे अपनों के साथ

5. "No Bag Day" के दिन आनंददायी तरीके से सीखने–सिखाने की प्रक्रिया कक्षावार न होकर निम्नांकितानुसार कक्षा समूहवार होगी।

क.सं0	समूह का नाम	कक्षा वर्ग
1	अंकुर	कक्षा 1 से 2
2	प्रवेश	कक्षा 3 से 5
3	दिशा	कक्षा 6 से 8
4	क्षितिज	कक्षा 9 से 10
5	उन्नति	कक्षा 11 से 12

6. 15 अगस्त, 26 जनवरी व 2 अक्टूबर के अतिरिक्त शिविरा पंचांग में दर्शाए गए/मनाए जाने वाले समस्त उत्सव जयन्तियां सम्मिलित है। प्रत्येक शनिवार को "बस्ता मुक्त दिवस" के रूप में आयोजन करने हेतु शिविरा पंचांग में सम्मिलित गतिविधियों/कार्यक्रमों/क्रियाकलापों के आयोजन "No Bag Day" हेतु निर्धारित समय सारिणी में से 40 मिनट का समय निकालकर विद्यालय संचालन के अंतिम समय में आयोजित किए जाएंगे।
7. सम्पूर्ण सप्ताह (सोमवार से रविवार) के दौरान पड़ने वाले उत्सवों/जयंतियों का विधिवत आयोजन सप्ताह में "बस्ता मुक्त दिवस" (शनिवार) को समारोहपूर्वक किया जाए, जिसके लिए रूप रेखा का निर्माण एवं पूर्व तैयारी सम्बन्धित शिक्षकों एवं आयोजन में सक्रिय भागीदारी निभाने वाले विद्यार्थियों द्वारा उक्त शनिवार से पूर्व की जाए।
8. **बस्ता मुक्त दिवस** मनाए जाने के कारण समस्त बाल सभाएं, मासिक स्टाफ बैठक, अभिभावक–शिक्षक बैठक(PTM), SDMC/SMC की कार्यकारिणी समिति की मासिक बैठक (वर्तमान में प्रतिमाह अमावस्या को आयोज्य), मीना–राजू/गार्गी मंच की बैठक इत्यादि कार्यक्रम भी **"बस्ता मुक्त दिवस" (शनिवार)** के अवसर पर आयोजित किए जाएं। माह के अंतिम शनिवार को उत्सव/जयन्ती/बाल सभा आयोजित करने के उपरान्त समस्त राजकीय विद्यालयों में शिक्षकों एवं विद्यार्थियों द्वारा 40 मिनट स्वैच्छिक श्रमदान किया जाएगा।
9. माध्यमिक शिक्षा बोर्ड, राजस्थान, अजमेर तथा राजस्थान राज्य शैक्षिक अनुसंधान एवं प्रशिक्षण परिषद् (RSCERT), उदयपुर तथा विभिन्न अभिकरणों एवं विभाग द्वारा समय–समय पर विद्यार्थियो में सृजनात्मक कौशल विकास तथा वैज्ञानिक अभिवृत्ति एवं अभिरूचि विकास के उद्देश्य से आयोजित की जाने वाली समस्त प्रतियोगिताएं विद्यालय स्तर पर शनिवार को ही आयोजित करवाई जाएं।
10. "बस्ता मुक्त दिवस" (शनिवार) के अवसर पर आयोजित होने वाले उत्सवों में विद्यार्थियों के सर्वांगीण विकास को ध्यान में रखते हुए विभिन्न

सहशैक्षिक गतिविधियों यथा–खेलकूद, वाद–विवाद प्रतियोगिता, भाषण, निबन्ध–लेखन इत्यादि के आयोजन पर विशेष ध्यान दिया जाए।

11. प्रतिमाह एक बाल सभा में गाँधीजी द्वारा प्रतिपादित "बुनियादी शिक्षा की अवधारणा" का ज्ञान विद्यार्थियों को देते हुए पारम्परिक घरेलू कुटीर उद्योग का व्यावहारिक प्रदर्शन करवाया जाए, जैसे मिट्टी के बर्तन या खिलौने बनाना, तकली कातना, चरखे का उपयोग इत्यादि। इस हेतु विद्यालय के आस–पास से आर्टिजन को विद्यालय में आमंत्रित किया जाकर प्रत्यक्ष प्रदर्शन करवाने का प्रयास किया जाए।
12. विशेष आवश्यकता वाले बालक–बालिकाओं को सहशैक्षिक गतिविधियों में सम्मिलित किया जाए।
13. जेण्डर इक्विटी गतिविधि अन्तर्गत बालिका सशक्तिकरण हेतु समग्र शिक्षा द्वारा संचालित निम्नांकित दूरगामी और नियमित गतिविधियों (शनिवारीय/गैर शनिवारीय गतिविधियों) को निम्नानुसार संचालित किया जाए।

पार्ट–1		
गतिविधि	**लाभान्वित वर्ग**	**समय–सीमा**
किशोरी सशक्तीकरण की गतिविधियां मीना राजू मंच एवं गार्गी मंच का संचालन	कक्षा 6 से 12 तक के समस्त विद्यार्थी	प्रति सप्ताह एक कालांश
सुरक्षित विद्यालय वातावरण निर्माण एवं बाल सुरक्षा संरक्षा	कक्षा 1 से 12 तक के समस्त विद्यार्थी	प्रति सप्ताह एक कालांश
साइबर सुरक्षा एवं जिम्मेदार नेटीजन	कक्षा 6 से 12 तक की समस्त बालिकाएं	प्रति सप्ताह एक कालांश
पार्ट–2		
रानी लक्ष्मीबाई आत्मरक्षा प्रशिक्षण	कक्षा 6 से 12 तक की समस्त बालिकाएं	प्रति सत्र 45 दिवस (प्रतिमाह 15 दिवस अनवरत तीन माह)
"उपरोक्त गतिविधियां नो–बैग–डे दिवस को आवश्यकतानुसार आयेजित करवाया जाना सुनिश्चित करावें"		

....

शिविरा पंचांग : 2022–23

जुलाई - 2022

रविवार	31	3	10	17	24
सोमवार		4	11	18	25
मंगलवार		5	12	19	26
बुधवार		6	13	20	27
गुरुवार		7	14	21	28
शुक्रवार	1	8	15	22	29
शनिवार	2	9	16	23	30
कार्य दिवस 26,रविवार 05,अवकाश 01,उत्सव 03					

01 से 06 जुलाई–कक्षा – 9 एवं 11 (सत्र : 2021–22) की पूरक परीक्षा का आयोजन। 09 जुलाई–पूरक परीक्षा परिणाम (सत्र : 2021–22) की घोषणा एवं प्रगति–पत्र का वितरण। वृहद् सामुदायिक बाल सभा का आयोजन –सार्वजनिक स्थल/चौपाल पर आयोज्य एवं PTM-I का आयोजन । 10 जुलाई– ईदउलजुहा (अवकाश चन्द्र दर्शनानुसार)11 जुलाई –विश्व जनसंख्या दिवस (उत्सव) 13 जुलाई– गुरु पूर्णिमा (उत्सव) 15 जुलाई–SDMC की कार्यकारिणी समिति में अनुमोदित कार्ययोजना के अनुरूप विद्यार्थी कोष/विकास कोष के माध्यम से सत्र पर्यन्त किए जाने वाले कार्यों हेतु आवश्यक लेखांकन प्रक्रिया पूर्ण करवाना। 23 जुलाई– लोकमान्य बाल गंगाधर तिलक जयन्ती (उत्सव)/सामुदायिक बाल सभा–विद्यालय स्तर पर। 24 से 26 जुलाई–सत्र पर्यन्त प्रशिक्षण केन्द्र/खेल छात्रावासों में प्रवेश प्रक्रिया–जुलाई के चतुर्थ सप्ताह में माध्यमिक विद्यालय) का आयोजन । नोट :– विद्यालयों द्वारा वर्षा आरम्भ होते ही वृक्षारोपण का कार्य करना। (सत्रारम्भ की संस्थाप्रधान वाक्पीठ (दो दिवस) (प्रा./उ.प्रा./मा./उ. मा. विद्यालय) का आयोजन

- प्रत्येक मंगलवार – **IFA** नीली गोली (कक्षा 6–12), **IFA** गुलाबी गोली (कक्षा 1–5)(समग्र शिक्षा) प्रत्येक शनिवार – विद्यालय में NO BAG DAY रहेगा। इस दिन माह के शनिवार हेतु नियत की गई गतिविधियों के आधार पर अध्ययन–अध्यापन यथासंभव प्रक्रिया संचालित की जाएगी। सप्ताह में आने वाले सभी जयन्तियां/उत्सव/प्रतियोगिताएं व पाठ्यक्रम सहगामी क्रियाएं विद्यालय में NO BAG DAY यानी उसी सप्ताह के शनिवार को आयोजित किए जावें। SIQE/CCE के तहत किए जाने वाला मुल्यांकन 01 से 05 जुलाई के मध्य अथवा विद्यार्थी के प्रवेश लेने के आगामी दिवस को लिया जाए। DAG & DCG की प्रथम बैठक का आयोजन इस माह में किया जाना है। बोर्ड पूरक परीक्षा–2022 हेतु आवेदन प्रक्रिया–जुलाई माह में (मा.शि.बोर्ड, अजमेर)

अगस्त 2022

रविवार		7	14	21	28
सोमवार	1	8	15	22	29
मंगलवार	2	9	16	23	30
बुधवार	3	10	17	24	31
गुरूवार	4	11	18	25	
शुक्रवार	5	12	19	26	
शनिवार	6	13	20	27	
कार्य दिवस-23,रविवार-04,अवकाश-04,उत्सव-03					

08 अगस्त– (कृमि मुक्ति दिवस) समस्त विद्यार्थियों को डिवर्मिंग दवा (एल्बेंडाजॉल) खिलवाना। 09 अगस्त–विश्व आदिवासी दिवस (अवकाश), मोहर्रम (अवकाश–चन्द्र दर्शनानुसार)11 अगस्त–रक्षा बन्धन (अवकाश) 12 अगस्त–संस्कृत दिवस (उत्सव) 13 अगस्त–सामुदायिक बाल सभा आयोजन (विद्यालय परिसर में) 15 अगस्त– स्वतंत्रता दिवस (अवकाश–उत्सव अनिवार्य)। 16 अगस्त SDMC की कार्यकारिणी समिति में अनुमोदित कार्ययोजना के अनुरूप विद्यार्थी कोष/विकास कोष के माध्यम से सत्र पर्यन्त किए जाने वाले कार्यों हेतु आवश्यक निविदा कार्यवाही सम्पन्न करना। 17 अगस्त– से पूर्व विद्यालय खेलकूद प्रतियोगिताएं आयु वर्ग–14/17/19 वर्ष (छात्र–छात्रा) हेतु विद्यालयों में विद्यालय स्तर पर प्रथम, द्वितीय एवं तृतीय समूह की विद्यालयी खेलकूद प्रतियोगिताओं का अनिवार्य रूप से आयोजन। 18 अगस्त–मॉप अप दिवस – कृमि मुक्ति दिवस (08 अगस्त–2022) को वंचित रहे विद्यार्थियों को डिवर्मिंग दवा (एल्बेंडाजॉल) खिलवाना। 19 अगस्त–श्रीकृष्ण जन्माष्टमी (अवकाश–उत्सव) 20 अगस्त– सद्भावना दिवस–राजीव गांधी जयन्ती । 22–24 अगस्त–प्रथम परख का आयोजन 26 से 30 अगस्त आयु वर्ग–14/17/19 वर्ष (छात्र–छात्रा) हेतु प्रथम समूह/प्रथम चरण की जिला स्तरीय विद्यालयी खेलकूद प्रतियोगिताओं का आयोजन (14 वर्ष हेतु अधिकतम 04 दिन एवं 17/19 हेतु अधिकतम 05दिन)। 27 अगस्त सामुदायिक बाल सभा का आयोजन –सार्वजनिक स्थल/चौपाल पर आयोज्य, प्रथम परख की प्रगति से अभिभावकों को अवगति करवाना। 31 अगस्त से 04 सितम्बर– आयु वर्ग–14/17/19 वर्ष (छात्र–छात्रा) हेतु द्वितीय समूह/जिला स्तरीय विद्यालयी खेलकूद प्रतियोगिताओं का आयोजन (14 वर्ष हेतु अधिकतम 04 दिन एवं 17/19 हेतु अधिकतम 05दिन)।

- प्रत्येक मंगलवार – **IFA** नीली गोली (कक्षा 6–12), **IFA** गुलाबी गोली (कक्षा 1–5)(समग्र शिक्षा) प्रत्येक शनिवार – विद्यालय में NO BAG DAY रहेगा। इस दिन माह के शनिवार हेतु नियत की गई गतिविधियों के आधार पर अध्ययन–अध्यापन यथासंभव प्रक्रिया संचालित की जाएगी। सप्ताह में आने वाले सभी जयन्तियां/उत्सव/प्रतियोगिताएं व पाठ्यक्रम सहगामी क्रियाएं विद्यालय में NO BAG DAY यानी उसी सप्ताह के शनिवार को आयोजित किए जावें। बोर्ड पूरक परीक्षा–2022 का आयोजन–अगस्त माह में (मा.शि.बोर्ड, अजमेर) मा.शि.बो.राज.,अजमेर द्वारा आयोजित की जाने वाली बोर्ड परीक्षा–2023 हेतु माध्यमिक, उच्च माध्यमिक, प्रवेशिका, वरि.उपाध्याय के नियमित एवं स्वयंपाठी विद्यार्थियों के बोर्ड परीक्षा आवेदन पत्र ऑनलाईन भरने की प्रक्रिया माह–अगस्त, सितम्बर–22 (मा.शि. बोर्ड, अजमेर) जिला स्तरीय कला उत्सव (विद्यार्थियों के लिए)–अक्टूबर के द्वितीय सप्ताह में (समग्र शिक्षा) विद्यालयों द्वारा वृक्षारोपण का कार्य करना। (द्वितीय चरण)

सितम्बर-2022

रविवार		4	11	18	25
सोमवार		5	12	19	26
मंगलवार		6	13	20	27
बुधवार		7	14	21	28
गुरूवार	1	8	15	22	29
शुक्रवार	2	9	16	23	30
शनिवार	3	10	17	24	
कार्य दिवस-24, रविवार-04, अवकाश- 02, उत्सव-04					

नोट– 1. प्रथम योगात्मक आकलन का आयोजन – CCE /SIQE संचालित विद्यालयों में (माह के अन्तिम सप्ताह में)।

2. 24 सितम्बर – राष्ट्रीय सेवा योजना दिवस (जिन विद्यालयों में यह योजना संचालित है) ।

प्रत्येक मंगलवार – **IFA** नीली गोली (कक्षा 6–12), **IFA** गुलाबी गोली (कक्षा 1–5) (समग्र शिक्षा)

प्रत्येक शनिवार – विद्यालय में NO BAG DAY रहेगा। इस दिन माह के शनिवार हेतु नियत की गई गतिविधियों के आधार पर अध्ययन–अध्यापन यथासंभव प्रक्रिया संचालित की जाएगी। सप्ताह में आने वाले सभी जयन्तियां/उत्सव/प्रतियोगिताएं व पाठ्यक्रम सहगामी क्रियाएं विद्यालय में NO BAG DAY यानी उसी सप्ताह के शनिवार को आयोजित किए जावें।

- DAG की द्वितीय बैठक का आयोजन इस माह में किया जाना है।
- मा.शि.बो.राज.,अजमेर द्वारा आयोजित की जाने वाली बोर्ड परीक्षा–2023 हेतु माध्यमिक, उच्च माध्यमिक, प्रवेशिका, वरिष्ठ उपाध्याय के नियमित एवं स्वयंपाठी विद्यार्थियों के बोर्ड परीक्षा आवेदन पत्र ऑनलाइन भरने की प्रक्रिया माह– अगस्त, सितम्बर–22 (मा.शि.बोर्ड, अजमेर)
- माध्यमिक शिक्षा बोर्ड, अजमेर की पूरक परीक्षा–2022 में अनुत्तीर्ण विद्यार्थियों के बोर्ड आवेदन पत्र ऑनलाईन भरने की प्रक्रिया माह–सितम्बर, अक्टूबर–22 में (मा.शि.बोर्ड, अजमेर)

31 अगस्त से 04 सितम्बर–आयु वर्ग–14/17/19 वर्ष (छात्र–छात्रा) हेतु द्वितीय समूह/जिला स्तरीय विद्यालयी खेलकूद प्रतियोगिताओं का आयोजन (14 वर्ष हेतु अधिकतम 04 दिन एवं 17/19 हेतु अधिकतम 05 दिन)। 3 सितम्बर–सामुदायिक बाल सभा का आयोजन –विद्यालय स्तर पर आयोज्य । 5 सितम्बर– रामदेव जयन्ती /तेजा दशमी एवं खेजडली शहीद दिवस (अवकाश–उत्सव) , शिक्षक दिवस (उत्सव)– राज्य स्तरीय शिक्षक सम्मान समारोह का आयोजन, राष्ट्रीय शिक्षक कल्याण प्रतिष्ठान के अन्तर्गत शिक्षक दिवस पर झण्डियों की बिक्री का शुभारम्भ । 6 से 11 सितम्बर–आयु वर्ग–14/17/19 वर्ष (छात्र–छात्रा) हेतु प्रथम समूह की राज्य स्तरीय विद्यालयी खेलकूद प्रतियोगिताओं का आयोजन (14 वर्ष हेतु अधिकतम 04 दिन एवं 17/19 हेतु अधिकतम 05 दिन)। 7 से 10 सितम्बर–प्राथमिक विद्यालयी खेलकूद प्रतियोगिता (ब्लॉक स्तरीय) 8 सितम्बर–विश्व साक्षरता दिवस (उत्सव), 12 सितम्बर–रोल प्ले एवं लोक नृत्य प्रतियोगिता विद्यालय स्तर (RSCERT) 13 से 18 सितम्बर –आयु वर्ग–14/17/19 वर्ष (छात्र–छात्रा) हेतु द्वितीय समूह की राज्य स्तरीय विद्यालयी खेलकूद प्रतियोगिताओं का आयोजन (14 वर्ष हेतु अधिकतम 04 दिन एवं 17/19 हेतु अधिकतम 05 दिन) 14 से 18 सितम्बर–प्राथमिक विद्यालयी खेलकूद प्रतियोगिता (जिला स्तरीय)14 सितम्बर–हिन्दी दिवस (उत्सव), सामुदायिक बाल सभा आयोजन (विद्यालय परिसर में)17 सितम्बर–सामुदायिक बाल सभा का आयोजन –सार्वजनिक स्थल/चौपाल पर आयोज्य ।19 से 20 सितम्बर तहसील स्तरीय शिक्षक खेलकूद प्रतियोगिता का आयोजन। 23 से 24 सितम्बर–जिला स्तरीय शैक्षिक सम्मेलन 26 सितम्बर–नवरात्र स्थापना (अवकाश) 27 सितम्बर से 01 अक्टूबर–आयु वर्ग–14/17/19 वर्ष (छात्र–छात्रा) हेतु तृतीय समूह की जिला स्तरीय विद्यालयी खेलकूद प्रतियोगिताओं का आयोजन (14 वर्ष हेतु अधिकतम 04 दिन एवं 17/19 हेतु अधिकतम 05दिन) 30 सितम्बर–1. राष्ट्रीय शिक्षक कल्याण प्रतिष्ठान के अन्तर्गत झंडियों की बिक्री से प्राप्त राशि का बैंक ड्राफ्ट सचिव, राष्ट्रीय शिक्षक कल्याण प्रतिष्ठान, माध्यमिक शिक्षा, राजस्थान,बीकानेर के नाम से बनाकर प्रेषित करना । 2. SDMC की कार्यकारिणी समिति में अनुमोदित कार्ययोजना के अनुरूप विद्यार्थी कोष/विकास कोष के माध्यम से किए जाने वाले कार्य/क्रय कार्यवाही पूर्ण करना। सितम्बर–2022–मा.शि.बोर्ड राजस्थान, अजमेर द्वारा विद्यार्थियों की सृजनात्मक प्रतियोगिता का ब्लॉक स्तर पर आयोजन।

- विद्यालय स्तरीय कला उत्सव (विद्यार्थियों के लिए)–सितम्बर के द्वितीय सप्ताह में (समग्र शिक्षा)

अक्टूबर-2022

27 सितम्बर से 01 अक्टूबर–आयु वर्ग–14/17/19 वर्ष (छात्र–छात्रा) हेतु तृतीय समूह की जिला स्तरीय विद्यालयी खेलकूद प्रतियोगिताओं का आयोजन (14 वर्ष हेतु अधिकतम 04 दिन एवं 17/19 हेतु अधिकतम 05 दिन) **1अक्टूबर –विद्यालय समय परिवर्तन– 1. एक पारी विद्यालय – प्रातः 10:00 से 04:00 बजे तक। 2. दो पारी विद्यालय – प्रातः 07:30 से सायं 05:30 बजे तक (प्रत्येक पारी 5:00 घंटे)** 2 अक्टूबर–महात्मा गांधी जयंती (अवकाश–उत्सव) व लाल बहादुर शास्त्री जयंती (उत्सव)3 अक्टूबर–दुर्गाष्टमी (अवकाश) 4 से 5 अक्टूबर–जिला स्तरीय विज्ञान मेला **(RSCERT)** 5 अक्टूबर–विजयदशमी (अवकाश) 6 अक्टूबर–सामुदायिक बाल सभा–सार्वजनिक स्थल/चौपाल पर आयोजित। 7 से 8 अक्टूबर–जिला स्तरीय शिक्षक खेलकूद प्रतियोगिता 9 अक्टूबर–बारावफात (अवकाश–चन्द्र दर्शनानुसार), सामुदायिक बाल सभा आयोजन (विद्यालय परिसर में) 10 अक्टूबर–विश्व मानसिक स्वास्थ्य दिवस (समग्र शिक्षा) 10 से 12 अक्टूबर–द्वितीय परख 13 अक्टूबर–विश्व दृष्टि दिवस (समग्र शिक्षा) 13 से 18 अक्टूबर–विद्यालय खेलकूद प्रतियोगिताएं आयु वर्ग–14/17/19 वर्ष (छात्र–छात्रा) हेतु तृतीय समूह की राज्य स्तरीय विद्यालयी खेलकूद प्रतियोगिताओं का आयोजन (14 वर्ष हेतु अधिकतम 04 दिन एवं 17/19 हेतु अधिकतम 05 दिन) 15 अक्टूबर– सामुदायिक बाल सभा–विद्यालय स्तर पर आयोजित 19 से 31 अक्टूबर– मध्यावधि अवकाश 24 अक्टूबर दीपावली (अवकाश) 25 अक्टूबर गोवर्धन पूजा (अवकाश) 26 अक्टूबर भैया दूज (अवकाश) 31 अक्टूबर–सरदार वल्लभ भाई पटेल जयन्ती (राष्ट्रीय एकता दिवस) इन्दिरा गांधी पुण्य तिथि (संकल्प दवस–उत्सव) अक्टूबर–2022–मा.शि.बोर्ड राजस्थान, अजमेर द्वारा शिक्षकों के व्यवसायिक कौशल एवं उन्नयन प्रतियोगिता का जिला स्तर पर आयोजन।

नोट – माध्यमिक शिक्षा बोर्ड, राजस्थान, अजमेर द्वारा शिक्षकों के व्यावसायिक कौशल एवं उन्नयन प्रतियोगिता का जिला स्तर पर आयोजन।

- प्रत्येक मंगलवार – **IFA** नीली गोली (कक्षा 6–12), **IFA** गुलाबी गोली (कक्षा 1–5) (समग्र शिक्षा)

रविवार	30	2	9	16	23
सोमवार	31	3	10	17	24
मंगलवार		4	11	18	25
बुधवार		5	12	19	26
गुरूवार		6	13	20	27
शुक्रवार		7	14	21	28
शनिवार	1	8	15	22	29
कार्य दिवस-13, रविवार-05, अवकाश-17, उत्सव-03					

- **प्रत्येक शनिवार** – विद्यालय में NO BAG DAY रहेगा। इस दिन माह के शनिवार हेतु नियत की गई गतिविधियों के आधार पर अध्ययन–अध्यापन यथा संभव प्रक्रिया संचालित की जाएगी। सप्ताह में आने वाले सभी जयन्तियां/उत्सव/प्रतियोगिताएं व पाठ्यक्रम सहगामी क्रियाएं विद्यालय में NO BAG DAYयानी उसी सप्ताह के शनिवार को आयोजित किए जावें।
- DCG की द्वितीय बैठक का आयोजन इस माह में किया जाना है।
- माध्यमिक शिक्षा बोर्ड, अजमेर की पूरक परीक्षा–2022 में अनुत्तीर्ण विद्यार्थियों के बोर्ड आवेदन पत्र ऑनलाईन भरने की प्रक्रिया माह–सितम्बर, अक्टूबर–22 में (मा.शि.बोर्ड, अजमेर)
- जिला स्तरीय कला उत्सव (विद्यार्थियों के लिए)–सितम्बर के द्वितीय सप्ताह में (समग्र शिक्षा)

नवम्बर-2022

रविवार		6	13	20	27
सोमवार		7	14	21	28
मंगलवार	1	8	15	22	29
बुधवार	2	9	16	23	30
गुरूवार	3	10	17	24	
शुक्रवार	4	11	18	25	
शनिवार	5	12	19	26	
कार्य दिवस-25, रविवार-04, अवकाश-01,उत्सव 05					

03 से 04 नवम्बर –रोल प्ले एवं लोक नृत्य प्रतियोगिता जिला स्तर (RSCERT) 05 नवम्बर–कालिदास जयन्ती, सामुदायिक बाल सभा–गांव की चौपाल पर 8 नवम्बर– गुरू नानक जयन्ती (अवकाश–उत्सव) 11 नवम्बर– राष्ट्रीय शिक्षा दिवस (उत्सव) 14 नवम्बर– बाल दिवस (पं. जवाहर लाल नेहरू जयन्ती)–(उत्सव),बाल समारोह का आयोजन (समग्र शिक्षा) 17 नवम्बर– नेशनल मिन्स कम मेरिट स्कॉलरशिप परीक्षा (RSCERT) 19 नवम्बर– श्रीमती इन्दिरा गांधी जयन्ती (उत्सव) सामुदायिक बाल सभा आयोजन (विद्यालय परिसर में), PTM-II (माँ–शिक्षक बैठक – MTM) का आयोजन। 19 से 25 नवम्बर – कौमी एकता सप्ताह का आयोजन। 22 से 25 नवम्बर – राज्य स्तरीय विज्ञान मेला (RSCERT) 25 से 26 नवम्बर – राज्य स्तरीय शैक्षिक सम्मेलन 26 नवम्बर संविधान दिवस (उत्सव) नवम्बर – 2022 मा. शि. बोर्ड राजस्थान, अजमेर द्वारा विभिन्न प्रतियोगी परीक्षाओं का आयोजन यथाः–राष्ट्रीय प्रतिभा खोज परीक्षा।राज्य प्रतिभा खोज परीक्षा। राज्य विज्ञान प्रतिभा खोज परीक्षा ।

नोट–माध्यमिक शिक्षा बोर्ड, राजस्थान, अजमेर द्वारा विभिन्न प्रतियोगी परीक्षाओं यथा –(अ)राष्ट्रीय प्रतिभा खोज परीक्षा,(ब) राज्य प्रतिभा खोज परीक्षा, (स) राज्य विज्ञान प्रतिभा खोज परीक्षा का आयोजन ।

- प्रत्येक मंगलवार – **IFA** नीली गोली (कक्षा 6–12), **IFA** गुलाबी गोली (कक्षा 1–5)(समग्र शिक्षा)
- **<u>प्रत्येक शनिवार</u>** – विद्यालय में NO BAG DAY रहेगा। इस दिन माह के शनिवार हेतु नियत की गई गतिविधियों के आधार पर अध्ययन–अध्यापन यथासंभव प्रक्रिया संचालित की जाएगी।
  सप्ताह में आने वाले सभी जयन्तियां/उत्सव/प्रतियोगिताएं व पाठ्यक्रम सहगामी क्रियाएं विद्यालय में NO BAG DAY यानी उसी सप्ताह के शनिवार को आयोजित किए जावें।
- DAG की तृतीय बैठक का आयोजन इस माह में किया जाना है।
- जिला स्तरीय रंगोत्सव (शिक्षकों के लिए)नवम्बर के प्रथम सप्ताह मे(समग्र शिक्षा)
- राज्य स्तरीय कला उत्सव(विद्यार्थियों के लिए)–नवम्बर के द्वितीय/तृतीय सप्ताह में (समग्र शिक्षा)
- राज्य स्तरीय रंगोत्सव (शिक्षकों के लिए)नवम्बर के अन्तिम सप्ताह मे(समग्र शिक्षा)

दिसम्बर-2022

01 दिसम्बर–विश्व एकता दिवस (उत्सव), विश्व एड्स दिवस(उत्सव)। 03 दिसम्बर–विश्व विशेष योग्यजन दिवस (समग्र शिक्षा) 05 – 06 दिसम्बर– मंत्रालयिक कर्मचारी खेलकूद एवं सांस्कृतिक प्रतियोगिता हेतु जिला स्तर पर चयन 10 दिसम्बर–मानव अधिकार दिवस (उत्सव) 10–23 दिसम्बर–अर्द्ध वार्षिक परीक्षा का आयोजन 16 से 17 दिसम्बर– मंत्रालयिक कर्मचारी खेलकूद एवं सांस्कृतिक प्रतियोगिता हेतु मण्डल स्तर पर चयन व दल गठन। 18–21 दिसम्बर– मंत्रालयिक कर्मचारी खेलकूद एवं सांस्कृतिक प्रतियोगिता हेतु मण्डल स्तर पर प्रशिक्षण शिविर का आयोजन। 24 दिसम्बर– सामुदायिक बाल सभा का आयोजन –विद्यालय परिसर में। 25 दिसम्बर–क्रिसमस डे (अवकाश) 25 दिसम्बर से 31 दिसम्बर (05जनवरी तक जारी) शीतकालीन अवकाश (विभाग के समस्त आहरण – वितरण अधिकारियों द्वारा राज्य कर्मचारियों के हितकारी निधि के वार्षिक अंशदान हेतु माह दिसम्बर के वेतन से निर्धारित दर पर कटौती की कार्यवाही सुनिश्चित करना) 26 से 27 दिसम्बर राज्य स्तरीय शिक्षक खेलकूद प्रतियोगिता हेतु पूर्व प्रशिक्षण शिविरों का आयोजन 27 से 30 दिसम्बर–मंत्रालयिक कर्मचारी खेलकूद एवं सांस्कृतिक प्रतियोगिता का राज्य स्तर पर आयोजन। 29 दिसम्बर –गुरु गोविन्द सिंह जयन्ती(अवकाश– उत्सव) 30 से 31 दिसम्बर– राज्य स्तरीय शिक्षक खेलकूद प्रतियोगिता। दिसम्बर– 2022– मा.शि.बोर्ड राजस्थान, अजमेर द्वारा विद्यार्थियों के व्यक्तित्व, उन्नयन एवं कौशल शिविर का आयोजन।

नोट– जिन विद्यालयों में राष्ट्रीय सेवा योजना इकाई संचालित है, उन विद्यालयों में सात दिवसीय विशेष शिविर का आयोजन शीतकालीन अवकाश के दौरान ही किया जाए। माध्यमिक शिक्षा बोर्ड, राजस्थान, अजमेर द्वारा विद्यार्थियों के व्यक्तित्व उन्नयन एवं कौशल शिविर का आयोजन। (कक्षा 1–5)(समग्र शिक्षा)

रविवार		4	11	18	25
सोमवार		5	12	19	26
मंगलवार		6	13	20	27
बुधवार		7	14	21	28
गुरूवार	1	8	15	22	29
शुक्रवार	2	9	16	23	30
शनिवार	3	10	17	24	31
कार्य दिवस-21, रविवार- 04, अवकाश- 07, उत्सव-04					

- प्रत्येक मंगलवार – **IFA** नीली गोली (कक्षा 6–12), **IFA** गुलाबी गोली
- व्यावसायिक शिक्षा में कक्षा–11 व 12 में अध्ययनरत विद्यार्थियों हेतु ऑन जॉब ट्रेनिंग शीतकालीन अवकाश में (समग्र शिक्षा)
- **<u>प्रत्येक शनिवार</u>** – विद्यालय में NO BAG DAY रहेगा। इस दिन माह के शनिवार हेतु नियत की गई गतिविधियों के आधार पर अध्ययन–अध्यापन प्रक्रिया यथासंभव संचालित की जाएगी।
  सप्ताह में आने वाले सभी जयन्तियां/उत्सव/प्रतियोगिताएं व पाठ्यक्रम सहगामी क्रियाएं विद्यालय में NO BAG DAYयानी उसी सप्ताह के शनिवार को आयोजित किए जावें।

जनवरी-2023

रविवार	1	8	15	22	29
सोमवार	2	9	16	23	30
मंगलवार	3	10	17	24	31
बुधवार	4	11	18	25	
गुरूवार	5	12	19	26	
शुक्रवार	6	13	20	27	
शनिवार	7	14	21	28	
कार्य दिवस-21,रविवार-05,अवकाश- 06, उत्सव-05					

01 से 05 जनवरी– शीतकालीन अवकाश जारी। 04 जनवरी–विश्व ब्रेल दिवस (समग्र शिक्षा)। 07 जनवरी– PTM-III का आयोजन सामुदायिक बाल सभा का आयोजन –(विद्यालय परिसर में) अर्द्धवार्षिक परीक्षा परिणामों को अभिभावकों को प्रदर्शित करना । 09 से 11 जनवरी–रोल प्ले एवं लोक नृत्य प्रतियोगिता राज्य स्तर (RSCERT) 12 जनवरी –स्वामी विवेकानन्द जयन्ती (राष्ट्रीय युवा दिवस–उत्सव), "करियर डे" । 14 जनवरी–मकर सक्रान्ति (उत्सव) 21 जनवरी–सामुदायिक वृहद बाल सभा आयोजन –सार्वजनिक स्थल/चौपाल पर । 23 जनवरी–सुभाष चन्द्र बोस जयन्ती, देश प्रेम दिवस (उत्सव) । 26 जनवरी–गणतंत्र दिवस (अवकाश–उत्सव अनिवार्य), बसन्त पंचमी/सरस्वती जयन्ती (उत्सव), गार्गी पुरस्कार समारोह, बालिका दिवस आयोजन। 30 जनवरी–शहीद दिवस (प्रातः 11.00 बजे दो मिनट का मौन)(महात्मा गांधी पुण्य तिथि) जनवरी–2023–मा.शि.बोर्ड राजस्थान, अजमेर द्वारा शिक्षकों के व्यवसायिक कौशल, उन्नयन की राज्य स्तरीय प्रतियोगिता का आयोजन एवं विद्यार्थियों की सृजनात्मक प्रतियोगिता का जिला स्तर पर आयोजन।

नोट– 1. द्वितीय योगात्मक आकलन का आयोजन – CCE /SIQE संचालित विद्यालयों में (माह के अन्तिम सप्ताह में)।
2. माध्यमिक शिक्षा बोर्ड, राजस्थान, अजमेर द्वारा शिक्षकों के व्यावसायिक कौशल उन्नयन की राज्य स्तरीय प्रतियोगिता का आयोजन एवं विद्यार्थियों की सृजनात्मक प्रतियोगिता का जिला स्तर पर आयोजन।

- प्रत्येक मंगलवार – **IFA** नीली गोली (कक्षा 6–12), **IFA** गुलाबी गोली (कक्षा 1–5)(समग्र शिक्षा)
- **प्रत्येक शनिवार** – विद्यालय में NO BAG DAY रहेगा। इस दिन माह के शनिवार हेतु नियत की गई गतिविधियों के आधार पर अध्ययन–अध्यापन यथासंभव प्रक्रिया संचालित की जाएगी।
  सप्ताह में आने वाले सभी जयन्तियां/उत्सव/प्रतियोगिताएं व पाठ्यक्रम सहगामी क्रियाएं विद्यालय में NO BAG DAYयानी उसी सप्ताह के शनिवार को आयोजित किए जावें।
- DAG की चतुर्थ बैठक का आयोजन इस माह में किया जाना है व DCG की तृतीय बैठक का आयोजन इस माह में किया जाना है।
- राष्ट्रीय स्तरीय कला उत्सव (विद्यार्थियों के लिए)जनवरी के प्रथम सप्ताह में (समग्र शिक्षा)

फरवरी-2023

- प्रत्येक मंगलवार – **IFA** नीली गोली (कक्षा 6–12), **IFA** गुलाबी गोली (कक्षा 1–5)(समग्र शिक्षा)
- **प्रत्येक शनिवार** – विद्यालय में NO BAG DAY रहेगा। इस दिन माह के शनिवार हेतु नियत की गई गतिविधियों के आधार पर अध्ययन–अध्यापन यथासंभव प्रक्रिया संचालित की जाएगी।
  सप्ताह में आने वाले सभी जयन्तियां/उत्सव/प्रतियोगिताएं व पाठ्यक्रम सहगामी क्रियाएं विद्यालय में NO BAG DAY यानी उसी सप्ताह के शनिवार को आयोजित किए जावें।

रविवार		5	12	19	26
सोमवार		6	13	20	27
मंगलवार		7	14	21	28
बुधवार	1	8	15	22	
गुरूवार	2	9	16	23	
शुक्रवार	3	10	17	24	
शनिवार	4	11	18	25	
कार्य दिवस-23, रविवार-04, अवकाश 01 उत्सव 03					

07 फरवरी–सेफर इन्टरनेट डे (Safer Internet Day) का आयोजन (RSERT) 10 फरवरी–कृमि मुक्ति दिवस–समस्त विद्यार्थियों को डिवर्मिंग दवा (एल्बेंडाजॉल) खिलाएं। 11 फरवरी–सामुदायिक बाल सभा आयोजन (विद्यालय परिसर में) 14 फरवरी–मॉप अप दिवस – राष्ट्रीय कृमि मुक्ति दिवस (10 फरवरी–2023) को वंचित रहे विद्यार्थियों को डिवर्मिंग दवा (एल्बेंडाजॉल) खिलाएं। 15 फरवरी–स्वामी दयानन्द सरस्वती जयन्ती (उत्सव) फरवरी के द्वितीय सप्ताह में सत्रान्त की संस्था प्रधान वाक्पीठ (प्रावि/उप्रावि/मावि/उमावि) का आयोजन (13 से 17 फरवरी की अवधि में) (दो दिवस) 18 फरवरी– महा शिवरात्रि (अवकाश–उत्सव) 20 से 22 फरवरी–तृतीय परख का आयोजन 25 फरवरी–सामुदायिक वृहद बाल सभा का आयोजन –सार्वजनिक स्थल/चौपाल पर, तृतीय परख की प्रगति से अवगत करवाया जाना। 28 फरवरी–राष्ट्रीय विज्ञान दिवस (उत्सव) फरवरी–2023–मा.शि.बोर्ड राजस्थान, अजमेर द्वारा आयोज्य कक्षा 10 से 12 की परीक्षा में प्रविष्ट होने वाले विद्यार्थियों हेतु 14 दिवस का परीक्षा पूर्व तैयारी अवकाश रहेगा।

मार्च-2023

रविवार		5	12	19	26
सोमवार		6	13	20	27
मंगलवार		7	14	21	28
बुधवार	1	8	15	22	29
गुरूवार	2	9	16	23	30
शुक्रवार	3	10	17	24	31
शनिवार	4	11	18	25	
कार्य दिवस-23,रविवार-04, अवकाश-04, उत्सव- 04					

03 मार्च–विश्व श्रवण दिवस (समग्र शिक्षा) 06 मार्च–होलिका दहन (अवकाश) 07 मार्च–धुलण्डी (अवकाश) 15 मार्च–विश्व उपभोक्ता दिवस (उत्सव) 23 मार्च– चेटीचण्ड (अवकाश–उत्सव) 30 मार्च–रामनवमी (अवकाश–उत्सव), राजस्थान दिवस (उत्सव) मार्च–2023– मा. शि. बोर्ड राजस्थान, अजमेर की माध्यमिक/ प्रवेशिका एवं उच्च माध्यमिक/वरिष्ठ उपाध्याय परीक्षाओं का आयोजन। बोर्ड परीक्षा आयोजन के कारण सामुदायिक बाल सभा का आयोजन स्थगित रखा गया है।

- प्रत्येक मंगलवार–**IFA** नीली गोली(कक्षा 6–12), **IFA** गुलाबी गोली (कक्षा 1–5)(समग्र शिक्षा)
- **प्रत्येक शनिवार** – विद्यालय में NO BAG DAY रहेगा। इस दिन माह के शनिवार हेतु नियत की गई गतिविधियों के आधार पर अध्ययन–अध्यापन यथासंभव प्रक्रिया संचालित की जाएगी।
  सप्ताह में आने वाले सभी जयन्तियां/उत्सव/प्रतियोगिताएं व पाठ्यक्रम सहगामी क्रियाएं विद्यालय में NO BAG DAYयानी उसी सप्ताह के शनिवार को आयोजित किए जावें।
- DAG की पंचम बैठक का आयोजन इस माह में किया जाना है।

अप्रेल-2023

रविवार	**30**	**2**	**9**	**16**	**23**
सोमवार		**3**	**10**	**17**	**24**
मंगलवार		**4**	**11**	**18**	**25**
बुधवार		5	12	19	26
गुरूवार		6	13	20	27
शुक्रवार		7	14	21	28
शनिवार	1	8	15	22	29
कार्य दिवस-21, रविवार-05, अवकाश- 04, उत्सव-02					

नोट– एसआईक्यूई संचालित विद्यालयों में कक्षा–5 हेतु सम्बन्धित जिले की तृतीय योगात्मक आकलन के स्थान पर ''प्राथमिक शिक्षा अधिगम कर मूल्यांकन किया जाएगा जिसकी तिथियां पृथक से घोषित की जाएंगी। कक्षा–1 से 4 में तृतीय योगात्मक आकलन का आयोजन उक्त मूल्यांकन से पूर्व किया जाएगा।

- प्रत्येक मंगलवार – **IFA** नीली गोली (कक्षा 6–12), **IFA** गुलाबी गोली (कक्षा 1–5)(समग्र शिक्षा)
- **प्रत्येक शनिवार** – विद्यालय में NO BAG DAY रहेगा। इस दिन माह के शनिवार हेतु नियत की गई गतिविधियों के आधार पर अध्ययन–अध्यापन यथासंभव प्रक्रिया संचालित की जाएगी।
  सप्ताह में आने वाले सभी जयन्तियां/उत्सव/प्रतियोगिताएं व पाठ्यक्रम सहगामी क्रियाएं विद्यालय में NO BAG DAYयानी उसी सप्ताह के शनिवार को आयोजित किए जावें।
- DCG की चतुर्थ बैठक का आयोजन इस माह में किया जाना है।

01 अप्रेल– विद्यालय समय परिवर्तन – 1.एक पारी विद्यालय – प्रातः 07:30 से दोपहर 01:00 बजे तक। 2.दो पारी विद्यालय – प्रातः 07:00 से सायं 06:00 बजे तक (प्रत्येक पारी 5:30 घंटे) 02 अप्रेल –विश्व ऑटिज्म जागरूकता दिवस का आयोजन (समग्र शिक्षा) 04 अप्रेल –श्री महावीर जयन्ती (अवकाश –उत्सव) 07 अप्रेल–गुड–फ्राइडे (अवकाश) 06 से 25 अप्रेल–वार्षिक परीक्षा का आयोजन । 14 अप्रेल–डॉ0 बी. आर. अम्बेडकर जयन्ती–ज्ञान दिवस (अवकाश –उत्सव) । 22 अप्रेल–ईदुल फितर (अवकाश– चन्द्र दर्शनानुसार), परशुराम जयन्ती(अवकाश) 27 अप्रेल–विद्यालय में आगामी सत्र हेतु प्रवेश प्रक्रिया का आरम्भ एवं नामांकन हेतु विद्यार्थियों के चिह्नीकरण की प्रक्रिया प्रारम्भ। 30 अप्रेल –वार्षिक परीक्षा परिणाम की घोषणा तथा परीक्षा परिणामों की प्रति संबंधित जिला शिक्षा अधिकारी को समीक्षा हेतु प्रेषित करना। सामुदायिक बाल सभा का आयोजन –सार्वजनिक स्थल/चौपाल पर। संस्था प्रधान द्वारा स्टाफ की बैठक लेकर सत्रपर्यन्त हुए कार्यों की समीक्षा करना एवं आगामी सत्र की विद्यालय योजना हेतु विचार–विमर्श कर निर्णय लेना तथा योजना संबंधित जिला शिक्षा अधिकारी को प्रेषित करना। अभिभावक–अध्यापक बैठक (PTM-IV) एवं SDMC/SMC की साधारण सभा का संयुक्त रूप से आयोजन एवं करणीय कार्यों के संबंध में प्रस्ताव पारित करना।

मई-2023

रविवार		7	14	21	28
सोमवार	1	8	15	22	29
मंगलवार	2	9	16	23	30
बुधवार	3	10	17	24	31
गुरूवार	4	11	18	25	
शुक्रवार	5	12	19	26	
शनिवार	6	13	20	27	
कार्य दिवस-14, रविवार-04, अवकाश-15, उत्सव- 02					

01 मई– नवीन सत्र : 2023–24 प्रारम्भ (परीक्षा परिणाम के आधार पर विद्यार्थियों का चिह्नीकरण कर उपचारात्मक शिक्षण प्रारम्भ) 01 से 16 मई–प्रवेशोत्सव– प्रथम चरण का आयोजन 07 मई रवीन्द्र नाथ टैगोर जयन्ती (उत्सव)। 08 से 15 मई–पूरक परीक्षा का आयोजन (कक्षा – 09 व 11 हेतु) । 13 मई–सामुदायिक बाल सभा का आयोजन –सार्वजनिक स्थल/चौपाल पर । 16 मई– पूरक परीक्षा परिणाम की घोषणा एवं प्रगति–पत्र का वितरण। 17 मई से 31 मई ग्रीष्मावकाश। 22 मई– महाराणा प्रताप जयन्ती (अवकाश–उत्सव) नोट :– संस्थाप्रधान ग्रीष्मावकाश में मुख्यालय से बाहर हों, तो वह विद्यार्थियों को टी0सी0 जारी करने हेतु मुख्यालय पर रहने वाले वरिष्ठतम शिक्षक को टी0सी0 पर हस्ताक्षर करने हेतु अधिकृत करावें तथा इसका अनुमोदन संबंधित जिला शिक्षा अधिकारी से कराकर संबंधित को पाबन्द करें, ताकि विद्यार्थियों को टी0सी0 प्राप्त करने में कोई असुविधा न हों।
मई –2023 मा. शि. बोर्ड राजस्थान, अजमेर द्वारा विद्यार्थियों के व्यक्तित्व, उन्नयन एवं कौशल शिविर का आयोजन।

- प्रत्येक मंगलवार – **IFA** नीली गोली (कक्षा 6–12), **IFA** गुलाबी गोली (कक्षा 1–5)(समग्र शिक्षा)
- <u>**प्रत्येक शनिवार**</u> – विद्यालय में NO BAG DAY रहेगा। इस दिन माह के शनिवार हेतु नियत की गई गतिविधियों के आधार पर अध्ययन–अध्यापन यथासंभव प्रक्रिया संचालित की जाएगी।
  सप्ताह में आने वाले सभी जयन्तियां/उत्सव/प्रतियोगिताएं व पाठ्यक्रम सहगामी कियाएं विद्यालय में NO BAG DAYयानी उसी सप्ताह के शनिवार को आयोजित किए जावें।
- DAG की छठी बैठक का आयोजन इस माह में किया जाना है।

जून-2023

01 से 23 जून–ग्रीष्मकालीन अवकाश जारी। 21 जून–अन्तर्राष्ट्रीय योग दिवस (अवकाश – उत्सव) : समस्त विद्यालयों में प्रातः 7 से 8 बजे तक उत्सव आयोजन। 24 जून –SDMC की कार्यकारिणी समिति की बैठक का आयोजन एवं सत्र पर्यन्त कार्य योजना का अनुमोदन। 24 से 30 जून–प्रवेशोत्सव–द्वितीय चरण का आयोजन। इस अवधि में संस्थाप्रधान एवं शिक्षकगण हाउस होल्ड सर्वे के आधार पर अब तक प्रवेश से वंचित/हार्ड कोर समूह के बच्चों का प्रवेश विद्यालय/आंगनबाड़ी में करवाए जाने हेतु विशिष्ट कार्य योजना के तहत नामांकन वृद्धि अभियान संचालित करेंगे । संस्थाप्रधान द्वारा समस्त स्टाफ से नवीन समय विभाग चक्र के अनुरूप सम्पूर्ण शैक्षिक सत्र के लिए कक्षा शिक्षण हेतु विषय योजना का निर्माण करवाया जाकर योजना का परिवीक्षण किया जाएगा। उक्त अवधि में विद्यार्थियों को टी0सी0/नव प्रवेशित विद्यार्थियों का एस.आर. रजिस्टर में पंजीयन सम्बन्धी कार्यों का समुचित निष्पादन किया जाएगा। 28 जून–भामाशाह जयन्ती (उत्सव),राज्य स्तरीय भामाशाह सम्मान समारोह का आयोजन। 29 जून–ईद–उल–जुहा (अवकाश चन्द्र दर्शनानुसार) 30 जून–SDMC की कार्यकारिणी समिति की बैठक में अनुमोदित कार्य योजना को अन्तिम रूप दिया जाना। जून –2023 मा.शि.बोर्ड राजस्थान, अजमेर द्वारा विद्यार्थियों की सृजनात्मक प्रतियोगिता का राज्य स्तर पर आयोजन।

रविवार		4	11	18	25
सोमवार		5	12	19	26
मंगलवार		6	13	20	27
बुधवार		7	14	21	28
गुरूवार	1	8	15	22	29
शुक्रवार	2	9	16	23	30
शनिवार	3	10	17	24	
कार्य दिवस-05,रविवार- 04,अवकाश-24,उत्सव- 02					

- प्रत्येक मंगलवार – **IFA** नीली गोली (कक्षा 6–12), **IFA** गुलाबी गोली (कक्षा 1–5)(समग्र शिक्षा)
- <u>**प्रत्येक शनिवार**</u> – विद्यालय में NO BAG DAY रहेगा। इस दिन माह के शनिवार हेतु नियत की गई गतिविधियों के आधार पर अध्ययन–अध्यापन यथासंभव प्रक्रिया संचालित की जाएगी।
  सप्ताह में आने वाले सभी जयन्तियां/उत्सव/प्रतियोगिताएं व पाठ्यक्रम सहगामी क्रियाएं विद्यालय में NO BAG DAY यानी उसी सप्ताह के शनिवार को आयोजित किए जावें।